॥ओ३म्॥

आयुर्वेद जड़ी-बूटी रहस्य

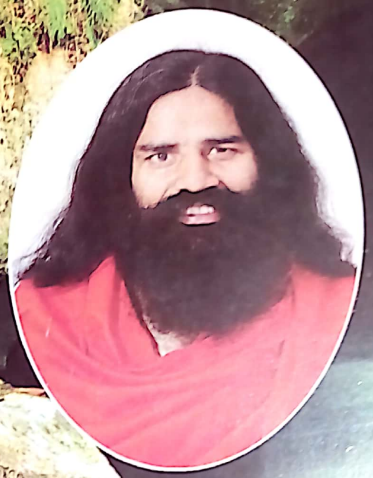

आचार्य बालकृष्ण

Scanned by CamScanner

क्रमांक	अध्याय का नाम	वैज्ञानिक नाम	पृष्ठ संख्या
1.	आक (अर्क)	*Calotropis procera* (Ait.) R. Br.	1
2.	आम	*Mangifera indica* L.	12
3.	वासा	*Adhatoda zeylanica* Medik.	18
4.	अफीम	*Papaver somniferum* L.	22
5.	अगस्त	*Sesbania grandiflora* (L). Poir	25
6.	अजमोद	*Apium graveolens* L.	28
7.	अजवायन	*Trachyspermum ammi* (L.) Sprague	30
8.	खुरासानी अजवायन	*Hyoscyamus niger* L.	35
9.	अकरकरा	*Anacyclus pyrethrum* DC.	37
10.	आकाश बल्ली	*Cuscuta reflexa* Roxb.	40
11.	अखरोट	*Juglans regia* L.	43
12.	अलसी	*Linum usitatissium* L.	47
13.	अमलतास	*Cassia fistula* L.	50
14.	आंवला	*Emblica officinalis* Gaertn.	53
15.	अमरूद	*Psidium guajava* L.	59
16.	अनार	*Punica granatum* L.	62
17.	अनन्तमूल	*Hemidesmus indicus* (L.) R. Br.	68
18.	अंगूर	*Vitis vinifera* L.	71
19.	अंकोल	*Alangium salvifolium* (L.f.) Wang	75
20.	अनानास	*Ananas comosus* Merr.	78
21.	अपामार्ग (लटजीरा)	*Achyranthes aspera* L.	80
22.	अपराजिता	*Clitorea ternatea* L.	84
23.	अर्जुन	*Terminalia arjuna* (Roxb.) Wight & Arn.	87
24.	श्योनाक	*Oroxylum indicum* (L.) Vent.	91
25.	अरणी	*Premna latifolia* Roxb.	95
26.	अशोक	*Saraca asoca* (Roxb.) de Wilde	97
27.	असगंध (अश्वगंधा)	*Withania somnifera* (L.) Dunal	100
28.	अतीस	*Aconitum heterophyllum* Wall. ex Royle	103
29.	आयापान	*Eupatorium triplinerve* Vahl	106
30.	बबूल	*Acacia nilotica* (L.) Willd. ex Delile ssp. *indica* (Benth.) Brenan	108

Scanned by CamScanner

क्रमांक	अध्याय का नाम		
31.	बड़ / बरगद	*Ficus benghalensis* L.	112
32.	बहेड़ा	*Terminalia bellirica* (Gaertn.) Roxb.	118
33.	बकायन	*Melia azedarach* L.	121
34.	बाकुची	*Psoralea corylifolia* L.	125
35.	बला	*Sida cordifolia* L.	128
36.	बेल	*Aegle marmelos* (L.) Correa	131
37.	भांग	*Cannabis sativa* L.	137
38.	भांगरा	*Eclipta alba* (L.) Hassk.	140
39.	भारंगी	*Clerodendrum serratum* (L.) Moon	145
40.	भुई आंवला	*Phyllanthus fraternus* Webster	147
41.	ब्राह्मी	*Centella asiatica* (L.) Urban	150
42.	चालमोंगरा	*Hydnocarpus pentandra* (Buch.-Ham.) Oken	153
43.	चमेली	*Jasminum grandiflorum* L.	155
44.	चांगेरी	*Oxalis corniculata* L.	158
45.	चित्रक	*Plumbago zeylanica* L.	160
46.	दालचीनी	*Cinnamomum zeylanicum* Bl	163
47.	धनिया	*Coriandrum sativum* L.	166
48.	धातकी	*Woodfordia fruticosa* (L.) Kurz	169
49.	धतूरा	*Datura metal* L.	172
50.	दूब	*Cynodon dactylon* (L.) Pers.	176
51.	दूधी	*Euphorbia thymifolia* L.	179
52.	ईख	*Saccharum officinarum* L.	181
53.	इलायची	*Amomum subulatum* Roxb.	184
54.	अरंड	*Ricinus communis* L.	187
55.	ईसबगोल	*Plantago ovata* Forsk.	191
56.	गाजर	*Daucus carota* L. Var. *sativa* DC.	193
57.	गंभारी	*Gmelina arborea* Roxb.	196
58.	गेंदा	*Tagetes erecta* L.	199
59.	गिलोय (अमृता)	*Tinospora cordifolia* (Willd.) Hook. f.& Thoms.	201
60.	गोखरू	*Tribulus terrestris* L.	205
61.	गूलर	*Ficus racemosa* L.	208
62.	गोरखमुण्डी	*Sphaeranthus indicus* L.	212

Scanned by CamScanner

क्रमांक	अध्याय का नाम	वैज्ञानिक नाम	पृष्ठ संख्या
63.	गुड़हल	*Hibiscus rosa-sinensis* L.	215
64.	गुलदाऊदी	*Chrysanthemum coronarium* L.	218
65.	घृतकुमारी	*Aloe vera* (L.) Burm. f.	220
66.	हल्दी	*Curcuma longa* L.	224
67.	हरड़	*Terminalia chebula* (Gaertn.) Retz.	228
68.	इमली	*Tamarindus indica* L.	232
69.	इन्द्रायण	*Citrullus colocynthis* (L.) Schrad.	235
70.	जामुन	*Syzygium cuminii* (L.) Skeels	238
71.	जीरा	*Cuminum cyminum* L.	241
72.	कचनार	*Bauhinia variegata* L.	244
73.	कनेर	*Thevetia peruviana* (Pers.) Schum.	249
74.	कटेरी (कण्टकारी)	*Solanum surattense* Burm. f	253
75.	लता करंज	*Caesalpinia bonduc* (L.) Roxb.	257
76.	करेला	*Momordica charantia* L.	261
77.	कसौंदी (कासमर्द)	*Cassia occidentalis* L.	264
78.	कुटज (इन्द्रजौ)	*Holarrhena antidysenterica* (Roth) DC.	267
79.	लाजवंती (छुई–मुई)	*Mimosa pudica* L.	270
80.	लौंग (लवंग)	*Syzygium aromaticum* (L.) Merr. & L.M. Perry	272
81.	मकोय	*Solanum nigrum* L.	275
82.	मैनफल	*Xeromphis spinosa* (Thunb.) Keay	278
83.	काली मिर्च	*Piper nigrum* L.	280
84.	मरुआ	*Origanum vulgare* L.	284
85.	मेंहदी	*Lawsonia inermis* L.	286
86.	लाल मिर्च	*Capsicum annuum* L.	289
87.	मौलसिरी	*Mimusops elengi* L.	292
88.	मूली	*Raphanus sativus* L.	295
89.	मुलेठी	*Glycyrrhiza glabra* L.	298
90.	नागरमोथा	*Cyperus scariosus* R.Br.	301
91.	नीम	*Azadirachta indica* (L.) A. Juss.	304
92.	नींबू	*Citrus aurantiifolia* (christm.) Swingle.	316
93.	निर्गुण्डी	*Vitex negundo* L.	321
94.	प्याज	*Allium cepa* L.	325

Scanned by CamScanner

क्रमांक	अध्याय का नाम	वैज्ञानिक नाम	पृष्ठ संख्या
95.	टेसू (पलाश)	*Butea monosperma* (Lam.) Taub.	329
96.	पान	*Piper betle* L.	332
97.	पवाँड़ (चक्रमर्द)	*Cassia tora* L.	335
98.	पर्णबीज	*Bryophyllum pinnatum* (Lam.) Oken	338
99.	पीपल	*Ficus religiosa* L.	341
100.	पिप्पली	*Piper longum* L.	345
101.	पिठवन (पृश्निपर्णी)	*Uraria picta* (Jacq.) Desv. ex DC.	350
102.	पिया बासा (कटसरैया)	*Barleria prionitis* L.	352
103.	पुनर्नवा	*Boerhavia diffusa* L.	354
104.	राई	*Brassica juncea* (L.) Czern. & Coss.	357
105.	काली राई	*Brassica nigra* (L.) Koch.	360
106.	रीठा	*Sapindus mukorossi* Gaertn.	362
107.	सहिजन	*Moringa oleifera* Lam.	365
108.	शरपुंखा	*Tephrosia purpurea* (L.) Pers.	368
109.	सत्यानाशी	*Argemone mexicana* L.	371
110.	सौंठ (अदरक)	*Zingiber officinale* Rosc.	374
111.	सेहुंड	*Euphorbia neriifolia* L.	378
112.	शंखपुष्पी	*Convolvulus microphyllus* Sieb. ex Spreng.	381
113.	शतावर	*Asparagus racemosus* Willd.	383
114.	शीशम	*Dalbergia sissoo* Roxb. ex DC.	387
115.	सिरस (शिरीष)	*Albizia lebbeck* (L.) Willd.	390
116.	सूरजमुखी	*Helianthus annuus* L.	394
117.	तगर	*Valeriana wallichii* DC.	397
118.	तेजपात	*Cinnamomum tamala* (Ham.) Nees & Eberm.	399
119.	तिल	*Sesamum orientale* L.	401
120.	त्रिफला	Triphala	405
121.	तुलसी	*Ocimum sanctum* L.	407
122.	उलटकंबल	*Abroma augusta* (L.) L.f.	411
123.	वचा	*Acorus calamus* L.	414
124.	वत्सनाभ	*Aconitum ferox* Wall. ex Ser.	417
125.	विदारीकंद	*Pueraria tuberosa* (Roxb. ex Willd.) DC.	419

Scanned by CamScanner

आक (अर्क)

वैज्ञानिक नाम	:	*Calotropis procera* (Ait.) R. Br.
कुलनाम	:	Asclepiadaceae
अंग्रेजी नाम	:	Madar
संस्कृत	:	अर्क, तूलफल, क्षीरपर्ण, आस्फोट
हिन्दी	:	अकवन, आक, मदार
गुजराती	:	आकड़ो
मराठी	:	एक्के, एक्के गिडा
बंगाली	:	आकन्द
पंजाबी	:	अक
तमिल	:	पेल्लेरूक्कु
तैलगु	:	मन्दाराम्
अरबी	:	उषर
फारसी	:	खरक

परिचय

आक के पौधे, शुष्क, ऊसर और ऊँची भूमि में प्रायः सर्वत्र देखने को मिलते हैं। इस वनस्पति के विषय में साधारण समाज में यह भ्रान्ति फैली हुई है कि आक का पौधा विषैला होता है तथा यह मनुष्य के लिये घातक है। इसमें किंचित सत्य जरूर है क्योंकि आयुर्वेद संहिताओं मे भी इसकी गणना उपविषों में की गई है। यदि इसका सेवन अधिक मात्रा में कर लिया जाये तो, उल्टी–दस्त होकर मनुष्य यमराज के घर जा सकता है। इसके विपरीत यदि आक का सेवन उचित मात्रा में, योग्य तरीके से, चतुर वैद्य की निगरानी में किया जाये तो अनेक रोगों में इससे बड़ा फायदा होता है। इसका हर अंग दवा है, हर भाग उपयोगी है एवं यह सूर्य के समान तीक्ष्ण, तेजस्वी और पारे के समान उत्तम तथा दिव्य रसायन धर्मा हैं। कहीं–कहीं इसे 'वानस्पतिक पारद' भी कहा गया है। इसकी तीन जातियाँ पाई जाती है, जो निम्न प्रकार है :

1. रक्तार्क : इसके फूल श्वेत रंग के छोटे, कटोरीनुमा और भीतर लाल और बैंगनी रंग की चित्ती वाले होते है। इसमे दूध कम होता है।
2. श्वेतार्क : इसका फूल लाल आक के पुष्प से कुछ बड़ा और हल्की पीली आभा लिये सफेद कनेर के फूल जैसा होता है। इसकी केशर भी बिल्कुल सफेद होती है। इसे मदार भी कहते हैं। यह प्रायः मन्दिरों में लगाया जाता है। इसमें दूध अधिक होता है।
3. राजार्क : इसके पौधों में एक ही शाखा होती है, जिस पर केवल चार पत्ते लगते हैं। इसके फूल चांदी के रंग जैसे श्वेत होते है, यह बहुत दुर्लभ जाति है।

इसके अतिरिक्त आक की एक और जाति पाई जाती है, जिसमें पिस्तई रंग के फूल लगते हैं।

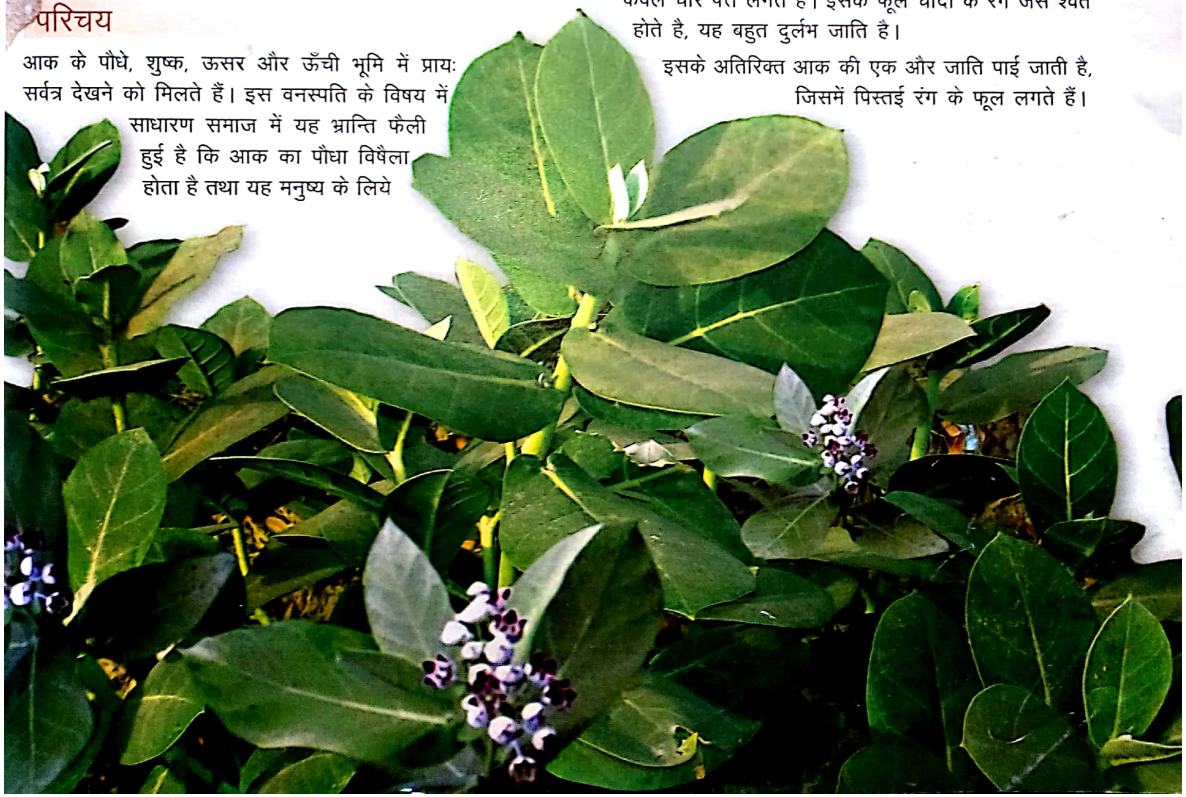

Scanned by CamScanner

बाह्य–स्वरूप

आक के बहुवर्षीय व बहुशाखीय गुल्म 4–12 फुट ऊँचे कांडत्वक बहुत कोमल व धूसर होती है। इसके पौधों के सभी अंग रूई की तरह धुने हुये सफेद रोमों से आच्छादित रहते है। पत्र वृन्त बहुत ही छोटे, 4–6 इंच लम्बे, 1–3 इंच चौड़े मांसल व हृदयाकार होते हैं। पुष्प सुगन्धित गुच्छों में सफेद या लाल बैंगनी रंग के, पुंकेसर पांच और पुष्प दंत भी पाँच ही होते है। फल 2–3 इंच लम्बे, 1 से 2 इंच तक चौडे, अंडाकार, बीच मे कुछ मुड़े हुये होने के कारण तोते की चोंच जैसी लगते हैं, इसलिए इन्हें शुकफल भी कहते हैं। फल के भीतर छोटे–छोटे भूरे रंग के बीज भरे होते है जो रूई जैसे मुलायम रेशे द्वारा आपस में चिपके रहते हैं। परिपक्व होने पर फल जब फटते है, तब बीज हवा मे उड़कर गोल हो जाते हैं और सब जगह फैल जाते है। आक का सम्पूर्ण पौधा एक प्रकार के दुग्ध मय एवं चरपरे रस से परिपूर्ण होता है। इसके किसी भी भाग को तोड़ने से सफेद रसमय दुग्ध निकलता है।

रासायनिक संघटन

आक के सर्वांग में प्रायः एक प्रकार का कडुवा और चरपरा पीला राल जैसा पदार्थ पाया जाता है, और यही इसका प्रभावशाली अंश है। जड़ की छाल में मंडारएल्बन और भंड़ार फ्युएबिल नामक दो वस्तुएँ और पाई जाती है।

मंड़ारएल्बन आक का एक रवेदार एवं प्रभावात्मक सार है, इसे मंदारिन भी कहते है। यह सार ईथर और मद्यसार में घुलता है, शीतल जल तथा जैतुन के तैल में यह अघुलनशील है। इसमें एक विचित्रता है कि यह गरमी में जम जाता है और शीत में खु रखने पर पिघल उठता है। ये दोनों तत्त्व इसके दूध या रस में अधिक मात्रा में पाये जाते है। नवीन आक की अपेक्षा पुराने आ की जड़ अधिक वीर्यवान होती है।

गुण–धर्म

1. दोनों प्रकार के आक दस्तावर है, वात जन्य कुष्ठ, कंडू, वि व्रण, प्लीहा, गुल्म, बवासीर, कफ जन्य उदर रोग और म कृमि को नष्ट करने वाले है।[1]
2. सफेद आक का फूल वीर्य–वर्धक, हल्का, दीपनपाचन, अरुचि, मुँह से पानी आना, लाला स्राबद्ध बवासीर, खांसी तथा श्वास का नाशक है।[2]
3. लाल आक का फूल मधुर एवं कुछ कडुवा, ग्राही, कुष्ठ, कृमि, कफ, बवासीर, विष, रक्तपित्त, गुल्म तथा सूजन को नष्ट करने वाला है।[3]
4. आक का दूधः कड़वा, गर्म, चिकना, खारा, हल्का, कोढ एव गुल्म तथा उदरेरोग नाशक है। विरेचन कराने में यह अति उत्तम है।
5. मूलत्वकः हृदयोत्तेजक, रक्त शोधक और शोथहर है। इससे हृदय की गति एवं संकोच शक्ति बढ़ती है, तथा रक्त भार भी बढ़ता है। यह ज्वरध्न और विषमज्वर प्रतिबन्धक है।
6. पत्रः दोनों प्रकार के आक के पत्ते वामक, रेचक, भ्रमकारक तथा कासश्वास, कर्णशूल, शोथ, उरुस्तम्भ, पामा, कुष्ठ आदि नाशक है।

औषधीय प्रयोग

मुँह की झाँई, धब्बे आदि : हल्दी के 3 ग्राम चूर्ण को आक के दुग्ध 5–7 बूंद व गुलाब जल में घोटकर आंखों को बचाकर झाई–युक्त स्थान पर लगायें, इससे लाभ होता है। कोमल प्रकृति वालों को आक की दूध की जगह आक का रस प्रयोग करना चाहिए।

सिर की खुजलीः इसे सिर पर लगाने से क्लेद, दाह वेदना एवं कँडूयुक्त अरुषिका में लाभ होता है।[7]

कर्णरोगः तेल और लवण से युक्त आक के पत्तों को वैद्य बांये हाथ में लेकर दाहिने हाथ से एक लोहे की कडछी को गरम कर उसमें डाल दें। फिर इस तरह जो अर्क पत्रों का रस निकले उसे कान में डालने से कान के समस्त रोग दूर होते है। कान में मवाद आना, साँय–साँय की आवाज होना आदि में इससे बहुत लाभ होता है।[4]

कर्णशूल :

1. आक के भली प्रकार पीले पड़े पत्तों को थोडा सा घी चुपड़कर आग पर रख दें, जब वे झुलसने लगें, चटपट निकाल कर निचोड़ लें। इस रस को थोड़ी गरम अवस्था में ही कान में डालने से तीव्र तथा बहुविधि वेदनायुक्त कर्णशूल शीघ्र नष्ट हो जाता है।
2. आक के पीले पके बिना छेद वाले पत्तों पर घी लगाकर अग्नि में तपाकर उसका रस कान में 2 बूंद डालने से लाभ होता है।

आक और नेत्र रोग :

1. अर्क मूल की छाल सूखी 1 ग्राम कूटकर, 20 ग्राम गुलाब जल में 5 मिनट तक रखकर छान लें। बूंद–बूंद आंखों में डालने से (3 या 5 बूंद से अधिक न डालें) नेत्र की लाली, भारीपन, दर्द, कीच की अधिकता और खुजली दूर हो जाती है।
2. अर्कमूल की छाल को जलाकर कोयला कर लें और इसे थोड़े पानी में घिसकर नेत्रों के चारों ओर तथा पलकों पर धीरे–धीरे मलते हुये लेप करे तो लाली, खुजली, पलको की सूजन आदि मिटती है।
3. आंख दुखनी आने पर, यदि बाई आंख हो और उसमें कडक दर्द व वेदना हो तो दाहिने पैर के नाखूनों को, यदि दाई आंख आई हो तो बांये पैर के नाखूनों को आक के दूध से तर कर दे।

सावधानी : आंख में दूध नही लगना चाहिये, नही तो भयंकर परिणाम होगा। यह एक चमत्कारिक प्रयोग होगा।

Scanned by CamScanner

फूला जाला : आक के दूध में पुरानी रुई को 3 बार तर कर सुखा ले, फिर गाय के घी में तर कर बडी सी बत्ती बनाकर जला ले। बत्ती जल कर सफेद नहीं होनी चाहिये इसे थोडी मात्रा में सलाई से रात्रि के समय आंखो में लगाने से 2–3 दिन में लाभ होना प्रारम्भ होता है।

मोतिया बिन्द : आक के दूध में पुरानी ईंट का महीन चूर्ण (10 ग्राम) तर कर सुखा लें। फिर उसमें लौंग (6 नग) मिलायें, खरल में भली प्रकार से महीन करके और बारीक कपडछन कर लें। इस चूर्ण को चावल भर नासिका द्वारा प्रतिदिन प्रातः नस्य लेने से शीघ्र लाभ होता है। यह प्रयोग सर्दी–जुकाम में भी लाभ करता है।

मिर्गी :

1. सफेद आक के फूल 1 भाग और पुराना गुड 3 भाग लेकर पहले फूलों को पीस लें, फिर गुड के साथ खूब खरल करें। चने जैसी गोलियाँ बना लें, प्रात–सायं 1 या 2 गोली ताजे जल के साथ सेवन करें।
2. आक के ताजे फूल और काली मिर्च एकत्र महीन पीसकर 300 मिलीग्राम की गोलियाँ बना रखे और दिन में 3–4 बार सेवन करावे।
3. आक के दूध मे थोडी शक्कर या मिश्री खरल कर रखें तथा इसकी 125 मिलीग्राम मात्रा प्रतिदिन प्रातः 10 ग्राम गर्म दूध के साथ सेवन करें।
4. मदार के पत्ते और टहनी के रंग का ही टिड्डा इसके क्षुपपर ग्रीष्म काल मे मिलता है। इस टिड्डे को शीशी मे बन्दकर सुखाकर सम भाग काली मिर्च मिला, महीन पीसकर, अपस्मार के रोगी को बेहोशी की हालत मे इसका नस्य देने से वह होश में आ जाता है और धीरे–धीरे उसका रोग दूर हो जाता है।

दंतपीड़ा :

1. आक के दूध मे रुई भिगोकर, घी में मलकर दाढ में रखने से दाढ़ की पीड़ा मिटती है।
2. आक के दूध में नमक मिलाकर दांत पर लगाने से दंत पीड़ा मिटती है।
3. अंगुली जितनी मोटी जड को आग में शकरकन्दी की तरह भूनकर उसका दातुन करने से दन्त रोग व दन्तपीड़ा में तुरन्त लाभ पहुंचता है। कूची वाले भाग को काटकर पुनः उसका अगला भाग प्रयोग कर सकते हैं।

दंत निष्कासन :

1. हिलते हुये दांत पर आक का दूध लगाकर उसे सरलता से निकाला जा सकता है।
2. आक के 8–10 पत्तों को 10 ग्राम काली मिर्च के साथ पीसकर उसमें थोडी हल्दी व सेंधा नमक मिलाकर मंजन करने से दात मजबूत रहते है।

वमन : अर्कमूल की शुष्क छाल को समभाग अदरख के रस में भली प्रकार खरल कर 125 मिलीग्राम की गोलियाँ बनाकर धूप में सुखाकर रख लें। मधु के साथ सेवन कराने से किसी भी प्रकार का वमन 1–2 गोली के सेवन से बन्द हो जायेगा। प्रवाहिका, शूल, मरोड और विसूचिका मे इसे जल के साथ देते है।

आधाशीशी :

1. जंगली कंडो की राख को आक के दूध में तरकर के छाया में सुखा लेना चाहिये। इसमे से 125 मि.ग्रा. सुंघाने से छींके आकर सिर का दर्द, आधा शीशी, जुकाम, बेहोशी इत्यादि रोग में लाभ होता है। गर्भवती स्त्री और बालक इसका प्रयोग न करें।
2. पीले पड़े हुये आक के 1–2 पत्तो के रस का नस्य लेने से आधा शीशी में लाभ होता हैं। किन्तु तीक्ष्ण बहुत है, अतः सावधानी से प्रयोग करें।
3. आक की छाया में शुष्क की हुई मूलत्वक के 10 ग्राम चूर्ण में सात इलायची तथा कपूर और पिपरमेंट प्रत्येक 500 मि.ग्रा. मिलाकर और खूब खरल कर शीशी में भर कर रख लें। इसमें सूंघने से छींके आकर व कफस्राव होकर आधा शीशी आदि सिर दर्द में लाभ होता है। मस्तक का भारीपन दूर होता है।
4. अनार की 40 ग्राम खूब महीन पिसी हुई छाल को आक के दूध में गूंथ कर रोटी की तरह नरम आंच से पका लें।

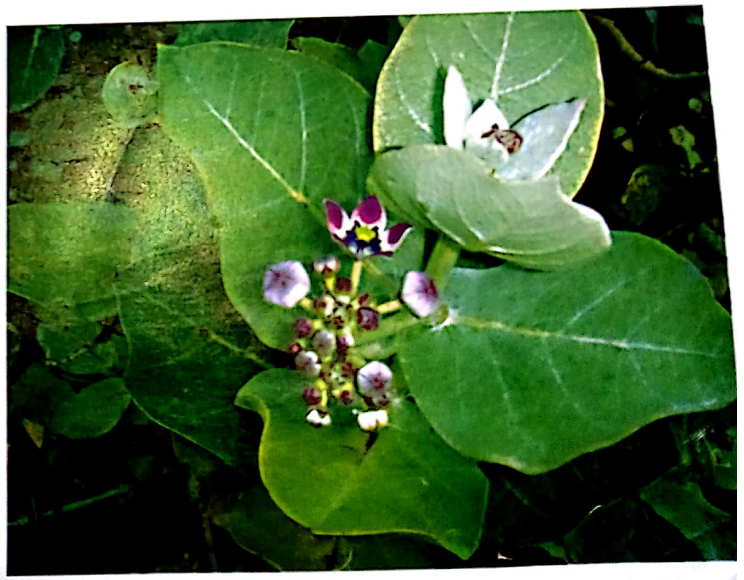

Scanned by CamScanner

फिर इसे सुखाकर बहुत महीन पीसकर, जटामांसी, छरीला 3–3 ग्राम, इलायची और कायफल प्रत्येक 1.5 ग्राम मिलाकर नसवार बनालें। इसकी नस्य से कुछ देर बाद छीकें आकर दिमागी नजला दूर होता है। तथा बेहोश रोगी को होश में लाने में सहयोग मिलता है।

5. पुरानी पक्की ईंट को पीसकर खूब महीन कर आक के दूध में तर कर सुखाकर और तौलकर प्रति 10 ग्राम में सात लंवग बारीक पीसकर मिला दें। इसमें से 125 मिलीग्राम या 250 मिलीग्राम की मात्रा में सुंधाने से मस्तक पीड़ा, सूर्यावर्त, प्रतिश्याय, पीनस और मोतिया बिन्द में लाभ होता है।

श्वास–खांसी इत्यादि

1. आक पुष्प की लौंग 50 ग्राम और मिर्च 6 ग्राम दोनों को एकत्र कर खूब महीन पीस मटर जैसी गोलियाँ बना लें। प्रातः 1 या दो गोली गर्म पानी के साथ सेवन करने से श्वास वेग रूक जाता है।
2. आक की जड़ के छिलका को आक के दूध में भिगोकर शुष्क कर महीन चूर्ण कर लें, 10 ग्राम चूर्ण में 25 ग्राम त्रिकटु चूर्ण श्रृंगभस्म 5 ग्राम, गोदंती 10 ग्राम मिलाकर लगभग एक ग्राम प्रातः–सायं मधु के साथ लेने से पुरातन श्वास रोग में भी लाभ होता है।
3. आक के पत्तों पर जो सफेद क्षार सा छाया रहता है, उसे 5 से 10 ग्राम तक गुड़ में लपेटकर गोली बनाकर खाने से कास श्वास में लाभ होता है।
4. पत्रों पर छाई सफेदी को इकट्ठा कर बाजरे जैसी गोलियाँ बनाकर 1–1 गोली प्रातः–सायं खाकर ऊपर से पान खाने से 2–4 दिन में श्वास रोग में लाभ होता है। पुरानी खांसी भी मिट जाती है।
5. पुराने से पुराने आक की जड़ को छाया शुष्क करके, निर्वात स्थान में जलाकर राख कर लें, इसमें से कोयले अलग कर दें। 1–2 ग्राम राख को शहद या पान में रखकर खाने से कास श्वास में लाभ होता है।
6. आक की कोमल शाखा और फूलों को पीसकर 2–3 ग्राम की मात्रा में घी में सेंक लें। फिर इसमे गुड़ मिला, पाक बना नित्य प्रातः सेवन करने से पुरानी खांसी जिसमें हरा पीला दुर्गन्ध युक्त चिपचिपा कफ निकलता हो, शीघ्र दूर होता है।
7. अर्क पुष्पों की लौंग निकालकर उसमें समभाग सैंधा नमक और पीपल मिला खूब महीन पीसकर मटर जैसी गोलियाँ बनाकर दो से चार गोली बड़ों और 1–2 गोली बच्चों को गौदुग्ध के साथ देने से बच्चों की खांसी दूर होती है।
8. अर्क मूल छाल के 250 मिलीग्राम महीन चूर्ण में, 250 मिलीग्राम शुंठी चूर्ण मिला 3 ग्राम शहद के साथ सेवन करने से कफ युक्त खांसी और श्वास में उपयोगी है।
9. छाया शुष्क पुष्पों के बराबर त्रिकटु (सौंठ, पीपल, काली मिर्च) और जवाखार एकत्र कर अदरख के रस में खरल कर मटर जैसी गोलियाँ बना छाया में सुखाकर रख लें। दिन रात में 2–4 गोलियाँ मुख में रख चूसते रहने से कास श्वास में परम लाभ होता है।
10. आक के दूध में चने डुबो कर मिट्टी के बरतन में बन्दकर उपलों की आग से भस्म कर लें। 125 मिलीग्राम मधु के साथ दिन में 3 बार चाटने से असाध्य खांसी में भी तुरन्त लाभ होता है।
11. आक के एक पत्ते पर जल के साथ महीन पिसा हुआ कत्था और चूना लगाकर दूसरे पत्ते पर गाय का घी चुपडकर दोनो पत्तों को परस्पर जोड़ लें, इस प्रकार पत्तों को तैयार कर मटकी में रखकर जला लें। यह कष्टदायक श्वास में अति उपयोगी है। छानकर कांच की शीशी में रख लें। 10–30 ग्राम तक घी, गेहूं की रोटी या चावल में डालकर खाने से कफ प्रकृति के पुरूषों में मैथुन शक्ति को पैदा करता है। तथा समस्त कफज व्याधियों को और आंत्रकृमि को नष्ट करता है।
12. आक के ताजे फूलों का दो किलो रस निकाल लें। इसमें आक का ही दूध 250 ग्राम और गाय का घी डेढ किलो मिलाकर मंद अग्नि पर पकावें। घृत मात्र शेष रहने पर छान कर बोतल में भर कर रख लें। इस घी को 1 से 2 ग्राम की मात्रा में गाय के 250 ग्राम पकाये हुये दूध में मिला सेवन करने से आंत्रकृमि नष्ट होकर पाचन शक्ति तथा अर्श में भी लाभ होता है। शरीर में व्याप्त किसी तरह का विष का प्रभाव हो तो इससे लाभ होता है, परन्तु यह प्रयोग कोमल प्रकृति वालों को नहीं करना चाहिए।

जलोदर :

1. अर्क पत्र स्वरस 1 किलो में 20 ग्राम हल्दी चूर्ण मिला मंद अग्नि पर पका कर जब गोली बनाने लायक हो जायें तो नीचे उतारकर चने जैसी गोलियाँ बना लें, 2–2 गोली दोनों समय

Scanned by CamScanner

सौंफ कासनी आदि अर्क के साथ दे, तथा जल के स्थान पर यही अर्क पिलावे।

2. आक के ताजे हरे पत्ते 250 ग्राम और हल्दी 20 ग्राम दोनों को महीन पीस उड़द के आकार की गोलियाँ बना लें। पहले दिन ताजे जल के साथ 4 गोली, फिर दूसरे दिन 5 और 6 गोली तक बढाकर घटाये यदि लाभ हो तो पुनः उसी प्रकार घटाते बढ़ाते है, अवश्य लाभ होगा। पथ्य में दूध, साबूदाना व जौ का यूष देवे।

3. आक के 8–10 पत्तों को सैंधा नमक के साथ कूट मिट्टी के बरतन में बन्द कर जला कर 250 मिलीग्राम भस्म को सुबह, दोपहर, शाम छाछ के साथ सेवन करने से जलोदर मिटता है। तिल्ली आदि अंग जो पेट में बढ़ जाया करते है, सब अपने स्थान पर आ जाते है।

रक्त अतिसार : छाया शुष्क एवं महीन पीसकर कपड़छन की हुई अर्कमूल की छाल, ठंडे जल के साथ 50 से 125 मिलीग्राम ग्रहण करने से अवश्य लाभ होगा।

अजीर्ण : आक के निथारे हुये पत्र स्वरस में समभाग घृत कुमारी का गुदा व शक्कर मिलाकर पकावें। शक्कर की चाशनी बन जाने पर ठंडा कर बोतल में भर लें तथा आवश्यकतानुसार 2 से 10 ग्राम की मात्रा में सेवन करायें। यह 6 मास के बच्चे से 9–10 साल के बच्चों तक अनेक रोगों में अचूक दवा है।

पांडु (कामला) :

1. आक के 24 पत्ते लेकर, 50 ग्राम मिश्री मिलाकर खरल में घोटकर मिश्रण तैयार कर लें। फिर चने जैसी गोलियाँ बना लें। दिन में 3 बार वयस्कों को दो गोली सेवन कराने से सात दिन में पूर्ण लाभ होता है। तेल, खटाई मिर्च आदि से परहेज रखें।

2. अर्कमूल की छाल डेढ़ ग्राम और काली मिर्च 12 नग पुनर्नवा मूल 2–3 ग्राम, पानी में घोट–छानकर दिन में दो बार पिलावें। गर्म और स्निग्ध वस्तुओं से परहेज रखें।

3. आक का पका पत्र 1 नग साफ पोछकर उस पर 250 मि॰ग्रा॰ चूना लगा कर बारीक पीस लेवें और चने के आकार की गोलियाँ बनाकर दो गोली रोगी को प्रातः काल पानी से निगलवा दें। पथ्य के रूप में दही तथा चावल लेना चाहिये।

4. आक की कोपल 1 नग, सुबह निराहार पान के पत्ते में रखकर चबाकर खाने से 3–5 दिन में कामला ठीक हो जाता है।

भगन्दर आदि नाड़ी व्रणों पर :

1. आक का 10 मि॰ली॰ दूध और दारुहल्दी का 2 ग्राम महीन चूर्ण, दोनों को एक साथ खरल कर बत्ती बना व्रणों में रखने से शीघ्र लाभ होता है।

2. आक के दूध में कपास की रुई भिगोकर छाया शुष्क कर बत्ती बनाकर, सरसों के तैल में भिगोकर व्रणों पर लगाने से लाभ होता है।

अंड कोष की सूजन :

1. 8–10 ग्राम आक की छाया शुष्क छाल को कांजी के साथ पीसकर लेप करने से पैर और फोतों की गजचर्म के समान मोटी पड़ी हुई चमड़ी पतली हो जाती है।[6]

2. अर्क के 2–4 पत्तों को तिल्ली के तैल के साथ पत्थर पर पीसकर मलहम सा बना फोड़े, अंड कोष के दर्द में चुपड कर लंगोट कस देने से शीघ्र आराम होता है।

3. इसके पत्तों पर एरंड तैल चुपडकर फोडो पर बांधने से पित्तशोथ मिटता है।

मूत्राघात : आक के दूध में बबूल की छाल का थोड़ा रस मिलाकर नाभि के आसपास और पेडू पर लेप करने से मूत्राघात दूर होता है।

हैजा :

1. आक की जड़ की छाया शुष्क छाल 2 भाग और काली मिर्च 1 भाग, दोनों को कूट छानकर अदरक के रस में अथवा प्याज के रस में खरलकर चने जैसी गोलियाँ बना लें। हैजे के दिनों में इनके सेवन से हैजे से बचाव होता है। हैजा का आक्रमण होने पर 1–1 गोली 2–2 घंटे में देने से लाभ होता है।

2. आक के बिना खिले फूल 10 ग्राम तथा भुना सुहागा, लौंग, सौंठ, पीपल और काला नमक 5–5 ग्राम इन्हें कूट–पीसकर 125 मिलीग्राम की गोलियाँ बना लें और थोडी–थोडी देर में 1–1 गोली सेवन करना है। विशेष अवस्था में 4–4 गोली एक साथ देना है।

3. आक के फूल 10 ग्राम, भुना सुहागा 4 ग्राम, काली मिर्च 6 ग्राम, इनको ग्वारपाठा के गूदे में खरलकर चने जैसी गोलियाँ बना लें। 1–1 गोली अर्क गुलाब से देना है।

4. आक के फूलों की लौंग और काली मिर्च 10–10 ग्राम और शुद्ध हींग 6 ग्राम इन्हें अदरक के रस की 10 भावनायें देकर उड़द जैसी गोलियाँ बना रखें। प्रत्येक उल्टी–दस्त के बाद 1–1 गोली अदरक, पोदीना या प्याज के रस के साथ सेवन कराने से तत्काल लाभ होता है।

5. आक के पीले पत्ते जो झडकर स्वयं नीचे गिर गये हो, 5 नग लेकर आग में जला देवें। जब ये जलकर कोयला हो जाये तो कलईदार बर्तन में आधा किलो पानी में इन्हें बुझा दें। यह पानी रोगी को थोड़ा–थोड़ा करके, जल के स्थान पर पिलावें।

बवासीर :

1. आक के कोमल पत्रों के सम भाग पांचों नमक लेकर, उसमें सबके वजन से चौथाई तिल का तैल और इतना ही नींबू रस मिला पात्र के मुख को कपड़ मिट्टी से बन्दकर आग पर चढ़ा दें। जब पत्र जल जाये तो सब चीजों को निकाल पीस कर रख लें। 500 मिलीग्राम से 3 ग्राम तक आवश्यकतानुसार गर्म जल, काँजी, छाछ या मद्य के साथ सेवन कराने से बादी बवासीर नष्ट हो जाती है।

Scanned by CamScanner

2. तीन बूंद आक के दूध को राई पर डालकर और उस पर थोड़ा कूटा हुआ जवाखार बुरक कर बताशे में रखकर निगलने से बवासीर बहुत जल्दी नष्ट हो जाती है।
3. हल्दी चूर्ण को आक के दूध में सात बार भिगोकर सुखा लें, फिर अर्क दुग्ध द्वारा ही उसकी लम्बी-लम्बी गोलियाँ बना छाया शुष्क कर रखें। प्रातः-सायं शौच कर्म के बाद थूक में या जल में घिसकर मस्सो पर लेप करने से कुछ ही दिनों में वह सूखकर गिर जाते है।
4. शौच जाने के बाद आक के दो चार ताजे पत्ते तोडकर गुदा पर इस प्रकार रगड़े कि मस्सो पर दूध ना लगे, केवल सफेदी ही लगे। इससे मस्सों में लाभ होता है।

उपदंश :

1. श्वेत अर्क की छाया शुष्क मूल छाल का 1 से 2 ग्राम चूर्ण दो चम्मच शक्कर के साथ सुबह-शाम सेवन करने से उपदंश और रक्त कुष्ठ में लाभ होता है।
2. इसके 8-10 पत्तों को आधा किलो पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ से उपदंश के ब्राण धोयें। छाल को पानी में पीसकर लगाना चाहिये व 2-3 ग्राम छाल का सेवन करना चाहिये। इससे उपदंश में आशातीत लाभ होता है।
3. मलमल के डेढ फुट लम्बे और 4 अंगुल चौड़े कपड़े को आक के दूध में 21 बार भिगोकर सुखा लें। फिर इसको मिट्टी के बरतन में रखकर भस्म बना लें। तीन चावल बराबर भस्म को पान में रखकर देने से सात दिन में लाभ होता है। मिर्च मसाले से परहेज रखे और घी का अधिक सेवन करें।
4. अर्कमूल की छाल 1 भाग, काली मिर्च आधा भाग, इन दोनों को महीन पीसकर 10 भाग गुड़ मिला चने जैसी गोलियाँ बनाकर रख लें। रोगी को पहले जुलाब देकर 1 या दो गोली पानी के साथ सुबह-शाम सेवन करावें।
5. छाया शुष्क अर्कमूल त्वक के चूर्ण में समभाग खांड मिलाकर रखे, 1 से 2 ग्राम तक ताजे जल के साथ सेवन करावें।
6. आक की छाल तथा आक की कोंपले या छोटी-छोटी कोमल पत्तियाँ 50-50 ग्राम इन दोनों को 200 ग्राम आक के दुग्ध में पीसकर गोला बनाकर मिट्टी के पात्र में मुंह बन्दकर रखकर 5 कि॰ग्रा॰ कंडों की आंच में फूंक कर भस्म बना लें। अब निकाल कर मटर जैसी छोटी-छोटी गोलियाँ बनाकर एक-दो गोली पानी के साथ लेने से भगंदर व नासूर में लाभ होता है।
7. लाल आक की जड़ की छाल 2 भाग तथा सत्यानाशी की जड़ की छाल और अपामार्ग मूल छाल 1½ भाग चूर्ण कर धूम्रपान विधि के अनुसार पीने से उपदंश में लाभ होता है।

नपुंसकता और ध्वज भंग पर :

1. छुआरों के अन्दर की गुठली निकाल कर उनमें आक का दूध भर दें, फिर इनके ऊपर आटा लपेट कर पकावें, ऊपर का आटा जल जाने पर छुआरों को पीसकर मटर जैसी गोलियाँ बना लें, रात्रि के समय 1-2 गोली खाकर तथा दूध पीने से स्तम्भन होता है।
2. आक की छाया शुष्क जड़ के 20 ग्राम चूर्ण को आधा किलो दूध में उबालकर दही जमाकर घी तैयार करें, इसके सेवन से नामर्दी दूर होती है।
3. आक दूध असली मधु और गाय का घी, समभाग 4-5 ग्राम खरल कर शीशी मे भरकर रख लें, इन्द्री की सीवन आदि सुपारी को बचाकर इसकी धीरे-धीरे मालिश करें और ऊपर से खाने का पान और एरण्ड का पत्ता बांध दें, इस प्रकार सात दिन मालिश करें। फिर 15 दिन छोड़कर पुनः मालिश करने से शिश्न के समस्त रोगों में लाभ होता है।

योनि रोग :

1. योनि सुदृढ़ करने के लिए आक की जड़ के चूर्ण को भांगरे के रस में 2-3 बार अच्छी तरह खरल करके मटर के बराबर गोलियां बनाकर 1-1 गोली सुबह-शाम गर्म पानी या दूध के साथ सेवन करने से योनि सुदृढ़ होती है, इससे मासिक धर्म भी ठीक होने लगता है। पर जिन्हें रक्त प्रदर हो उन्हें सेवन नहीं करना चाहिए।
2. कफ दूषित योनि हो तो उड़द के 100 ग्राम आटे में थोड़ा सैंधा नमक मिलाकर उसमें आक के दूध की सात भावनाये देकर छोटी-छोटी बत्तियां बना लें। इसका प्रयोग योनि-मार्ग में करें, तथा उचित मात्रा में जल के साथ सेवन करें। इससे निश्चित ही लाभ होगा।

बाँझपन : सफेद आक की छाया में सूखी जड़ को महीन पीस, 1-2 ग्राम की मात्रा में 250 ग्राम गाय के दूध के साथ सेवन करावें। शीतल पदार्थो का पथ्य देवें। इससे बन्द ट्यूब व नाडियां खुलती हैं, व मासिक धर्म व गर्भाशय की गांठों में भी लाभ होता है।

पैरों के छाले : पैदल यात्रा करने से जो छाले आदि हो जाते हैं, इसके दूध को लगाने मात्र से दूर हो जाते है।

पैरों के फोड़े : एक ईंट को गरम करके उस पर 6-7 आक के पत्ते रखकर, पैर को सेंकने से पैर के फोडे नष्ट हो जाते है।

पार्श्व शूल : आक के दूध में थोड़े से काले तिलों को खूब खरल कर जब पतला सा लेप सा हो जाये तो उसे गरम कर पसली के दर्द स्थान पर लेप कर दें और ऊपर से आक के पत्तों पर तिल का तेल चुपड कर तवे पर गरम कर उस स्थान पर पट्टी से बांधने पर शीघ्र लाभ होता है।

गठिया या आमवात पर :

1. आक का फूल, सौंठ, काली मिर्च, हल्दी व नागरमोथा समभाग लें। इन्हें जल के साथ महीन पीसकर चने जैसी गोलियाँ बना लें। 2-2 गोली प्रातः-सायं जल के साथ सेवन करें।
2. आक के 2-4 पत्तों को कूटकर पोटली बना, घी लगाकर तवे पर गरम कर सेंक करें। सेकने के पश्चात् आक के पत्तों पर घी चुपड़कर गरम कर बांध दें।

उरू स्तम्भ : आक की जड़ को घिस कर लेप करें।

Scanned by CamScanner

लकवा : आक (मोटी कूटी हुई) की आधा किलोग्राम जड़ों को 4 किलो ग्राम पानी में पकावें, एक किलो पानी शेष रहने पर छान लें। उसमें समभाग मिश्री तथा 6–6 ग्राम पीपल, वंश लोचन, इलायची, काली मिर्च और मुलेठी का चूर्ण मिलाकर मंद आंच पर शरबत तैयार कर लें। मात्रा 1–2 ग्राम तक यह कास श्वास, कफ, वातरोग, हाथ–पैर का दर्द, उदर रोग और लकवे को भी दूर करता है।

वात पीड़ा :

1. आक की जड़ की छाल 1 भाग काली मिर्च, कुटकी और काला नमक 1–1 ग्राम सबको मिलाकर जल के साथ महीन पीसकर चने जैसी गोलियाँ बना लें। किसी भी अंग में वातजन्य पीड़ा हो तो प्रातः–सायं 1–1 गोली उष्ण जल के साथ सेवन करें।
2. आक की एक किलो जड़ों (छाया में सुखाई हुई) को जौ कूटकर 8 किलो जल में पकावें। दो किलोग्राम शेष रहने पर उसमें 1 किलो एरण्ड तैल मिलाकर पकावें। तैल मात्र शेष रहने पर छानकर शीशी मे भरकर रख लें, इसकी मालिश से भी शीघ्र लाभ होता हैं।
3. वात रोगी को आक की रूई से भरे वस्त्र पहनने तथा इसकी रूई की रजाई व तोसक मे सोने से बहुत लाभ होता है। वात व्याधि वाले एकांग स्थान पर वायुनाशक तेल की मालिस कर ऊपर से इस रूई को बांधने से बहुत लाभ होता है।

वातगुल्म : आक के पुष्पों की कलियाँ 20 ग्राम, अजवायन 20 ग्राम इन दोनों को खूब महीन पीस उसमें 50 ग्राम खांड मिलाकर रखे, 1–1 ग्राम तक प्रातः–सायं जल के साथ सेवन करें।

व्रण : व्रण और रक्तस्राव पर आक की रूई बहुत लाभकारी है। जो क्षत या व्रण दुःसाध्य हो, अर्थात किसी भी प्रकार से न भरता हो, उसमें इस रूई को रखकर बांध देना चाहिये, तथा प्रतिदिन व्रण को साफ कर रूई को बदलते रहने से थोड़े ही दिनों में वह भर जाता है। जिस क्षत से खून बह रहा हो, उस पर इस रूई को रखकर बांध देने से शीघ्र ही रक्तस्राव रूक जाता है। ताजी रुई शीघ्र लाभकारी होती है।

दाद :

1. आक के दूध में समभाग शहद मिलाकर लगाने से दाद शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।
2. आक की जड़ 2 ग्राम चूर्ण को 2 चम्मच दही में पीसकर लगाते रहने से भी दाद में लाभ होता है।

खाज (पामा, छाजन) :

1. आक का पुष्प गुच्छ तोड़ने पर जो दूध निकलता है उसमें नारियल का तेल मिलाकर लगाने से खुजली शीघ्र दूर होती है। पामा, उकवत, छाजन तो इसे दूर से ही नमस्कार करती है।
2. आक का दूध 100 ग्राम, तिल या सरसों का तैल 400 ग्राम, हल्दी चूर्ण 200 ग्राम, और मैनसिल 15 ग्राम लें। प्रथम मैनसिल और हल्दी को खरल कर लें, फिर दूध मिलाकर लेप सा बना ले। अब इसमें तैल और 2 किलो जल मिलाकर तैल सिद्ध कर ले, इस तैल के लगाने से खाज, खुजली, पामा आदि चर्म रोग दूर होते हैं, अर्श के मस्सो पर बराबर लगाने से वे सूखकर झड़ जाते हैं।
3. आक के पत्रों का रस 1 किलो, हल्दी चूर्ण 50 ग्राम, और सरसों तैल आधा किलो मंद अग्नि पर पकावें। तैल मात्र शेष रहने पर छान कर शीशी में भर लें। इसकी मालिश से खाज, खुजली आदि नष्ट होते है। 2–4 बूंद कान में टपकाने से कर्णशूल मिटता है।
4. आक के ताजे पत्तों का रस 1 कि॰ग्राम॰, गाय का दूध 2 कि॰ग्रा॰, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, हल्दी, सौंठ और सफेद जीरा 6–6 ग्राम इनका कल्क कर 1 कि॰ ग्रा॰ घी में पकावें। घी मात्र शेष रहने पर छानकर रख लें। मालिश करने से खुजली–खाज आदि में लाभ होता है।
5. 10 ग्राम आक के दूध को 50 ग्राम सरसों के तैल में पकावें। तैल मात्र शेष रहने पर या दूध के जल जाने पर सुरक्षित रख लें। इस तैल की दिन में 2 बार मालिश करे, और तीन घंटे तक स्नान न करें। कुछ दिनों में ही पूर्ण लाभ होता है।
6. आक का दूध ताजा, व सुखाया हुआ 1 भाग 100 बार जल से धोया हुआ गाय का मक्खन खूब खरल करके मालिश करें व 2 घंटे तक शीत जल व शीत वायु से रोगी को बचाये रखें।
7. आक के 21 पत्ते 125 ग्राम सरसों के तैल में जलाकर फिर उसमें थोड़ा मैनसिल घोट कर रख लें। इसकी मालिश से भी उत्तम लाभ होता है।
8. इसका दूध छाया में सुखाकर व कड़वे तैल में मिलाकर जलाकर मालिश करने से खुजली आदि में लाभ होता है।

आक का सूखा फूल

Scanned by CamScanner

सफेद फूल वाला आक (श्वेतार्क)

उसमें 1 ग्राम मधु और 3 ग्राम मिश्री मिलाकर सेवन करावे और साथ ही अर्क मूल को छाछ में पीसकर श्लीपद पर गाढा लेप करें, 40 दिन में पूर्ण लाभ होता है।

2. अर्कमूल छाल और अडूसा की छाल को कांजी के साथ पीस कर लेप करें।

आघातजन्य शोथ युक्त व्रणों पर : आक की पत्र रहित शाखा को कूटकर ऊपर का छिलका 40–50 ग्राम लेकर खूब रगड़ ले, और टिकिया बना कलछी में थोड़ा गरम कर व्रण के मुख पर बांध दे, 2–3 बार बांधने से पूर्ण लाभ होता है।

व्रण ग्रन्थि, गलगंड, नारू आदि पर :

1. आक के पत्तों का रस 1 किलो, कच्ची हल्दी का रस 125 ग्राम और तिल तैल 250 ग्राम एकत्र मिलाकर पकावें। तैल मात्र शेष रहने पर छानकर रख लें, दुष्ट व्रण, बिगड़े हुये फोड़े अच्छे हो जाते है। उपदंश के व्रणों पर यह योग उत्तम कार्य करता है।
2. आक की जड़ की छाल का 2–5 ग्राम महीन चूर्ण को जिस व्रण से पूय निकलता रहता हो, अन्दर सड़ान होने से दुर्गन्ध आती हो उस पर बुरकने से 2–4 दिन में सड़ा हुआ मांस निकलकर वह स्वस्थ हो जाता है। फिर कपूर राल, सिंदूर आदि का मलहम लगाने से वह शीघ्र भर जाता है।
3. 2 ग्राम अर्कमूल चूर्ण को 10 मिलीलीटर नारियल तैल या घी में मिलाकर लगावें।
4. आक का दूध और गाय का घी समभाग मिश्रण कर दिन में 2–3 बार लगावें।

जख्म :

1. इसके 4–5 पत्रों को सुखाकर उनको कूट–छानकर खराब जख्मों पर बुरकने से दूषित मांस दूर होकर स्वस्थ मांस पैदा होता है।
2. श्वेत मदार की 5 ग्राम जड़ को 20 ग्राम नीबू के रस में लोहे की कुदाल पर घिसकर क्षत पर लेप कर देने से सैंकड़ों योगो से असाध्य क्षत का भी रोपण हो जाता हैं।[5]
3. आक की जड़ों के पास की गीली मिट्टी लाकर टिकिया बनाकर, अत्यन्त वेदनायुक्त तथा कीड़े पड़े हुये जख्म पर बांध देने से अन्दर के कीड़े ऊपर टिकिया के भीतर आकर मर जाते है और जख्म धीरे–धीरे अच्छे हो जाते हैं। पशुओं पर यह प्रयोग अनेकों बार सफल हुआ है।

श्लीपद :

1. अर्कमूल की छाल 10 ग्राम, त्रिफला चूर्ण 10 ग्राम, एक साथ आधा किलो जल में अष्टमांस क्वाथ सिद्ध कर प्रतिदिन प्रातः

बंद ग्रन्थि पर :

1. आक के दूध मे सफेद उशारेबन्द थोड़ा–थोड़ा मिला दिन में 2–3 बार लेप करते रहने से 3–4 दिन में कच्ची गांठ बैठ जाती है।
2. आक के 2–2 पत्तों पर एरंड तैल चुपडकर गरम कर बांधने से बंद गन्थि बैठ जाती है, या फट जाती है।

नारू :

1. नारू पर आक के कोमल पत्र 7 नग और गुड़ 50 ग्राम दोनों को कूट कर जंगली बेर जैसी गोलियाँ बना लें। 1–1 गोली करके दिन में तीन बार पानी के साथ सेवन करावें।
2. आक के 8–10 फूलों को पीस पुल्टिस बना बांधने से या दूध का लेप करने से नहरूवा निकल जाता है।

अग्नि दग्ध व्रण पर :

1. आक की 3 ग्राम जलाई हुई रूई को 10 ग्राम तिल्ली तैल

Scanned by CamScanner

में खरल कर 10 ग्राम निथरे हुये चूने के पानी में मिला दें। इसको दग्ध स्थान पर रखें, या कपड़ा तर कर रखें। यदि व्रण में सूजन आ गई हो तो उक्त मिश्रण में 250 मिलीग्राम अफीम घोल कर पिला दें।

2. आक की जली हुई रूई बुरकने से भी लाभ होता है।

कुष्ठ :

1. आक की सूखी हुई जड़ 2 ग्राम यव् कूट कर 400 ग्राम जल में पकाकर 50 ग्राम शेष रहने पर सेवन करने से गलित कुष्ठ की पूर्वावस्था में जबकि हाथ पैरो की अंगुलियाँ मोटी हो गई हो, कानो की बालियाँ बैडोल, नासिका का अग्रभाग लाल रंग, क्षत शरीर के किसी भी भाग में हो और वे ठीक न हो तब लाभकारी है।
2. आक का दूध 125 से 375 मि॰ ग्रा॰ की मात्रा में नित्य शहद के साथ दिन में 3 बार सेवन करें।
3. आक के छाया शुष्क मूल त्वक का चूर्ण 250 मिलीग्राम, शुंठी चूर्ण 250 मिलीग्राम, शहद के साथ नित्य तीन बार सेवन कराये, साथ ही छाल को सिरके में पीसकर पतला–पतला लेप करते रहे, यह प्रयोग लम्बे समय तक करें।
4. आक के छाया शुष्क पुष्पों का महीन चूर्ण बनाकर आधा ग्राम सुबह–शाम ताजे जल से सेवन करने से कुष्ठ में लाभ होता है। कोमल प्रकृति वालों को इसकी मात्रा कम लेनी चाहिए।
5. आक के 10–20 फलों को बिना अग्नि में तपाये हुये मिट्टी के बरतन में भरकर, मुँह बन्द कर उपलो की आग में फूंक दें। ठंडा होने पर अन्दर से भस्म को निकाल कर सरसों के तेल में मिलाकर लगायें। यह गलित कुष्ठ की प्रथम अवस्था में उपयोगी है।

कपाल कुष्ठ : आक के क्षार को ईख के रस के साथ मिलाकर लेप करने से लाभ होता है।

श्वेतकुष्ठ : आक के 20 मिलीलीटर दूध के साथ 5 ग्राम बावची और आधा ग्राम हरताल के चूर्ण को पीस कर लेप करें।

उदरशूल :

1. आक की छाया शुष्क मूलत्वक के महीन चूर्ण में समभाग त्रिफला, सेंधा नमक व महीन सौंफ चूर्ण मिलाकर 1 ग्राम की मात्रा में 2–3 बार जल के साथ सेवन करें।
2. आक के फूलों को सुखाकर, चूर्णकर आक के पत्र स्वरस में तीन दिन खरल कर अजवायन, सौंफ, बराबर मात्रा में मिलाकर चने जैसी गोलियाँ बना लें, 2 गोली गरम जल के साथ निगलने से कठिन से कठिन उदर शूल छूमन्तर हो जाता है। यदि आराम न हो तो 2 गोलियाँ और दें।
3. आक के शुष्क पुष्प 100 ग्राम और जड़ की छाल 50 ग्राम दोनों को खूब महीन पीस आक के पत्तों का रस मिला और खरल कर 65 मिलीग्राम की गोलियाँ बना लें। 1 से 4 गोली सौंफ के अर्क या गरम जल के साथ सेवन करने से उदरशूल एवं वात सम्बन्धी रोग नष्ट होते है।
4. अर्क पुष्प की लौंग 125 मिलीग्राम और मिश्री 25 ग्राम, दोनो को महीन पीस एक गोली बना, गरम जल से निगल लेने से उदर शूल बन्द हो जाता है।
5. पुराना अपचन या अजीर्ण रोग हो, दूषित डकारें आती हों, उदर में भारीपन हो, भोजन में अरूचि हो मलावरोध हो तो आक लवण का 250 से 500 मिलीग्राम की मात्रा में सेवन लाभदायक है। आक के पत्तों में समान भाग सैंधा नमक मिला, दोनों को मिट्टी के बरतन में भर मुख बन्द कर ऊपर से कपड़ मिट्टी कर आग में फूक दें। ठंडा होने पर अन्दर की औषधि को शीशी में भरकर रख लें। 250 मिलीग्राम से 1 ग्राम की मात्रा में सेवन करावें, यह गुल्म प्लीहा आदि उदर रोग नाशक है।
6. आक की जड़ की ताजी छाल और अदरक 1–1 ग्राम, काली मिर्च और सैंधा नमक आधा–आधा भाग सबको महीन पीस मटर जैसी गोलियाँ बना, छाया शुष्क करके 1 या दो गोली अर्क पुदीना के साथ दें।
7. पेट में जहां तीव्र वेदना हों, उस स्थान पर आक के 2–3 पत्तों पर पुराना घी चुपड और गर्म कर रखे, और थोड़ी देर के लिये वस्त्र से बांध देवें।

संवेदन शून्यता (सूनापन) :

1. आक के 8–10 पत्रों को 250 ग्राम तैल में तलकर, तेल की मालिश करने से अंग के सूनापन में लाभ होता है।
2. आक के दूध को कांच या चीनी के पात्र में रख, उसमें माल कांगनी का तैल मिलाकर मालिश करने से अर्धागवात, अर्दित, सूनापन आदि में विशेष लाभ होता है।

ज्वर :

1. आक की नई कोपल डेढ़ नग, आक के पुष्प की बन्द कली 1 नग दोनों को गुड़ में लपेट गोली बना, ज्वर वेग के 2 घंटे पूर्व सेवन कराने से ज्वर वेग रूक जाता है।
2. छाया शुष्क अर्क मूल छाल का महीन चूर्ण 2 भाग और काली मिर्च का चूर्ण 1 भाग दोनों को गाय के दूध या बड़ के दूध में खरल कर चने जैसी गोलियाँ बना रखें, ज्वर वेग से एक डेढ़ घंटा पूर्व 1 या दो गोली पानी से खिलावें।
3. आक का दूध 1 भाग और मिश्री 10 भाग दोनों को 12 घंटे खरल कर शीशी मे भर कर रखें, 65 मिलीग्राम से 250 मि॰ग्रा॰ तक उष्ण जल के साथ सेवन करने से लाभ होता है। यह मलेरिया ज्वर के लिये कुनैन से भी बढ़कर लाभकारी हैं। इससे ज्वर की बारी रूकती है तथा चढ़ा हुआ ज्वर उतरता है।
4. आक मूल छाल की भस्म 1 भाग, शक्कर 6 भाग दोनो को भली प्रकार खरल करें। ज्वर वेग से 2 घंटे पूर्व 500 मिलीग्राम से 1 ग्राम तक ताजे जल के साथ सेवन करें।
5. आक के पीले पत्तों को कोयलों की आग पर जला भस्म करें, यह भाग 500 मिलीग्राम शहद के साथ चटावें।

Scanned by CamScanner

6. आक का दूध 4 बूंद, कच्चे पपीते का रस 10 बूंद और चिरायते का रस 15 बूंद मिश्रण को दिन में 3 बार गौमूत्र से सेवन करने पर 3 दिन में ही बिगड़ा हुआ मलेरिया ठीक हो जाता है।

प्लीहा आदि यकृत रोगों पर : आक का पत्ता एक इंच चौकोर महीन कतरकर 50 ग्राम जल में पकावें। जब आधा जल शेष रह जाने पर उसमें सैंधा नमक 125 मि०ग्रा० मिला, तीन वर्ष तक के बालक को 7 दिन तक पिलावें। पथ्य में खिचड़ी चावल, छाछ, कांजी, यूष आदि दें।

डब्बा रोग :

1. अर्क पत्र का रस 10 बूंद तक उसमें 30 मिलीग्राम सैंधा नमक मिला पिला देने से उल्टी–दस्त होकर बालकों का डब्बा रोग शीघ्र शांत हो जाता है। पेट में अफारा हो तो गर्म तेल लगाकर आक पत्र से सैंक देवें।
2. छोटे बच्चों को जिन्हें कफ, सर्दी ज्यादा हो जाये और कोई भी दवा न दी जा सकें (शिशु इतना छोटा हो), तब आक रूई से भरे गद्दे तकिये पर लिटाने से ही बालको का सर्दी जुकाम दूर हो जाता है।

ततैया :

1. आक के पत्रों के पीछे जो खार की तरह सफेदी जमी होती है, उस पर मैदा या आटे की लोई घुमाकर उतार लें, तथा लोई की काली मिर्च जैसी गोलियाँ बना लें। प्रातः–सायं 1–1 गोली निगलवा कर निराहार 15 दिन तक थोड़ा घी और शक्कर खिलावें।
2. अर्कमूल के 400 मिलीग्राम छाल चूर्ण में, 2 ग्राम गुड़ मिला प्रातः सायं 40 दिन तक सेवन करायें। प्रत्येक आठवें दिन जुलाब देते रहें। तैल खटाई आदि वातकारक पदार्थों से परहेज करें।

स्थावर विषों पर : 2–3 ग्राम आक की जड़ को शीतल जल के साथ घिसकर दिन में 3–4 बार पिलावें।

पारे के विष पर : आक की लकड़ी का कोयला समभाग मिश्री के साथ पीसकर 6 ग्राम प्रतिदिन सेवन करने से शरीर में रूका हुआ कच्चा पारा पेशाब के रास्ते निकल जाता है।

अर्कमूल चूर्ण बनाने की विधि : बालू रेत में पैदा हुये पुराने अर्क की जड़ चैत्र–वैशाख में लें, उसे जल से भली–भांति स्वच्छ कर छाया में इतनी देर पड़ी रहने दें कि उसमें चीरा देने से दूध निकलना बन्द हो जाये। अब इसके ऊपर के छिलके को चाकू से खुरचकर अन्तर छाल को छाया में सुखा, महीन चूर्ण बनाकर शीशियों में भरकर रखना चाहिये तथा ज्वर के वेग के रोकने के लिये, तीनों प्रकार के कुष्ठ, उपदंश, अतिसार, रक्त अतिसार, आम अतिसार, पुरानी गठियाँ, चर्म रोग, कफ, जलोदर, सर्वांग शोथ और प्रारम्भ के फोड़ों को मिटाने के लिये इस चूर्ण का प्रयोग करना चाहिये।

हानि : आक का पौधा विषैला होता है। इसके दूध का अधिक मात्रा में सेवन करने से उल्टी–दस्त होकर मनुष्य मृत्यु को प्राप्त हो सकता है। अतः इसका उपयोग सावधानी पूर्वक करना चाहिये।

दर्पनाशक : घी और दूध अर्क प्रयोग से होने वाले हानिकारक प्रभाव को शान्त करते हैं।

प्रतिनिधि : इपीकोना और अनन्त मूल इसके प्रतिनिधि द्रव्य है।

1. अर्कद्वयं सरं वातकुष्ठ कंडू विष व्रणान्।
   निहन्ति प्लीहगुल्मार्शः श्लेष्मोदर शकृत्क्रिमीन्। (भाव प्रकाश)
2. अलर्क कुसुमं वृष्यं लघु दीपन पाचनम्।
   अरोचक प्रसेकार्शः कास श्वास निवारणाम्।। (भाव प्रकाश)
3. रक्तार्क पुष्पं मधुरं सतिक्तं कुष्ठक्रिमिघ्नं कफ नाशनं च।
   अर्शो विषं हन्ति च रक्तपित्तं संग्राहि गुल्मे श्वयथौ हितंतत्।।
4. भगवन् भास्कर क्षीरा पामाऽहमभिवन्दये।
   यत्र देशे भवानप्राप्तस्तद्देश न व्रमाभ्यहम्।। (वैद्य मनोरमा)
5. लौह कुदालके धृष्टवा लिम्पा कलथारिणा।
   श्वेतार्क सम्भवमूलं लेपं दद्यात् क्षतोपरि।।
6. निषिष्त ह्यारनालेन रूचिका मूल वल्कलम्।
   प्रलेपाच्छलो पादं हन्ति बहमूलमीयछदम्।।
   (भैषज्य रत्नावली)
7. अरूषिं बहुवक्त्राणी बहुक्लेदीनि मूर्ध्निनतु।
   कफास्मककृमि कोपेन नृणां विद्यादरूषिकाम्।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

2 आम

वैज्ञानिक नाम	:	*Mangifera indica* L.
कुलनाम	:	Anacardiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Mango
संस्कृत	:	आम्र, फलश्रेष्ठ, कामसर, पिकवल्लभ, रसाल
हिन्दी	:	आम
गुजराती	:	आंबो, अमरी
मराठी	:	मावु, माविनमरा
बंगाली	:	आम्र
अरबी	:	अंबज
फारसी	:	अंबज
तैलगु	:	माबि
पंजाबी	:	अंब

परिचय

आम भारतवर्ष एवं पूर्वी द्वीप समूह का आदिवासी पौधा है। यह ग्रीष्म जलवायु का वृक्ष है। हिमालय पर भूटान से कुमायुँ तक इसके जंगली वृक्ष पाये जाते है, सम्पूर्ण भारतवर्ष में इसके वृक्ष लगाये जाते है और फलते फूलते है। आम की अनेक किस्में पाई जाती है, जो पौधे गुठली बोकर उत्पन्न किये जाते है उन्हें देशी या बीजू आम, और जो उन्नत जाति के आम के वृक्षों की शाखाओं पर कलम बांधकर तैयार किये जाते हैं वे कलमी आम कहलाते हैं। इनके अतिरिक्त देश, स्थान, आकार, रंग, रूप भेद से इनकी अनेक किस्में मिलती है। देशी आम में रेशा होने से इसका रस पतला होता है, चूसकर खाने के काम में आता है, परन्तु कलमी आम में फल का गूदा अधिक होता है अतः काटकर खाया जाता है। औषधि प्रयोग हेतु कलमी की अपेक्षा चूसने वाले बीजू आम ज्यादा गुणकारी होते है।

बाह्य–स्वरूप

इसका वृक्ष 30 से 120 फुट तक ऊँचा होता है पत्र 4–12 इंच लम्बे, 1–3 इंच चौड़े, भालाकार, आयताकार, तीक्ष्णाग्र होते है, जिनके मसलने पर सुगंध आती है पुष्प छोटे हरित पीत मंजरी में आते है, जिससे मादक सुगन्ध आती है। फल आकृति के कच्चे में हरे तथा पकने पर पीताभ या रक्ताभ हो है, फल के भीतर बड़ी गुठली (बीज) तथा उसके भीतर बीज होती है। बसन्त में पुष्प तथा ग्रीष्म वर्षा में फल लगते है।

रासायनिक संघटन

फल में अन्य तत्वों के अतिरिक्त विटामिन ए, बी और सी मात्रा में पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

बीज मज्जा–कफपित्त शामक, स्तंभन, मूत्र संग्रहणीय रक्तरोध व्रणरोपण। कच्चा फल–त्रिदोषकारक आग में भुना हुआ कच्चा फल–दाह प्रशमन, रोचन, दीपन, रक्तपित्त हर, शोषक। पका फल वात पित्त शामक, स्नेहन अनुलोमन, सारक हृद्य, शोणितस्थापन वृष्य, बल्य, वर्ण्य, बृंहण।

आम का बौर (फूल) : शीतल, वातकारक, मलरोधक, अग्नि दीपक, रूचिकारक तथा कफ, पित्त, प्रमेह और कफनाशक है।

आम की जड़ : कसैली, मलरोधक, रूचिकारक तथा वात पित्त और कफ को हरने वाली है।

आम की गुठली : किंचित कसैली, वमन अतिसार और हृदय स्थान की पीडा को दूर करती है।

आम बीज तेल : आम की गुठली का तेल कसैला, स्वादिष्ट, रूक्ष कड़वा तथा मुखरोग, कफ एवं वात को दुरूस्त करता है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

केशकल्प : आम की गुठलियों के तेल को लगाने से सफेद बाल काले हो जाते है, तथा काले बाल जल्दी सफेद नहीं होते है। बाल झड़ना व रूसी में भी इससे लाभ होता है।

स्वरभंग : आम के 40 ग्राम पत्तों को 400 ग्राम पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ में मधु मिलाकर धीरे–धीरे पीने से स्वरभंग में लाभ होता है।

खांसी और स्वरभंग : पके हुये बढ़िया आम को आग में भून ले। ठंडा होने पर धीरे–धीरे चूसने से सूखी खांसी मिटती है।

प्यास : गुठली की गिरी के 40–60 ग्राम क्वाथ में 10 ग्राम मिश्री मिलाकर पीने से भयंकर प्यास शान्त होती है।

हिक्कारोग :

1. आम के सूखे पत्तों को चिलम में भरकर या ताजे पत्रों को कूटकर निकाले गये रस (2–3 ग्राम) में थोड़ा सा शहद मिलाकर सेवन करने से हिचकी बन्द हो जाती है।
2. आम के पत्ते व धनिया दोनो को कूटकर 2 से 4 ग्राम की मात्रा में लेकर गुनगुने पानी से दिन में दो या तीन बार पियें।

यकृत : जिगर की कमजोरी में (जब पतले दस्त आते हो, भूख न लगती हो) 6 ग्राम आम के छाया शुष्क पत्रों को 250 ग्राम जल में उबालें। 125 ग्राम जल शेष रहने पर छानकर थोड़ा दूध मिला प्रातः पीने से लाभ होता है।

अतिसार :

1. आम की गुठली की गिरी को साढे पाँच ग्राम की मात्रा में 100 ग्राम जल में उबालें। इसमें साढे पाँच ग्राम गिरी को और मिलाकर, दोनों को पीस ले, इसे दिन में 3 बार दही के साथ सेवन कराये, पथ्य में चावल और दही का सेवन करे।
2. गुठली की गिरी 1 भाग, बेलगिरी 1 भाग तथा मिश्री 1 भाग तीनों का चूर्णकर, 3–6 ग्राम की मात्रा में जल के साथ सेवन करने से अतिसार में लाभ होता है।
3. गुठली की गिरी, आम का गोंद समभाग लेकर 1 ग्राम की मात्रा में दिन में 2–3 बार सेवन करने से अतिसार मिटता है।
4. गुठली की 10–20 ग्राम गिरी को कांजी के साथ पीसकर उदर पर गाढ़ा लेप करने से बहुत लाभ होता है।
5. आम वृक्ष की अन्तरछाल 40 ग्राम जौ कूटकर आधा किलो जल में अष्टमांश क्वाथ सिद्ध करे। ठंडा होने पर इसमें थोड़ा शहद मिलाकर पिलाने से अतिसार विशेषतः आमातिसार में लाभ होता है।
6. आम की ताजी छाल को दही के पानी के साथ पीसकर पेट के आसपास लेप करने से लाभ होता है।

रक्तातिसार : आमपत्र स्वरस 25 मि०ली०, शहद और दूध 12–12 ग्राम तथा घी 6 ग्राम एकत्र मिला पिलाने से रक्तातिसार में विशेष लाभ होता है।

बच्चो के अतिसार : गुठली की गिरी भून लें। 1–2 ग्राम की मात्रा में चूर्ण कर 1 चम्मच शहद के साथ दिन में दो बार चटावें। यदि रक्तातिसार हो तो आम की अन्तरछाल को दही में पीस कर लेप कर लेप करें।

संग्रहणी : ताजे मीठे आमों के 50 ग्राम ताजे स्वरस में 20–25 ग्राम मीठा दही तथा एक चम्मच शुंठी चूर्ण बुरक कर दिन में दो तीन बार देने से कुछ ही दिन में पुरानी संग्रहणी अवश्य दूर होती है। (संग्रहणी में आम्रकल्प बहुत लाभदायक है।)

गर्भिणी के आमातिसार : पुराने आम की गुठली की गिरी का चूर्ण 4–4 ग्राम को शहद या जल के साथ भोजन के दो घंटे पूर्व दिन में तीन बार सेवन कराने से लाभ होता है। (पथ्य नमकीन चावल बिना घी डाले)

हैजा :

1. हैजे की शुरुआती अवस्था में, 20 ग्राम आम के पत्तों को कुचल कर आधा किलो जल में क्वाथ करें, चतुर्थांश शेष रहने पर किंचित छानकर गर्म पिलाने से लाभ होता है।
2. आम का शर्बत या आम का पना बार–बार पिलावें।

मधुमेह : आम के छाया में सुखाये हुये 1–1 ग्राम पत्रों को आधा किलो जल में औटावे, चौथाई जल शेष रहने पर प्रातः–सायं पिलाने से कुछ ही दिनों में मधुमेह दूर हो जाता है।

परिणाम शूल : प्रातः 8 बजे और सायंकाल 4 बजे मीठे पके आम को इतनी मात्रा में चूसे कि आधा किलो रस पेट में चला जाये इसके ऊपर 250 ग्राम दूध पीले, पानी बिल्कुल न पीये। एक घंटे बाद उबालकर ठंडा किया हुआ पानी, जरूरत हो तो पीले। दोपहर के भोजन में आम के रस के साथ गेहूँ की रोटी का सेवन करें। इस अवधि में अन्य कोई भोज्य पदार्थ न लें। 1 सप्ताह में आशातीत लाभ होता है।

आम के अन्य प्रयोग :

1. आम के फूलों का नस्य लेना नकसीर में लाभदायक है।
2. फल की छाल व पत्तों को समभाग पीसकर मुख में धारण करने या कुल्ला करने से दांत व मसूड़े मजबूत होते है।
3. नरम टहनी के पत्रों को पीसकर लगाने से बाल बड़े व काले होते है। पत्तों के साथ कच्चे आम के छिल्कों को पीसकर तेल मिलाकर धूप में रख दें। इस तेल के लगाने से बालों का झड़ना रूक जाता है, व बाल काले हो जाते है।
4. आम्रकल्प अच्छे पके हुये मीठे देशी आमों का ताजा रस 250 से 350 ग्राम तक, गाय का ताजा दुहा हुआ गर्म (धारोष्ण) दूध 50 मि०ली०, अदरक का रस चाय का चम्मच भर, तीनों को कांसे की थाली में अच्छी तरह फेट लें, लस्सी जैसा हो जाने

Scanned by CamScanner

पर धीरे–धीरे पी लें, 2–3 सप्ताह सेवन करने से मस्तिष्क की दुर्बलता, सिर पीड़ा, सिर का भारी होना, आखों के आगे अंधेरा हो जाना आदि दूर होता है। यह कल्प यकृत के लिये भी विशेष लाभदायक है।

5. आम के ताजे कोमल पत्ते 10 नग, और काली मीर्च 2–3 नग, दोनो को जल में पीसकर गोलियॉं बना लें, किसी भी दवा से बन्द न होने वाले, उल्टी–दस्त इससे बन्द हो जाते है।

6. कच्चे आम की गुठली (जिसमें जाली न पड़ी हो) का चूर्ण 60 ग्राम, जीरा, काली मिर्च व सौंठ का चूर्ण 20 ग्राम, आम्रवृक्ष के गोंद का चूर्ण 5 ग्राम तथा अफीम का चूर्ण 1 ग्राम इनको खरल कर, वस्त्र में छानकर बोतल में डाट बन्द कर सुरक्षित करें। 3–6 ग्राम तक अवस्थानुसार दिन में 3–4 बार सेवन करने से संग्रहणी, आम अतिसार, रक्तस्त्राव शूलादि का नाश होता है।

7. आम के कोमल पत्रों का छाया में सुखाया हुआ चूर्ण 25 ग्राम की मात्रा में सेवन करना मधुमेह में उपयोगी है।

8. आम्र की मजंरी (बौर) का क्वाथ या चूर्ण, अतिसार पुरानी प्रवाहिका और पूयमेह में उपयोगी है। इसके चूर्ण का धुआं मच्छरों को भगाता है।

9. फूलों का काढ़ा या चूर्ण सेवन करने से, अथवा इनके चूर्ण में चौथाई भाग मिश्री मिला सेवन करने से अतिसार, प्रमेह, अरूचि, रक्तदोष, दाह एवं पित्त के उपद्रव नष्ट होते है।

10. फूलों के 10–20 ग्राम रस में 10 ग्राम खांड मिलाकर सेवन करने से प्रदर, प्रमेह, पित्तविकार मिटते है।

11. कल्मी आम के फूलों को घी में भूनकर सेवन करने से प्रदर में बहुत लाभ होता है। इसकी मात्रा 1–4 ग्राम उपयुक्त होती है।

12. आम के गोंद को बिवाई पर लगाने से लाभ होता है।

13. आम का ताजा कोमल पत्र तोड़ने से जो एक प्रकार का द्रव पदार्थ निकलता है उसे नेत्र पिंडिका पर लगाने से, या पत्रों के बीच की लकड़ी (मध्य शिरा) की भस्म लगाने से लाभ होता है। पत्रों के उक्त द्रव पदार्थ को बिवाई में भर देने से तुरन्त लाभ होता है।

14. आम की चाय : आम के 11 पत्र, जो वृक्ष पर ही पक्कर पीले रंग के हो गये हो, लेकर 1 किलो पानी में 1–2 ग्राम इलायची डालकर उबालें, जब पानी आधा शेष रह जाये तो उतार कर शक्कर और दूध मिलाकर चाय की तरह पिया करें। यह चाय शरीर के समस्त अवयवों को शक्ति प्रदान करती है।

15. आम के फूलों के चूर्ण (5–10 ग्राम) को दूध के साथ लेने से स्तम्भन और काम शक्ति की वृद्धि होती है।

16. आम की गुठली की गिरी का अनाज और चारे की जगह अच्छा प्रयोग हो सकता है। इसमें प्रोटीन, वसा और कार्बोहाइड्रेट काफी मात्रा में पाये जाते है।

17. आम में मक्खन से कई गुना अधिक पोषक तत्व विद्यमान हैं, उचित तरीके से प्रयोग करने पर आम स्नायु तंत्र (नर्वस सिस्टम) को मजबूत बनाता है। शुद्ध रक्त बहुतायात से उत्पन्न होता है और शक्ति वृद्धि होती है।

18. जिन व्यक्तियों को मंदाग्नि, संग्रहणी, पुराना अतिसार, अजीर्ण, प्रमेह, धातुक्षीणता, क्षय, उदररोग, प्लीहा, वायुगोला,

Scanned by CamScanner

नसो में सूजन हो गया हो, जिनके शरीर में कफ और पित्त का निरन्तर प्रकोप रहता हो, दिल दिमाग कमजोर हो गया हो, ऐसे रोगियों को आम का कल्प लाभदायक है।

19. आग से झुलसना, खरोंच लगना आदि के लिए आम के पत्तों की भस्म प्रख्यात औषधि है।

उपदंश : आम वृक्ष की ताजी छाल का रस 25 से 30 ग्राम तक प्रातःकाल बकरी के दूध के साथ 7 दिन तक सेवन करें।

योनिरोग :

1. आम के फूल, छाल और पत्तों को पानी में पीस बत्ती बना योनि में धारण करने से, गर्भाशय द्वारा स्त्रावित होने वाले दूषित स्राव तथा योनि की दुर्गन्ध में लाभ होता है।
2. आम के सूखी गुठली का चूर्ण प्रातः–सायं 6 या 7 ग्राम को दूध के साथ सेवन करने से तथा उक्त वर्तिका को योनि में धारण करने से योनिरोगों में लाभ होता है।

अण्डकोषवृद्धि : आम्र वृक्ष की शाखा पर उत्पन्न गांठ (लकड़ी में गांठ बन जाती है) को गौमूत्र में पीसकर लेप करें, और ऊपर से सेंक करने पर वेदनायुक्त अण्डकोषशोथ में लाभ होता है।

भस्मक रोग : मीठे आम का रस 250 ग्राम, घी 40 ग्राम, खांड 100 ग्राम तीनों को एक साथ मिलाकर सेवन करने से 15 दिन में भस्मक रोग शान्त होता है।

सुजाक एवं प्रमेह :

1. आम की 25 ग्राम ताजी छाल को जौ कुट कर रात्रि में 250 ग्राम जल में भिगों कर प्रातः काल मसल कर छानकर पिलावे, 7 दिन में लाभ होता है।
2. छाया शुष्क आम के पत्तों का चूर्ण प्रातः–सायं ताजे जल के साथ 6–6 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से लाभ होता है।
3. आम की ताजी अन्तःछाल का रस 20 ग्राम में, 6 ग्राम चूने का निथरा हुआ जल मिलाकर तत्काल पिलायें। प्रमेह एवं सुजाक में भी इससे लाभ होता है।

रक्तप्रदर अर्श :

1. आम की अन्तःछाल का रस दिन में 20–40 ग्राम तक दो बार पिलायें। अर्श, रक्तप्रदर या रक्त अतिसार के कारण होने वाले रक्तस्राव में लाभ होता है।
2. आम की गुठली की गिरी का चूर्ण 1 से 2 ग्राम दिन में दो बार सेवन करें।

कृमिरोग : कच्चे आम की गुठली का चूर्ण 250 से 500 मिलीग्राम तक दही या जल के साथ सुबह–शाम सेवन करने से सूत जैसे कृमि नष्ट हो जाते है।

शरीर पुष्टि के लिये : नित्य प्रातः काल मीठे आम चूसकर, ऊपर से सौंठ व छुहारे डालकर पकाये हुये दूध को पीने से पुरुषार्थ वृद्धि और शरीर पुष्ट होता है।

दाद, खुजली व्रण आदि चर्म रोग :

1. आम के कच्चे फलों को तोड़कर (जिनमें जाली न पड़ी हो), कुचलकर कपड़े में छानकर रस निकाल लें। रस का चौथाई भाग विकृत (मेथीलिटेड) स्प्रिट या खालिश देशी शराब मिला शीशी में भर रखें। दो दिन बाद प्रयोग करें। इसके लगाने से पुरानी दाद, चम्बल आदि व्याधियां शीघ्र मिटती है। गहरे से गहरे नासूर भी इसे दिन में दो बार लगाने से दूर होते हैं। इसे रूई की फुहेरी से लगाने से फुटी हुई कंठमाला, भगंदर, पुराने भुगलाई फोड़े आदि जड़ से दूर हो जाते है। इसे लगाने से अर्श के मस्से भी सूख जाते है।
2. आम को तोड़ते समय, आमफल की पीठ में जो गोंदयुक्त रस निकलती है, उसे दाद पर खुजलाकर लगा देने से फौरन छाला पड़ जाता है, और फूटकर पानी निकल जाता है। दो–तीन बार लगाने से इस रोग से छुटकारा मिल जाता है।

फोड़ो पर : आम वृक्ष का गोंद थोड़ा गरम कर लगाने से फोड़ा पूय पककर, फूटकर बह जाता है और घाव आसानी से भर जाता है।

घाम (घमौरियां) : गरमी के दिनों में शरीर पर पसीने के कारण छोटी– छोटी फुन्सियों हो जाती है, इन पर कच्चे आम को मन्द अग्नि में भूनकर, गूदे का लेप करने से लाभ होता है।

अग्निदग्ध : गुठली की गिरी को थोड़े पानी के साथ पीसकर आग से जले हुये स्थान पर लगाने से तुरन्त शान्ति प्राप्त होती है।

मकड़ी का विष : गुठली को पीसकर लगाने से अथवा अमचूर को पानी में पीसकर लगाने से छाले मिट जाते है।

विषैले जानवरों के दंश :

1. आम का बौर जो सर्वप्रथम वृक्ष पर लगता है। उसे मंगल रविवार के दिन यथाशक्ति ब्राह्मण को भोजन व दक्षिणा देक

Scanned by CamScanner

तोड़ लें तथा दोनों हाथों पर मल लें। बिच्छू आदि के दंश पर हथेली को फेरने से वेदना शांत हो जाती है। यह प्रभाव एक वर्ष तक रहता है।

2. आम की गुठली को जल के साथ पत्थर पर पीसकर लगाने से भंवरी, मधुमक्खी, बर्र, ततैया, बिच्छू आदि विषैले कीड़े मकौड़े के दंश से उत्पन्न जलन, वेदना, दाह तथा विष शान्त होता है।

विशेष :

1. आम के कच्चे फलों को अधिक खाने से मंदाग्नि, विषमज्वर रक्तविकार, विवन्ध एवं नेत्ररोग उत्पन्न होते है।
2. आम के खाने के बाद पाचन सम्बन्धी शिकायत होने पर, 2–3 जामुन खा लें। जामुन में आम को पचाने की तीव्र शक्ति है। जामुन उपलब्ध न होने की दशा में, चुटकी भर नमक और सौंठ पीसकर खा लें।
3. यकृत और जलोदर के रोगी को आम नहीं खाने चाहिये।
4. आम खाने के बाद, दूध पीना, जामुन खाना, कटहल की गुठली खाना, सूक्ष्म मात्रा में सौंठ, लवण या सिंकज बीन खाना चाहिये।
5. आम सेवन के बाद दूध पीना चाहिये। जल नहीं पीना चाहिये।

Scanned by CamScanner

3 वासा अडूसा

वैज्ञानिक नाम	:	*Adhatoda zeylanica* Medik.
कुलनाम	:	Acanthaceae
अंग्रेजी नाम	:	Malabar nut
संस्कृत	:	वासक, आटरूषक, सिंहास्य, वसिका
हिन्दी	:	वासा, वासक, अडूसा, विसौटा, अरूष
मराठी	:	आडुसोगे
बंगाली	:	बसाका, बासक
गुजराती	:	अडूसा, अल्डुसो
तेलगु	:	पैद्यामानु, अद्दासारामू
तमिल	:	एधाडड
अरबी	:	हूफारीन, कून
पंजाबी	:	वांसा

परिचय

अडूसे के पौधे भारतवर्ष में 1,200 से 4,000 फुट की ऊंचाई तक कंकरीली भूमि में स्वयं ही झाडियों के समूह में उगते है।

बाह्य–स्वरूप

अडूसा का पौधा झाड़ीदार होता है। पत्ते 3–8 इंच लम्बे रोमश, अभिमुखी, दोनों ओर से नोकदार, पुष्प श्वेतवर्ण 2–3 इंच लम्बी मंजरियों में फरवरी–मार्च में आते हैं।

फली 0.75 इंच लम्बी, रोमश, प्रत्येक फली में चार बीज होते हैं।

रासायनिक संघटन

अडूसा स्वर के लिए उत्तम, हृदय, कफ, पित्त, रक्तविकार, तृष्णा, श्वांस, खांसी, ज्वर, वमन, प्रमेह, कोढ़ तथा क्षय का नाश करने वाला है।' श्वसन संस्थान पर इसकी मुख्य क्रिया होती है। यह कफ को पतला कर बाहर निकालता है तथा श्वांस नलिकाओं का कम परन्तु स्थायी प्रसार करता है। श्वांस नलिकाओं के फैल जाने से दमे के रोगी का सांस फूलना कम हो जाता है। कफ के साथ यदि रक्त भी आता हो तो वह भी बंद हो जाता है। इस प्रकार यह श्लेष्म, कास, कंठ्य एवं श्वांसहर है। यह रक्तशोधक एवं रक्त स्तम्भक है, क्योंकि यह छोटी रक्त वाहनियों को संकुचित करता है। यह प्राणदा नाड़ी को अवसादित कर रक्त भार को कुछ कम करता है। इसकी पत्तियों का लेप शोथहर, वेदनास्थापन, जंतुघ्न तथा कुष्ठघ्न है। यह मूत्र जनन, स्वेदजनन तथा कुष्ठघ्न है। नवीन कफ रोगों की अपेक्षा इसका प्रयोग जीर्ण कफ रोगों में अधिक लाभकारी है।

गुण–धर्म

अडूसा वातकारक, स्वर के लिए उत्तम, हृदय, कफ, पित्त, रक्तविकार, तृष्णा, श्वांस, खांसी, ज्वर, वमन, प्रमेह, कोढ़ तथा क्षय का नाश करने वाला है।' श्वसन संस्थान पर इसकी मुख्य क्रिया होती है। यह कफ को पतला कर बाहर निकालता है तथा श्वांस नलिकाओं का कम परन्तु स्थायी प्रसार करता है। श्वांस नलिकाओं के फैल जाने से दमे के रोगी का सांस फूलना कम हो जाता है। कफ के साथ यदि रक्त भी आता हो तो वह भी बंद हो जाता है। इस प्रकार यह श्लेष्म, कास, कंठ्य एवं श्वांसहर है। यह रक्तशोधक

Scanned by CamScanner

एवं रक्त स्तम्भक है, क्योंकि यह छोटी रक्त वाहनियों को संकुचित करता है। यह प्राणदा नाड़ी को अवसादित कर रक्त भार को कुछ कम करता है। इसकी पत्तियों का लेप शोथहर, वेदनास्थापन, जंतुघ्न तथा कुष्ठघ्न है। यह मूत्र जनन, स्वेदजनन तथा कुष्ठघ्न है। नवीन कफ रोगों की अपेक्षा इसका प्रयोग जीर्ण कफ रोगों में अधिक लाभकारी है।

औषधीय प्रयोग

सिर दर्द : अडूसा के फूलों को छाया में सुखाकर महीन पीसकर 10 ग्राम चूर्ण में थोड़ा गुड़ मिलाकर चार खुराक बना लें। सिरदर्द का दौरा शुरू होते ही 1 गोली खिला दें, तत्काल लाभ होता है।

शिरो रोग :

1. इसकी 20 ग्राम जड़ को 200 ग्राम दूध में अच्छी प्रकार पीस–छानकर इसमें 30 ग्राम मिश्री 15 नग काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से शिरो रोग, नेत्र रोग, शूल, हिचकी, खांसी आदि विकार नष्ट होते हैं।
2. छाया में सूखे हुए वासा पत्रों की चाय बनाकर पीने से सिर–दर्द या शिरोरोग संबंधी कोई भी बाधा दूर हो जाती है। स्वाद के लिए इस चाय में थोड़ा नमक मिला सकते हैं।

नेत्र रोग : इसके 2–4 ताजे पुष्पों को गर्म कर आंख पर बांधने से आंख के गोलक की पित्तशोथ (सूजन) दूर होती है।

मुखपाक :

1. यदि केवल मुख में छाले हो तो इसके 2–3 पत्तों को चबाकर उसके रस को चूसने से लाभ होता है। फोक थूक देना चाहिए।
2. इसकी लकड़ी की दातौन करने से मुख के रोग दूर हो जाते हैं।
3. वासा के 50 मि०ली० क्वाथ में एक चम्मच गेरू और दो चम्मच मधु मिलाकर मुख में धारण करने से मुखपाक, नाड़ीव्रण नष्ट होते हैं।

दंत सौषिर्य (Cavity): दाढ़ या दांत में कैविटी हो जाने पर उस स्थान में इसका सत्व भर देने से आराम होता है।

दंत पीड़ा : वासा के पत्तों के क्वाथ से कुल्ला करने से मसूड़ों की पीड़ा मिटती है।

चेचक निवारण : यदि चेचक फैली हुई हो तो वासा का 1 पत्ता तथा मुलेठी 3 ग्राम इन दोनों का क्वाथ बच्चों को पिलाने से चेचक का भय नही रहता है।

अपस्मार : प्रतिदिन जो रोगी दूध भात का पथ्य रखता हुआ 2–5 ग्राम वासा चूर्ण का 1 चम्मच मधु के साथ सेवन करता है, वह पुराने भयंकर अपस्मार रोग से मुक्त हो जाता है।[3]

श्वांस रोग :

1. अडूसा, हल्दी, धनियां, गिलोय, पीपल, सौंठ तथा रिंगणी के 10–20 ग्राम क्वाथ में 1 ग्राम मिर्च का चूर्ण मिलाकर दिन में तीन बार पीने से सम्पूर्ण श्वांस रोग पूर्ण रूप से नष्ट हो जाते है।[4]
2. इसके छोटे पेड़ के पंचाग को छाया में सुखाकर कपड़े में छानकर नित्य 10 ग्राम मात्रा की फंकी देने से श्वांस और कफ मिटता है।[10]

दमा : इसके ताजे पत्तों को सुखाकर उनमे थोड़े से काले धतूरे के सूखे हुए पत्ते मिलाकर दोनों का चूर्ण (बीड़ी बनाकर पीने) धूम्रपान से जीर्णश्वांस में आश्यर्चजनक लाभ होता है।

फुफ्फस प्रदाह : अडूसे के 8–10 पत्तों को रोगन बाबूना में घोंटकर लेप करने से फुफ्फुस प्रदाह में शांति होती है।

खांसी:

1. वासा के ताजे पत्रों का स्वरस, शहद के साथ (साढ़े सात ग्राम की मात्रा में) चाट लेने से पुरानी खांसी, श्वांस और क्षय रोग में बहुत फायदा होता है।
2. अडूसा, मुनक्का और मिश्री का 10–20 ग्राम क्वाथ दिन में तीन–चार बार पिलाने से सूखी खांसी मिटती है।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग

वासा के पत्तों का रस 1 चम्मच, 1 चम्मच अदरक का रस, 1 चम्मच शहद मिलाकर पीनें से सभी प्रकार की खांसी से आराम हो जाता है।

क्षय रोग : अडूसे के पत्तों के 20–30 ग्राम क्वाथ में छोटी पीपल का 1 ग्राम चूर्ण बुरक कर पिलाने से जीर्ण कास, श्वांस और क्षय रोग में फायदा होता है।

आध्मान : वासा छाल का चूर्ण 1 भाग, अजवायन का चूर्ण चौथाई और इसमे आठवां हिस्सा सेंधा नमक मिलाकर नींबू के रस में खूब खरल कर 1–1 ग्राम की गोलियां बनाकर भोजन के पश्चात 1–3 गोली सुबह–शाम सेवन करने से वातजन्य ज्वर आध्मान विशेषतः भोजन करने के बाद पेट का भारी हो जाना, मन्द–मन्द पीड़ा होना दूर होता है। वासा क्षार भी प्रयुक्त किया जा सकता है।

वृक्कशूल : अडूसे और नीम के पत्तों को गर्म कर नाभि के निचले भाग पर सेंक करने से तथा अडूसे के पत्तों के 5 ग्राम रस में उतना ही शहद मिलाकर पिलाने से गुर्दे के भयंकर दर्द में आश्चर्यजनक रूप से लाभ पहुंचता है।

अतिसार : इसका पत्र स्वरस 10–20 ग्राम की मात्रा को दिन में तीन–चार बार पीना रक्तातिसार में बहुत लाभकारी है।

मासिक धर्म : इसके पत्ते ऋतुस्त्राव को नियंत्रित करते है। रजोरोध में वासा पत्र 10 ग्राम, मूली व गाजर के बीज प्रत्येक 6 ग्राम, तीनों को आधा किलो पानी में पका लें। चतुर्थांश शेष रहने पर यह क्वाथ कुछ दिन सेवन करने से लाभ होता है।

मूत्र दोष : खरबूजे के 10 ग्राम बीज तथा अडूसे के पत्ते बराबर लेकर पीसकर पीने से पेशाब खुलकर आने लगता है।

मूत्रदाह : वासा पुष्प राजयक्ष्मा का नाश करने वाला, पित्तघ्न और

Scanned by CamScanner

रूधिर की गर्मी को घटाता है। यदि 8–10 फूलों को रात्रि के समय एक गिलास जल में भिगो दिया जाये और प्रातः मसलकर छानकर पान करें तो मूत्र की जलन और सुर्खी दूर हो जाती है।

शुक्रमेह : इसके शुष्क पुष्पों को कूट छानकर उसमें दुगुनी मात्रा में बंगभस्म मिलाकर, शीरा और खीरा के साथ सेवन करने से शुक्र प्रमेह नष्ट होता है।

जलोदर : जलोदर में या उस समय जब सारा शरीर श्वेत हो जाये उसमें इसके पत्तों का 10–20 ग्राम स्वरस दिन में 2–3 बार पिलाने से मूत्रवृद्धि हो के यह रोग मिटता है।

सुख प्रसव : अडूसे की जड़ को पीसकर गर्भवती स्त्री की नाभि, नलों व योनि पर लेप करने से तथा मूल को कमर से बांधने से बालक सुख से पैदा हो जाता है।[9]

प्रदर :

1. पित्त प्रदर में अडूसे के 10–15 मि०ली० स्वरस में अथवा गिलोय के रस में 5 ग्राम खांड तथा 1 चम्मच मधु मिलाकर दिन में दो बार सेवन करना चाहिए।[8]
2. अडूसा के 10 ग्राम पत्तों के स्वरस में 1 चम्मच मधु मिलाकर सुबह–शाम पिलाने से श्वेत प्रदर मिटता है।

रक्त प्रदर : रक्त प्रदर में वासा के 10 ग्राम पत्र स्वरस में बराबर मात्रा में मिश्री मिलाकर दिन में तीन बार देने से एक सप्ताह में पूर्ण आराम हो जाता है।

सुख प्रसव : पाठा, कलिहारी, अडूसा, अपामार्ग, इनमें किसी एक बूंटी की जड़ को नाभि, बस्तिप्रदेश तथा भग प्रदेश पर लेप देने से प्रसव सुखपूर्वक होता है।[8]

कामला : इसके पंचाग के 10 मि०ली० स्वरस में मधु और मिश्री समभाग मिलाकर पिलाने से कामला रोग नष्ट हो जाता है।

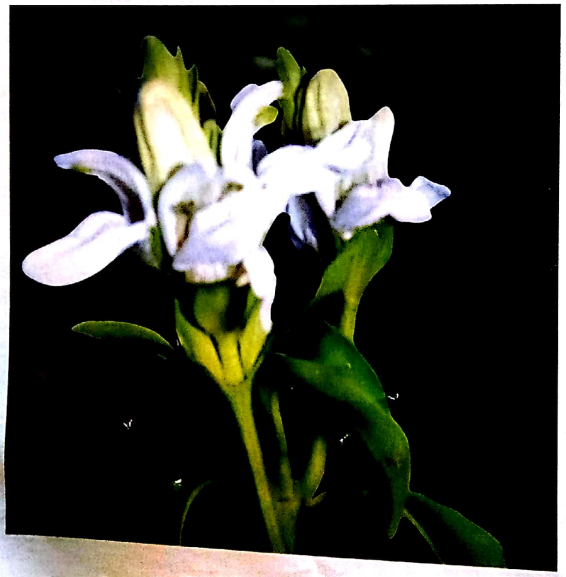

बाइटें : 10 ग्राम वासा पुष्पों को 2 ग्राम सोंठ के साथ 100 ग्राम जल में पकाकर पिलाने से बाइटों में आराम मिलता है।

फोड़ा : फोड़े पर प्रारंभ में ही इसके पत्तों को पानी के साथ पीसकर लेप कर दें तो फोड़ा बैठ जाता है और कोई कष्ट नही होता।

ऐंठन : इसके पत्र स्वरस में सिद्ध किये तिल के तैल की मालिश से आक्षेप, उदरस्थ वात वेदना तथा हाथ पैरों की ऐंठन मिट जाती है।

वातरोग : वासा के पके हुए पत्तों को गरम करके सिकाई करने से सन्धिवात लकवा और वेदनायुक्त उत्सेध में आराम पहुंचाता है।

अर्श : अडूसे के पत्ते और श्वेत चंदन इनको बराबर मात्रा में लेकर महीन चूर्ण बना लेना चाहिए। इस चूर्ण की 4 ग्राम मात्रा प्रतिदिन, दिन में दो बार सुबह–शाम सेवन करने से रक्तार्श में बहुत लाभ होता है और खून का बहना बंद हो जाता है। अर्शांकुरो में यदि सूजन हो तो इसके पत्तों के क्वाथ का बफारा देना चाहिए।

रक्त पित्त :

1. ताजे हरे अडूसे के पत्तो का रस निकालकर 10–20 ग्राम रस में मधु तथा खांड मिलाकर सुबह–शाम सेवन करने से भयंकर रक्तपित्त शांत हो जाता है। यह रक्तपित्त के लिए स्तम्भन योग्य है। उर्ध्व रक्तपित्त में इसका प्रयोग होता है।[3]
2. अडूसा का 10–20 ग्राम स्वरस, तालीस पत्र का 2 ग्राम चूर्ण तथा मधु मिलाकर सुबह–शाम पीने से कफ विकार, पित्त विकार, तमक श्वास, स्वरभेद तथा रक्तपित्त का नाश होता है।[4]
3. वासामूल त्वक, मुनक्का, हरड़ इन तीनों को समभाग मिलाकर 20 ग्राम की मात्रा में लेकर 400 ग्राम पानी में पकायें। चतुर्थांश शेष रहने पर क्वाथ में खांड तथा मधु डाल कर पीने से कास, श्वांस तथा रक्तपित्त रोग शांत होते हैं।[5]

दाद खुजली : अडूसे के 10–12 कोमल पत्र तथा 2–5 ग्राम हल्दी को एक साथ गोमूत्र से पीस कर लेप करने से खुजली व शोथ कण्डु रोग शीघ्र नष्ट होता है। इससे दाद उकवत में भी लाभ होता है।

आन्त्र–ज्वर : 3–6 ग्राम वासामूल चूर्ण की फंकी देने से आन्त्र–ज्वर ठीक हो जाता है।

ज्वर : पैत्तिक ज्वर में वासा पत्र और आंवला बराबर लेकर जौं कूटकर सायंकाल के समय मिट्टी के बर्तन में (कुल्हड़) भिगो दें। प्रातः काल घोंटकर स्वरस निचोड़ लें, इसमें 10 ग्राम मिश्री मिलाकर पिलाने से ज्वर शांत होता है।

कफ–ज्वर :

1. हरड़, बहेड़ा, आँवला, पटोल पत्र, वासा, गिलोय, कटुकी, पिपली मूल सब मिलाकर 20 ग्राम इसका यथा विधि क्वाथ करके 20 ग्राम मधु का प्रक्षेप देकर सेवन करने से कफ ज्वर में लाभ होता है।
2. त्रिफला, गिलोय, कटुकी, चिरायता, नीम की छाल तथा

Scanned by CamScanner

वासा 20 ग्राम लेकर 320 ग्राम जल में पकायें, जब चतुर्थांश शेष रह जाये तो इस क्वाथ में मधु मिलाकर 20 मि०ली० सुबह–शाम सेवन कराने से कामला तथा पांडु रोग नष्ट होता है।[2]

सन्निपात :

1. सन्निपात ज्वर में पुटपाक विधि से निकाला अडूसा 10 ग्राम स्वरस तथा थोड़ा अदरक का रस और तुलसी पत्र मिला उसमे मुलहठी को घिसकर शहद में मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाना चाहिए।
2. सन्निपात ज्वर में इसकी मूल की छाल 20 ग्राम, सौंठ 3 ग्राम, काली मिर्च एक ग्राम इनका क्वाथ बनाकर, मधु मिलाकर पिलाना चाहिए।

आमदोष : मोथा, वच, कटुकी, हरड़, दूर्वामूल इन्हें समभाग मिश्रित कर 5–6 ग्राम की मात्रा लेकर 10–20 मि०ली० गोमूत्र के साथ शूल में आमदोष के परिपाक के लिए पिलाना चाहिए।

शरीर की दुर्गन्ध : इसके पत्र स्वरस में थोड़ा शंखचूर्ण मिलाकर लगाने से शरीर की दुर्गन्ध दूर हो जाती है।

जंतुघ्न : अडूसा जलीय कीड़ो तथा जन्तुओं के लिए विषैला है, मेढंक इत्यादि छोटे जन्तु इससे मर जाते हैं। इसलिए पानी को शुद्ध करने के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है।

पशु व्याधि : गाय तथा बैलों को यदि कोई उदर व्याधि हो तो उनके चारे में इसके पत्तों की कुटी मिला देने से लाभ होता है। बैलों के उदरकृमि नष्ट हो जाते हैं।

सूखे पान : वासा के सूखे पत्ते पुस्तकों में रखने से उनमें कीड़े नही लगते।

वासा की सूखी पत्तियाँ

1. त्रिफला पटोलवासाछिन्नरूहा तिक्तरोहिणी च षड्ग्रंथा,
   मधुना श्लेष्मसमुत्थे दशमूलीवासकस्य वा क्वाथः।।
   (भैषज्य रत्नावली)
2. फलत्रिकामृतावासातिक्ता भूनिम्बनिम्बजैः।
   क्वाथः क्षौद्रयुतो हन्यात् पाण्डुरोगं सकामलम्।।
   (भैषज्य रत्नावली)
3. वृषपत्राणि निष्पीड्य रसं समधुशर्करम्।
   पिवेत्तेन शमं याति रक्तपित्तं सुदारुणम्।। (भैषज्य रत्नावली)
4. तालीशचूर्णसहितः पेयः क्षौद्रेण वासक स्वरसः।
5. आटरुषकमृद्वीका–पथ्या–क्वाथः सशर्करः।
   क्षौद्राख्यः कसनश्वासरक्तपित्तनिवर्हणः।। (भैषज्य रत्नावली)

   यः खादेत् क्षीरभक्ताशी माक्षिकेण वचारजः।
   अपस्मारं महाघोरं सुचिरोत्थं जयेद् ध्रुवम।।
   (भैषज्य रत्नावली)

   मुस्तां वचां तिक्तकरोहिणीन्च तथाऽभयां निर्दहनीं तुल्याम्।
   पिवेन्तु गोमूत्रयुतां कफोत्थ शूले तथाऽऽमस्य च पाचनार्थम्।।
6. कोमलसिंहास्यदलं सनिशं सुरभीजलेन सम्पिष्टम्।
   दिवसत्रयेण नियतं क्षपयति कच्छूं विलेपनतः।।
   (भैषज्य रत्नावली)
7. वासक स्वरसे पैत्ते गुडूच्या रसमे वच।।
   (भैषज्य रत्नावली)
8. पाठाला लि सिंहास्यमयूरकजटैः पृथक।
   नाभिवस्ति भगलिखात् सुखं नारी प्रसूयते।।
   (भैषज्य रत्नावली)
9. वासा हरिद्रा धनिका गुडूर्चा भा किणा नगर रि रीनाम्।
   क्वायेन भारीचकम्वि ते न श्वास शमं कस्य नटाति पुंस।।
   (भैषज्य रत्नावली)
10. वासको वात त्स्वर्यः कफपित्तास्त्रनाशनः।
    तिक्तस्तुवरको हृद्यो लघुः शीतस्तृऽर्तिहृत्।[5]
    श्वासकासज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः। (भाव प्रकाश)
11. कफ पित्त तमकश्वासं स्वरभेद रक्त पित्तहरः।।
    (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

4 अफीम

वैज्ञानिक नाम	:	*Papaver somniferum* L.
कुलनाम	:	Papaveraceae
अंग्रेजी नाम	:	Poppy, opium
संस्कृत	:	अहिफेन
हिन्दी	:	पोस्त, पोस्ता, अफीम का डोडा, अफीम
गुजराती	:	अफीण
मराठी	:	आफीमु
फारसी	:	तियाग
अरबी	:	लब्नुल, खखास

परिचय

अफीम पोस्त के डोडों से प्राप्त की जाती है। जो कृषिजन्य पौधों पर लगते हैं। भारतवर्ष में बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, मध्य एवं पश्चिम भारत और मालवा में पोस्त की खेती की जाती है। पोस्त के डोडे जब पूर्ण विकसित हो जाते हैं, परन्तु कच्ची अवस्था में होते हैं तब इनमें चीरा लगाने से एक गाढ़ा दूध (लैटेक्स) निकलता है। इसको एकत्रित कर सुखा लिया जाता है। यही व्यावसायिक या औषधीय अफीम है।

बाह्य–स्वरूप

पोस्त के डेढ़ से 4 फुट तक अर्धवार्षिक क्षुप होते हैं। जिनमें पत्र 4 इंच लम्बे–चौड़े, अवृन्त, हृदयाकार तथा कांड संसक्त होते हैं। पुष्प एकल, नीलाभ श्वेत, नीचे का भाग बैंगनी या चित्रित होते हैं। फल अनार की भांति गोल अंडाकार इसके नीचे की ओर ग्रीवा तथा ऊपर कंगूरेदार चोटी होती है। फल पकने पर स्फुटन के लिए कंगूरे के नीचे कपाटाकार सूक्ष्म छिद्र हो जाते हैं।

रासायनिक संघटन

पोस्त के बीजों में हल्के पीले रंग का मीठा स्थिर तेल होता है जिसे रोगन खशखश कहते हैं। अफीम में मार्फीन, नार्कोटीन एवं कोडीन आदि ऐल्केलाइड्स पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त इनमें अनेक प्राथमिक तथा द्वितीयक एल्केलाइडस, कार्बनिक अम्ल, लेक्टिक एसिड एवं मेकोनिक एसिड आदि आर्गेनिक अम्ल, जल, राल ग्लूकोज, वसा, उड़नशील तैल आदि तत्व पाये गये हैं।

Scanned by CamScanner

गुण–धर्म

पोस्त का डोडा शीतल, हल्का, ग्राही, कड़वा, कसैला, वातकारक, कफ तथा शुष्क कासहर, धातुओं को सुखाने वाला रूक्ष मदकारक, वचन–वर्धक, मोहजनक तथा रूचि को उत्पन्न करने वाला है। लगातार सेवन से नपुंसकत्व पैदा करता है।[1] अफीम शोषक, ग्राही, कफनाशक वायु तथा पित्त कारक है तथा जो गुण डोडा में हैं वहीं इसमें भी है।[2] पोस्त के बीज वीर्यवर्धक, बलदायक, भारी, कफवातवर्धक है।

औषधीय प्रयोग

मस्तक पीड़ा : 1 ग्राम अफीम और दो लौंग पीसकर लेप करने से बादी और सर्दी की मस्तक पीड़ा मिटती है।

नेत्र रोग : आंख के दर्द और आंख के दूसरे रोगों में इसका लेप बहुत लाभकारी है।

नकसीर : अफीम और कुंदरु गोंद दोनों बराबर मात्रा में पानी के साथ पीसकर सुंघाने से नकसीर बंद होती है।

केश : इसके बीजों को दूध में पीसकर सिर पर लगाने से इसमें होने वाले फोड़े फुन्सियां एवं रूसी साफ हो जाती है।

दंतशूल : 16 मिलीग्राम अफीम और 125 मिलीग्राम नौसादर, दोनों को दाड़ में रखने से दाड़ की पीड़ा मिटती है और दांत के छेद में रखने से दंतशूल मिटता है।

कर्णशूल : अफीम की 65 मिलीग्राम भस्म गुलाब के तैल में मिलाकर कान में टपकाने से पीड़ा मिटती है।

स्वर भंग : अफीम के डोडे और अजवायन को उबालकर गरारे करने से बैठी हुई आवाज खुल जाती है।

प्रतिश्याय और खांसी :

1. बीज सहित इसके 60 ग्राम डोडे का क्वाथ बनाकर 50 ग्राम बूरा मिलाकर शर्बत बनाकर पिलाने से प्रतिश्याय व खांसी मिटती है।
2. डंठल अलग करके, इसके 2 डोडे लें तथा इनको दो ग्राम सैंधा नमक के साथ 350 ग्राम पानी में उबाल लें, जब 100 ग्राम पानी शेष रह जाये तो छानकर सोते समय पिलाने से प्रतिश्याय और खांसी मिटती है।

आमाशय की सूजन, उदरशूल : अमाशय की झिल्ली की सूजन और उदरशूल में इसका लेप बहुत फायदेमंद है।

संग्रहणी : अफीम और बछनाग 3 ग्राम, लौह भस्म 250 ग्राम और अभ्रक भस्म डेढ़ ग्राम इन चारों वस्तुओं को दूध में घोटकर 125 मिलीग्राम की गोलियां बनाकर दूध के साथ प्रतिदिन सेवन करनी चाहिए। पथ्य में जल को त्याग करके खाने–पीने में दूध का ही व्यवहार करना चाहिए।

अतिसार :

1. अतिसार में अफीम और केशर को समान भाग लेकर पीस लें तथा 125 मिलीग्राम प्रमाण की गोलियां बनाकर शहद के साथ देने से लाभ होता है।
2. अफीम को सेंककर खिलाने से पक्वातिसार मिटता है।
3. 4 से 9 ग्राम तक इसके डोडे पीसकर पिलाने से अतिसार मिटता है।

अर्श :

1. शूल युक्त अर्श पर रसवंती तथा अफीम का लेप करने से वेदना कम होकर रक्तस्त्राव बंद हो जाता है।
2. धतूरे के पत्रों के रस में अफीम मिलाकर लेप करने से वेदना शीघ्र बंद हो जाती है।

गर्भाशय की पीड़ा : प्रसव होने के पश्चात् गर्भाशय की पीड़ा मिटाने के लिए इसके डोडों का क्वाथ पिलाना चाहिए।

कटिशूल :

1. एक तोले पोस्त के दानों में बराबर मिश्री मिलाकर फंकी देने से कमर की पीड़ा मिटती है।
2. इसके डोडे पानी में भिगोकर पानी इतना पिलायें की नशा न हो, इससे कमर का दर्द मिटता है।

वादी की पीड़ा : स्नायु संबंधी पीड़ा पर इसके लेप करने से लाभ होता है।

खुजली : अफीम को तिल के तेल में मिलाकर मालिश करने से

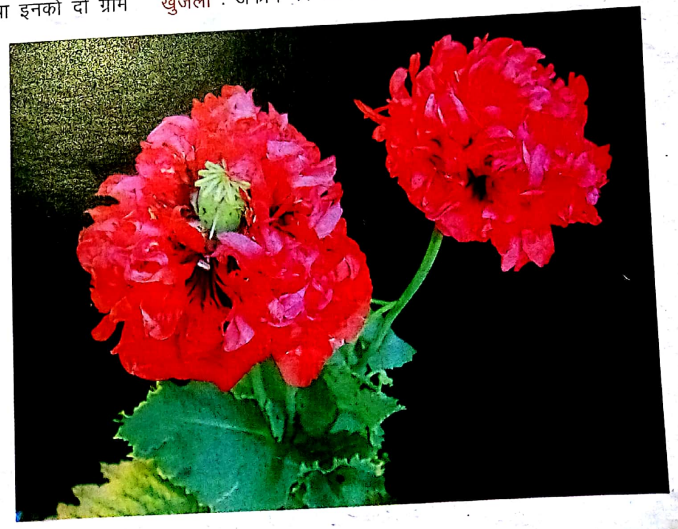

Scanned by CamScanner

खुजली मिटती है।

जोंक का डंक : जोंक का डंक अगर पक जाए तो उस पर इसके दानों को पीसकर लेप करना चाहिए।

ज्वर : इसके एक डोडे और 7 काली मिर्चों को उबालकर सुबह-शाम पिलाने से चातुर्थिक ज्वर मिटता है।

नासूर :

1. अफीम और हुक्के के कीड़े की बत्ती बनाकर भरने से नाड़ी व्रण भर जाता है।
2. मनुष्य के नाखून की राख में 250 मिलीग्राम अफीम उसमें रखकर आग पर पकाकर खिलाने से लाभ होता है।

आक्षेप : प्रलाप, अनिद्रा, आक्षेप, वायु हनुस्तंभ आदि रोगों में अफीम का सेवन लाभकारी है।

दोष : अफीम का अधिक मात्रा में सेवन उपद्रवकारी है और इससे मृत्यु तक हो जाती है।

निवारण : रीठे का जल, नीम का क्वाथ, मैनफल व तम्बाकू का क्वाथ, करमयक शाक का रस निचोड़कर पिलाने से प्राण त्याग करता हुआ बीमार भी बच जाता है।

1. स्यात्खाखसफलोद्भूतं वल्कलं शीतलं लघु।। 219।।
ग्राहि तिक्तं कषायं च वातकृत्कफकासहृत।
धातूनां शोषकं रूक्षं मदकृद्वाग्विर्धनम्।
मुहुर्मोहकरं रूच्यं सेवनात्पुंस्त्वनाशनम् ।। 220।।

2. उक्तं खसफलक्षीरमाफूकमहिफेनकम्।
आफूकं शोषणं ग्राहि श्लेष्मघ्नं वातपित्तलम्।। (भाव प्रकाश)
खस्खसः सूक्ष्मबीजः स्यात्सुबीजः सूक्ष्मतंडुलः।।
खस्खसो मधुरः पाके कान्तितिवीर्यबलप्रदः।। (रा०नि०)

Scanned by CamScanner

अगस्त

5

वैज्ञानिक नाम	:	*Sesbania grandiflora* (L). Poir
कुलनाम	:	Fabaceae
अंग्रेजी नाम	:	Sesbane
संस्कृत	:	अगस्त्य, मुनिद्रुम
हिन्दी	:	अगस्तिया, अगस्त
गुजराती	:	अगथियो
मराठी	:	अगसे गिडा
बंगाली	:	वक
पंजाबी	:	हथिया
तैलगु	:	अविषि
तमिल	:	अगति
असामी	:	वकफूल

परिचय

अगस्त के रोपे हुए वृक्ष सर्वत्र मिलते हैं। जहां जल की प्रचुरता तथा वायुमण्डल उष्ण प्रधानशील है, वहां खूब फलता फूलता है। वर्षा ऋतु में इसके बीज उगते हैं। राजनिघंटुकार ने इसकी चार जातियां श्वेत, पीत, नील ओर रक्त बतलाई हैं। परन्तु अधिकांश रूप में श्वेत रंग का पुष्प ही प्राप्त होता है। इसके कोमल पत्र, पुष्प और फलियों का शाक बनाकर खाया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

अगस्त के वृक्ष अल्पायु तथा शीघ्र वर्धनशील, 20 फुट तक ऊंचे होते हैं। पत्र संयुक्त बहुत लम्बे पत्र दंड पर 25–30 जोड़ों में लगते हैं। पत्रक एक से डेढ इंच तक लम्बे किंचित अंडाकार, पुष्प श्वेत वर्ण, नौकाकार, शिम्बी एक फुट लम्बी किंचित वक्र, चपटी और प्रत्येक फली में 15–20 हलके रंग के बीज होते हैं। शरद ऋतु में पुष्प तथा शीतकाल में फल लगते हैं।

रासायनिक संघटन

इसकी छाल में टैनिन और रक्तवर्ण का निर्यास होता है। पत्तियों में प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा तथा विटामिन ए, बी, सी; पुष्पों में विटामिन बी और सी तथा प्रोटीन; बीजों में लगभग 70 प्रतिशत प्रोटीन तथा एक तेल पाया जाता है।

Scanned by CamScanner

ुण–धर्म

: पित्त, कफ तथा चातुर्थिक ज्वरनाशक, शीतल, रूक्ष, तिक्त, तकर तथा प्रतिश्याय का निवारण करने वाला है। शीतवीर्य, ुर, कड़वा, कसैला, विपाक में चरपरा तथा त्रिदोष पिंजरी तुर्थिक ज्वर, रतौंधी, पीनस रोग और वातरक्त नाशक है।[1]

: कटु, तिक्त, किंचित उष्ण, विपाक में मधुर, गुरू तथा कृमि कफ, कंडू, रक्त पित्त, है।[2]

शिम्बी : इसकी फली विपाक में मधुर, तिक्त लघु, सर, दस्तावर, रूचिकारक, बुद्धिदायक, स्मरणशक्ति वर्धक तथा त्रिदोष शूल, पांडु, विष, शोथ और गुल्म–नाशक है। पक्वफली रूक्ष और पित्तकारक होती है। इसकी छाल संकोचक, कटुपोष्टिक, पाचक और शक्ति–वर्धक है।[3]

औषधीय प्रयोग

र्गी :

अगस्त के पत्तों का चूर्ण और काली मिर्च का चूर्ण समान भाग में लेकर गोमूत्र के साथ बारीक पीसकर मिर्गी के रोगी को सुघांने से लाभ होता है।[4]

2. यदि बालक छोटा हो तो इसके दो पत्तों का रस और उसमें आधी मात्रा में काली मिर्च मिलाकर उसमें रूई का फोया तरकर उसे नासारंध्र के पास रखने से ही अपस्मार शांत हो जाता है।

आधाशीशी : जिस तरफ के मस्तिष्क में वेदना हो इसके दूसरी ओर के नथुने में अगस्त के पत्तों या फूलों के रस की 2–3 बूंदे टपकाने से तुरन्त लाभ होता है। इससे नासिका की पीड़ा भी शांत हो जाती है।

प्रतिश्याय : जुकाम के वेग से सिर बहुत भारी तथा दुःखता हो तो अगस्त पत्र रस की दो–चार बूंदे नाक में टपकाने से तथा इसकी मूल का रस 10 से 20 ग्राम तक शहद मिलाकर दिन में 3–4 बार चाटने से कष्ट दूर हो जाता है।

नेत्र विकार :

1. इसके पुष्पों का रस 2–2 बूंद नेत्रों में डालने से दृष्टि का धुंधलापन मिटता है।
2. इसके पुष्पों की सब्जी या शाक बनाकर सुबह–शाम खाने से रतौंधी मिटती है।
3. इसके 250 ग्राम पत्रों को पीसकर एक किलोग्राम गोघृत में पकाकर सिद्ध किये हुए घी को 5–10 ग्राम सुबह–शाम सेवन करने से परम लाभ होता है।
4. इसके पुष्पों का मधु आंखों में डालने से धुंध या जाला मिटता है। पुष्प को तोड़ने से भीतर से 2–3 बूंद मधु निकलता है।
5. इसके पत्तों को घी में भूनकर खाने से और घी का सेवन करने से दृष्टिमांद्य, धुंध या जाला कटता है।

चित्तविभ्रम : इसके पत्र रस में सौंठ, पीपर और गुड़ समभाग मिलाकर 1–2 दो बूंद नस्य देने से लाभ होता है।

स्वर भंग : इसकी पत्तियों के क्वाथ से गंडूष करने से शुष्क कास, जीभ का फटना, स्वरभंग तथा कफ के साथ रूधिर निकलने में लाभ होता है।

उदरशूल : अगस्त की छाल के 20 ग्राम क्वाथ में थोड़ा सैंधा नमक और भुनी हुई 20 नग लौंग मिलाकर सुबह–शाम

Scanned by CamScanner

पीने से तीन दिन में पुराने से पुराने उदर विकार और शूल नष्ट हो जाते हैं।

बद्धकोष्ठ : इसके 20 ग्राम पत्तों को 400 ग्राम पानी में उबालकर, 100 ग्राम शेष रहने पर 10–20 ग्राम क्वाथ पिलाने से बद्धकोष्ठ मिटता है।

श्वेत प्रदर : अगस्त की ताजी छाल को कूटकर इसके रस में कपड़े को भिगो कर योनि में रखने से श्वेत प्रदर और खुजली में लाभ होता है।

गठिया : धतूरे की जड़ और अगस्त की जड़ दोनों को बराबर मात्रा में लेकर पीस लें और पुल्टिस जैसा बनाकर वेदनायुक्त भाग पर बांधने से कष्ट दूर होता है। सूजन उतर जाती है। कम वेदना में लाल अगस्त की जड़ को पीसकर लेप करें।

वातरक्त : अगस्त के सूखे पुष्पों का 100 ग्राम महीन चूर्ण भैंस के एक किलो दूध में डालकर दही जमा दें, दूसरे दिन मक्खन निकाल कर मालिश करें। इस मक्खन की मालिश खाज पर करने से भी लाभ होता है।[5]

बुद्धिवर्धनार्थ : अगस्त के बीजों का चूर्ण 3 से 10 ग्राम तक गाय के धारोष्ण 250 ग्राम दूध के साथ प्रातः–सायं कुछ दिन तक खाने से स्मरण शक्ति तीव्र हो जाती है।

ज्वर :

1. इसके फूलों या पत्तों का रस सुँघाने से चातुर्थिक ज्वर और बंधे हुए जुकाम में लाभ होता है।
2. अगस्त पत्र स्वरस की दो या तीन चम्मच में आधा चम्मच शहद मिलाकर प्रातः–सायं सेवन करने से शीघ्र ही चातुर्थिक ज्वर का आना रूक जाता है। इसका प्रयोग बराबर 15 दिन तक करना चाहिए।
3. फेफड़ों के शोथ एवं कफज कास श्वास के साथ यदि ज्वर हो तो इसकी जड़ की छाल अथवा पत्तों का या पंचाग का 10 या 20 ग्राम स्वरस में बराबर शहद मिलाकर दिन में 2 से 3 बार सेवन करने से अत्यन्त लाभ होता है।
4. इसकी जड़ की छाल के 2 ग्राम महीन चूर्ण को पान के पत्तों के 10 ग्राम रस के साथ दिन में 3 बार सेवन करने से भी कफज कास श्वास के साथ ज्वर में लाभ होता है।
5. मसूरिका के और दूसरे ऐसे ज्वरों में जिनमें फोड़े–फुन्सियां हो जाया करती है, छाल का हिम या फांट 20 से 30 ग्राम की मात्रा में सबुह–शाम खाली पेट पिलाना चाहिए।

मूर्च्छा : केवल पत्र रस की चार बूंदे नाक में टपका देने से ही मूर्च्छा दूर हो जाती है।

बच्चों के विकार : इसके पत्र स्वरस को लगभग 5 से 10 ग्राम की मात्रा में पिलाने से दो–चार दस्त होकर बच्चों के सब विकार शांत हो जाते हैं।

अन्तर्विद्रधि : अगस्त के पत्रों को गरम कर यदि पुटपाक विधि गरम करें तो अच्छा है, फोड़े के स्थान पर बांधने से अन्तर्विद्र फूट कर बह जाती है।

रक्तस्राव : इसके फूलों का शाक खाने से लाभ होता है।

1. वृषागस्त्ययोः पुष्पाणि तिक्तानि कटुविपाकानि क्षयकासहराणि च। अगस्त्यं नातिशीतोष्णं नक्तान्धानां प्रशस्यते। (सु०सू०)
2. अगस्त्यपत्रं कटुक सतिक्तं गुरू कृमिघ्नं विशदं कफघ्नम्। कडूहरं शोणितपित्तहारि स्यात् सूक्ष्ममुष्णं मधुरं विषघ्नम्।। (कै०नि०)
3. मुनिशिंबी सरा प्रोक्ता बुद्धिदा रूचिदा लघुः। पाककाले तु मधुरा तिक्ता चैव स्मृतिप्रदा।। त्रिदोषशूलकफहृत् पांडुरोगविषापनुत्। शोषगुल्महरा प्रोक्ताः सा पक्वा रूक्षपित्तला।। (नि०र०
4. अगस्तिपत्रं मरिचं मूत्रेण परिपेषितम्। नस्यं शस्तमपस्मारं हन्ति शीघ्रं नरस्य तु।। (हरीत
5. अगस्तिपुष्प चूर्णेन माहिषं जनयेद्दधि। तदुत्थनवनीतेन देहजं स्फुटनं जयेत्।। (भाव प्र

Scanned by CamScanner

6

अजमोद

वैज्ञानिक नाम	:	*Apium graveolens* L.
कुलनाम	:	Apiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Celery seeds
संस्कृत	:	अजमोदा, बस्तमोदा, मर्कटी, कारवी
हिन्दी	:	अजमोद
मारवाड़ी	:	अजमोदे
गुजराती	:	अजमोद, बौडी अजमों
मराठी	:	ओमादा, वोगा
पंजाबी	:	अजमुद, भूत धार
बंगाली	:	रान्धुनी, आजमूद, बनानी
द्राविड़ी	:	आशामंदा
कन्नड़	:	बोमा
अरबी	:	बज्रुलकरफ्स
फारसी	:	करफ्स (श)
तैलगु	:	अमोद, बोमम

परिचय

अजमोद भारतवर्ष में सर्वत्र, विशेषकर बंगाल में शीत ऋतु के आरंभ में बोई जाती है। हिमालय के उत्तरी और पश्चिमी प्रदेशों में, पंजाब की पहाड़ियों पर, पश्चिमी भारतवर्ष और फारस में बहुलता से होता है। फरवरी–मार्च में पुष्प खिलते हैं और मार्च–अप्रैल तक पुष्प फल में परिवर्तित होने पर पौधा समाप्त हो जाता है।

बाह्य–स्वरूप

अजमोद के छोटे–छोटे क्षुप अजवायन की भांति 1–3 फुट ऊंचे ात्ते विभक्त और किनारे कटे हुए होते हैं। पुष्प छतरीनुमा पुष्पक्रम ां नन्हें–नन्हें श्वेत रंग के होते हैं जो पककर अन्ततः बीजों में ारिवर्तित हो जाते हैं। धनिये व अजवायन की भांति इन बीजों को ो अजमोद कहते हैं।

रासायनिक संघटन

जमोद में कपूर से मिलता–जुलता एक पदार्थ एपिओला, तैलीय ाक्ष्ण और अग्राह्य होता है। इसके अतिरिक्त गंधक, उड़नशील तेल, त्बुमीन, लुआब, गोद, क्षार और कुछ लवण पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

यह कफवातशामक, पित्तवर्धक, वेदनास्थापन, विदाही, दीपन, वातानुलोमन, शूलप्रशमन, कृमिघ्न, हृदयोत्तेजक, कफघ्न, मूत्रप्रवर्तक, गर्भाशयोत्तेजक और वाजीकरण है। यह हिचकी, वमन, गुदाशय की पीड़ा, कुक्कुर खांसी में लाभकारी है।[1,2] पाचन अंगों पर इसका प्रभाव होने से उदर विकार–नाशक औषधियों में इसे मुख्य स्थान प्राप्त है। यकृत, प्लीहा और हृदय को यह लाभ पहुंचाती है। अर्श और पथरी रोग में भी यह लाभकारी है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

मस्तिष्क : इसके मूल की कॉफी मस्तिष्क एव वातनाड़ियों के लिए उपयोगी है।

दंत पीड़ा : अजमोद को जलाकर धूनी देने से दांतों की पीड़ा मिटती है।

श्वांस रोग : यह स्नायु शैथिल्यकर होने के कारण श्वसनी शोथ तथा श्वास रोगों में लाभकारी है। इसे 3–6 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार प्रयोग करें।

शुष्क कास : अजमोद को पान में रखकर चूसने से सूखी खांसी में आराम मिलता है।

श्वांस : अजमोद उत्तेजक और बलवर्द्धक है, श्वास को मिटाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

हिचकी : भोजनोपरान्त यदि हिचकियाँ आती हो तो अजमोद के 10–15 दाने मुँह में रखने से हिचकी बंद हो जाती है।

वमन :

1. जिन औषधियों का स्वाद अग्राह्य होता है, उनके साथ अजमोद के 2–5 ग्राम चूर्ण का सेवन करने से वमन की आशंका नही रहती है।
2. वमन बंद करने के लिए 2–5 ग्राम अजमोद एवं 2–3 लौंग की कली को पीस कर 1 चम्मच मधु के साथ चाटने से लाभ होता है।

अफारा : अजमोद के 3–6 ग्राम चूर्ण का 10 ग्राम गुड़ के साथ 3–4 बार सेवन करने से पेट का अफारा मिटता है।

उदरशूल :

1. 1 ग्राम काले नमक के साथ 3 ग्राम अजमोद की फंकी देने से पेट का दर्द दूर होता है।
2. इसके तेल की 2–3 बूंदे 1 ग्राम शुंठी चूर्ण में मिश्रित कर गरम जल के साथ सेवन करने से उदर की पीड़ा मिटती है।

पतले दस्त (अतिसार) : अजमोद, सौंठ, मोचरस एवं धाय के फूल समान मात्रा में चूर्ण कर 3–6 ग्राम की मात्रा में छाछ के साथ दिन में 3–4 बार सेवन करने से पतले दस्त बंद हो जाते हैं।

मूत्र विकार : अजमोद की मूल का 2–5 ग्राम चूर्ण सुबह–शाम सेवन करना मूत्र विकार में लाभकारी है।

अर्श : अजमोद को गरम कर कपड़े में बांधकर सेक करने से बवासीर की पीड़ा दूर होती है।

अश्मरी : डेढ़ से तीन ग्राम अजमोद का चूर्ण, 10 ग्राम मूली के पत्तो के रस के साथ, 500 मिलीग्राम जवाखार मिलाकर कुछ समय तक नित्य प्रातः व सायंकाल पीने से पथरी गल कर निकल जाती है।

वायु प्रकोप : मूत्राशय में वायु का प्रकोप होने पर अजमोद और नमक को स्वच्छ वस्त्र में बांधकर नलों पर सेक करने से वायु नष्ट हो जाती है।

कृमि : बच्चों की गुदा में कृमि हो जाने पर अजमोद को अग्नि पर डालकर धुआं देने से तथा इसको पीसकर लगाने से आराम मिलता है।

सर्वांग शोथ : सभी वायु विकार में अजमोद, छोटी, पीपल, गिलोय, रास्ना, सोंठ, अश्वगंधा, शतावरी एवं सौंफ इन आठ पदार्थों का समभाग लेकर चूर्ण कर डेढ़ ग्राम की मात्रा में 10 ग्राम गौघृत के साथ दिन में दो बार सेवन करना चाहिए।

गठिया : अजमोद वायबिडंग, देवदारू, चित्रक, पिपला मूल सौंफ, पीपल, काली मिर्च 10–10 ग्राम, हरड़, विधारा 100 ग्राम, शुंठी 100 ग्राम, इन सबका महीन चूर्ण 6 ग्राम की मात्रा में पुराना गुड़ मिश्रित कर उष्ण जल के साथ दिन में 3 बार सेवन करने से शोथ, आमवात जोड़ों का दर्द, पीठ व जांघ का दर्द व सर्ववात रोग नष्ट होते है।

सर्वांग–पीड़ा : सर्वांग पीड़ा हो या पार्श्व पीड़ा, अजमोद को तेल में उबालकर मालिश करनी चाहिए। इसके पत्तों को गरम करके रोगी के बिस्तर पर बिछा देना चाहिए, ऊपर से रोगी को हल्का कपड़ा ओढ़ा देना चाहिए।

शूल : इसकी मूल का 10–20 ग्राम क्वाथ या 2–5 ग्राम चूर्ण सर्वांग शोथ और शूल में दिन में दो–तीन बार प्रयोग करना लाभकारी है।

कुष्ठ : शीत पित्त और कुष्ठ में अजमोद के 2–5 ग्राम चूर्ण को गुड़ के साथ मिलाकर 7 दिन तक दिन में दो–तीन बार सेवन करना चाहिए और पथ्य पूर्वक रहना चाहिए।

ज्वर : अजमोद 4 ग्राम तक नित्य प्रातः ठंड़े पानी के साथ बिना चबाये निगलने से जीर्णज्वर, शरीर की सर्दी आदि दूर हो जाती है।

व्रणः व्रणों को शीघ्र पकाने के लिए इसे थोड़े गुड़ के साथ पीसकर सरसों के तेल में पकाकर बांधना चाहिए।

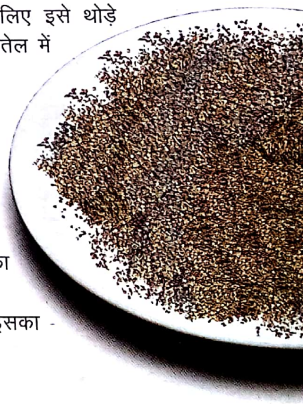

निषेध :

1. अजमोद विदाही है, अर्थात खाने के पश्चात छाती में जलन पैदा करता है। गर्भाशयत्तोजक है, इसलिए गर्भवती महिलाओं को इसका सेवन नही करना चाहिए।
2. अपस्मार के रोगी को भी इसका सेवन नहीं करना चाहिए।

1. अजमोदा कटुस्तीक्ष्णा दीपनी कफवातनुत्।
उष्ण विदाहिनी हृद्या वृष्या बलकरी लघुः।।
नेत्रामय कफच्छर्दिहिक्कावस्तिरुजो हरेत्।। (भाव प्रकाश)

2. अजमोदा तु शूलघ्नी तिक्तोष्णा कफवातजित्।
हिक्काध्मानारुचीर्हन्ति कृमिजिद्वह्निदीपनी।। (ध०नि०)

Scanned by CamScanner

7 अजवायन

वैज्ञानिक नाम	:	*Trachyspermum ammi* (L.) Sprague
कुलनाम	:	Apiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Ajowan
संस्कृत	:	यवानी, अजमोदिका, दीप्यका
हिन्दी	:	अजवायन
गुजराती	:	अजमो
मराठी	:	ओवा
बंगाली	:	जोवान
पंजाबी	:	अनवाइन, जवैण
फारसी	:	नानखाह
तैलगु	:	वामु

परिचय

भारतवर्ष में अजवायन का प्रयोग औषधि के रूप में बहुत प्राचीन काल से हो रहा है। प्रसूति के बाद स्त्री को इसका विशेष रूप से सेवन कराया जाता है। इससे अन्न का पाचन ठीक होता है, भूख अच्छी लगती है, गर्भाशय की शुद्धि एवं पीड़ा दूर होती है। प्रसव के पश्चात इसके चूर्ण की पोटली बना योनि में रखने से या इसके क्वाथ से योनि का प्रक्षालन करने से गर्भाशय में दुर्गन्ध युक्त जलस्त्राव एवं गर्भाशय में कीटाणु प्रकोप नहीं हो पाता। पाचक औषधि के रूप में इस बूटी ने बहुत प्रसिद्धि पाई है। अजवायन में चिरायते का कटुपौष्टिक गुण, हींग का वायुनाशक और काली मिर्च का अग्नि दीपन गुण इसी कारण कहा जाता है "एका यवानी शतम्न्नपातिका" – अर्थात् अकेली अजवायन ही सैंकड़ो प्रकार के अन्न को पचाने में सक्षम है। दूध यदि ठीक न पचता हो तो दूध पीकर ऊपर से थोड़ी अजवायन खा लेनी चाहिये। यदि गेहूं का आटा मिष्ठान्न आदि न पचता हो तो इसमें इस चूर्ण को मिलाकर खाना चाहिये। शरीर में कहीं पर भी वेदना होती हो तो इसे पानी में पीसकर लेप करें और ऊपर से धीरे धीरे सेक दें। अजवायन को आग पर डाल कर धूपित करने से, अंगदर्द दूर होकर पसीना आता है, एवं देह की शुद्धि हो जाती है।

बाह्य–स्वरूप

इसका शाखा प्रशाखा युक्त, चिकना या किंचित् मृदुरोमशः पत्रमय क्षुप एक से तीन फीट ऊँचा होता है, काष्ठ धारीदार होता है,

Scanned by CamScanner

पत्र द्विपक्षवत् या त्रिपक्षवत् विभक्त होता है। अन्तिम पत्रखण्ड आधे से एक इंच लम्बे, रेखाकार होते है। पुष्प छत्राकार, श्वेत संयुक्त छत्रको में होते है। फल आधे इंच लम्बे, अण्डाकार, धूसर भूरे रंग के सूक्ष्म, कंटकित या रोमश होते है तथा पांच स्पष्ट रेखाओं से युक्त होने के कारण पत्रचकोणीय प्रतीत होते है फल के एक बीजी दोनों खण्ड कुछ दबे होते है। प्रत्येक खण्ड में एक बीज होता है। फरवरी–अप्रैल में पुष्प और उसके बाद इसमें फल लगते है।

रासायनिक संघटन

इसके अन्दर एक प्रकार का सुगन्धित उड़नशील द्रव्य होता है, जिसे अजवायन का फूल सत तथा अंग्रेजी में थायमोल कहते है। अजवायन को पानी में भिगोकर भाप के द्वारा इसका सत निकाला जाता है।

गुण–धर्म

दीपन, पाचन, वातानुलोमन, शूलप्रशमन, जीवाणु नाशक, गर्भाशय उत्तेजक, उदर कृमिनाशक (अकुंशमुख कृमि पर विशिष्ट घातक क्रिया), पित्त–वर्धक, शुक्रनाशक, स्तन्यनाशन, कफवातशामक, ज्वरघ्न, शीतप्रशमन, वेदनास्थापन तथा शोथहर है।[1]

औषधीय प्रयोग

प्रतिश्याय व शिरःशूल :

1. 200 से 250 ग्राम अजवायन को गरम कर मलमल के कपड़े में बांधकर पोटली बनाकर तवे पर गर्म करके सूंघने से छींके आकर जुकाम व प्रतिश्याय का वेग कम होता है।
2. अजवायन को साफ कर महीन चूर्ण बना लें, इस चूर्ण को 2 से 5 ग्राम की मात्रा में नस्वार की तरह सूंघने से जुकाम, सिर की पीड़ा, कफ का नासिका में रूक जाना एवं मस्तिष्क के कृमि में लाभ होता है।

खांसी :

1. इसके चूर्ण की 2 से 3 ग्राम मात्रा को गर्म पानी या गर्म दुध के साथ दिन में दो या तीन बार लेने से भी जुकाम, सिर दर्द, नजला, मस्तकशूल, कृमि पर लाभ होता है।
2. कफ अधिक गिरता हो, बार–बार खांसी चलती हो, ऐसी दशा में अजवायन का सत् 125 मिलीग्राम, घी 2 ग्राम और शहद 5 ग्राम में मिलाकर दिन में 3 बार खाने से कफोत्पत्ति कम होकर खांसी में लाभ होता है।
3. खांसी तथा कफ ज्वर में अजवायन 2 ग्राम, छोटी पिप्पली आधा ग्राम, का क्वाथ बनाकर 5 से 10 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से लाभ होता है।
4. खांसी में 1 ग्राम अजवायन रात्रि में सोते समय मुलेठी 2 ग्राम, चित्रकमूल 1 ग्राम से निर्मित काढे को गर्म पानी के साथ सेवन करें।
5. 5 ग्राम अजवायन को 250 ग्राम पानी में पकायें, आधा शेष रहने पर, छानकर नमक मिला रात्रि को सोते समय पी लें।
6. खांसी पुरानी हो गई हो, पीला दुर्गन्धमय कफ गिरता हो और पाचन क्रिया मन्द पड़ गई हो तो अजवायन का अर्क दिन में 3 बार 25 की मात्रा में पिलाने से लाभ होता है।

सिर की जुऐं : 10 ग्राम अजवायन चूर्ण में 5 ग्राम फिटकरी मिला, दही या छाछ में मिलाकर बालों में मलने से लीखें तथा जुएं मर जाती है।

कर्णशूल : 10 ग्राम अजवायन को 50 ग्राम तिल के तेल में पकाकर सहने योग्य उष्ण तैल को 2–2 बूँद कान में डालने से कान की वेदना मिटती है।

उदरकृमि :

1. स्वच्छ अजवायन के महीन चूर्ण को 3 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार छाछ के साथ सेवन करने से उदर के कृमियों का समूल नाश हो जाता है।
2. अजवायन के 2 ग्राम चूर्ण को समान भाग नमक के साथ प्रातः काल सेवन करने से अजीर्ण, आमवात तथा कृमिजन्य रोग, आध्मान, शूल आदि शान्त होता है।[2]
3. उदर में जो हुकवर्म नामक कृमि होते हैं, उनका नाश करने के लिये अजवायन का सत् 125–500 मिलीग्राम तक खाली पेट 1–1 घंटे के अंतर में 3 बार देने से और मामूली जुलाब (अरंडी तैल नहीं दें) देने से सब कृमि निकल जाते हैं। यह प्रयोग, पाडुंरोगी, निर्बल और सगर्भा पर नहीं करना चाहिये।
4. अजवायन के 500 मिलीग्राम चूर्ण में, समभाग काला नमक मिला, रात्रि के समय रोज गरम जल से देते रहने से बालकों का कृमि रोग दूर हो जाता है। कृमिरोग में पत्तों का 5 मि०ली० स्वरस भी लाभकारी है।

जलोदर :

1. गाय के 1 किलो मूत्र में अजवायन लगभग 200 ग्राम व भिगोकर सुखा लें, इसको थोड़ी–थोड़ी मात्रा में गौमूत्र के स खाने से जलोदर मिटता है।
2. यही अजवायन जल के साथ खाने से पेट की गुड़गुडा और खट्टी डकारें आना बन्द हो जाती है
3. अजवायन को बारीक पीसकर उस में थोड़ी मात्रा में मिलाकर लेप बनाकर पेट पर लगाने से जलोदर एवं पेट अफारे में सद्य लाभ होता है।

अमृतधारा : पोदीने का सत या फूल 10 ग्राम, सत् अजवाय ग्राम, देसी कपूर 10 ग्राम तीनों को एक साफ शीशी में डा

Scanned by CamScanner

अच्छी प्रकार से डाट लगाकर धूप में रखें। थोड़ी देर में तीनों चीजों का गलकर पानी बन जायेगा। यह एक दवा अनेक बीमारियों में काम आती है। (इसको आंशिक रूप से परिवर्तित कर हम आश्रम में दिव्यधारा के नाम से निर्मित करते हैं)

सर्दी जुकाम : सर्दी–जुकाम में 3–4 बूंद दिव्यधारा रूमाल में डालकर सूंघने से या 8–10 बूंद गर्म पानी में डालकर भाप लेने से तुरन्त लाभ होता है।

उल्टी–दस्त : अमृत धारा की 4–5 बूदें बतासे में या गरम जल में डालकर आवश्यकतानुसार देने से तुरन्त लाभ होता है। एक बार में लाभ न हो तो थोड़ी–थोड़ी देर में 2–3 बार दे सकते है।

हैजा : हैजे में 4–5 बूदं अमृतधारा की विशेष रूप से गुणकारी है। अमृतधारा को हैजे की प्रारम्भिक अवस्था में देने से तुरन्त लाभ होता है। एक बार में आराम न हो तो 15–15 मिनट के अन्तर से 2–3 बार दे सकते है। इसके प्रयोग से हैजे के सैकड़ो बीमार बच गये है।

अतिसार : मरोड़, पेट दर्द, श्वास, गोला, उल्टी आदि बीमारियों में भी 5–7 बूदं अमृतधारा बतासे में देने से तुरन्त लाभ होता है।

कीट दंश : बिच्छू, ततैया, भंवरी, मधुमक्खी इत्यादि जहरीले कीटों के दंश पर भी अमृतधारा को लगाने से शान्ति मिलती है। पत्तों को कुचल कर भी बाँध दिया जाता है।

उदर विकार मंदाग्नि, अम्लपित्त व शूल :

1. 3 ग्राम अजवायन में ½ ग्राम काला नमक मिलाकर गरम जल के साथ फंकी लेने से अफारा मिटता है। इस चूर्ण को दोनों समय फंकी लेने से वायु गोले का नाश होता है।[3]
2. अजवायन, सैंधा नमक, हरड़, और सौंठ इनके चूर्ण को समभाग मिश्रित कर, 1 से 2 ग्राम की मात्रा गर्म पानी के साथ सेवन करने से उदर शूल नष्ट होता है। इस चूर्ण के साथ वचा, सोंठ, काली मिर्च, पिप्ली 100 ग्राम जल में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ के साथ गरम–गरम ही रात्रि में पीने से कफ व गुल्म नष्ट होता है।[4]
3. प्रसूता स्त्रियों को अजवायन के लड्डू और भोजन के बाद अजवायन 2 ग्राम की फंकी देनी चाहिये, इससे आंतों के कीड़े मरते हैं, पाचन होता है और भूख अच्छी लगती है एवं प्रसूत रोग से बचाव होता है।
4. भोजन के बाद यदि छाती में जलन हो तो 1 ग्राम अजवायन और बादाम की 1 गिरी दोनों को खूब चबा–चबा कर या कूट–पीस कर खायें।
5. अजवायन अर्क की 2–2 बूंदे पान के बीड़े में लगाकर खायें।
6. अजवायन 1 भाग, काली मिर्च और सैंधा नमक आधा–आधा भाग, गरम जल के साथ 3–4 ग्राम तक सुबह–शाम सेवन करे।

अजवायन 80 ग्राम, सैंधा नमक 40 ग्राम, काली मिर्च 40 ग्राम, काला नमक 40 ग्राम, जवाखार 40 ग्राम, कच्चे पपीते का दूध (पापेन) 10 ग्राम, इन सबको महीन पीस कर कांच के बरतन में भरकर 1 किलो नीबू का रस डालकर धूप में रख देवें और बीच–बीच में हिलाते रहें। 1 महीने बाद जब बिल्कुल सूख जाये, सूखे चूर्ण को 2 से 4 ग्राम की मात्रा में जल के साथ सेवन करने से मंदाग्नि शीघ्र दूर होती है। इससे पाचन शक्ति बढ़ती है तथा अजीर्ण, संग्रहणी, अम्लपत्ति इत्यादि रोगों में लाभ होता है।

8. शिशु के पेट में यदि दर्द हो और सफर में हो तो बारीक स्वच्छ कपड़े के अन्दर अजवायन को रख, शिशु की माँ यदि उसके मुंह में चटायें तो शिशु का उदर शूल तुरन्त मिट जाता है।

दस्त : जब मूत्र बन्द होकर पतले–पतले दस्त हों, तब अजवायन 3 ग्राम और नमक 500 मि०ग्रा० ताजे पानी के साथ फंकी लेने से तुरन्त लाभ होता है। अगर एक बार में आराम न हो तो 15–15 मिनट के अन्तर पर 2–3 बार लेवें।

शूल आनाह आदि उदर विकारों पर : अमाशय में रस के कम होने से या अधिक भोजन करने से जिनका पेट भोजन करने के बाद फूल जाता हो

1. अजवायन 10 ग्राम, छोटी हरड़ 6 ग्राम, हींग घी में भुनी और सेंधा नमक 3–3 ग्राम, इनका चूर्ण 2 ग्राम, किंचित् गरम जल के साथ दिन में तीन बार सेवन करें।
2. 1 किलोग्राम अजवायन में 1 किलोग्राम नीबू का रस तथा पांचो नमक 50–50 ग्रामं, कांच के बरतन में भरकर रख दें, व दिन में धूप में रख दिया करें, जब रस सूख जाये तब दिन में दो बार 1–4 ग्राम तक सेवन करने से उदर सम्बन्धी सब विकार दूर होते है।
3. 1 ग्राम अजवायन को इन्द्रायण के फलों में भर कर रख छोडें, जब सूख जाये तब बारीक पीस इच्छानुसार काला नमक मिलाकर रख लें, इसे गरम जल से सेवन करें।
4. अजवायन चूर्ण 3 ग्राम प्रातः–सायं गरम जल से लेवें।
5. डेढ किलोग्राम जल को आंच पर रखें, जब वह खूब उबल कर सवा किलोग्राम रह जाये तब नीचे उतार कर आधा किलोग्राम पिसी हुई अजवायन डालकर ढक्कन बंद कर दे। जब ठंडा हो जाये तो छानकर बोतल में भर कर रख लें। 50–50 ग्राम दिन में 3 बार सेवन करें।
6. वायु गैस पेट में वायु गैस बनने की अवस्था में भोजन के बाद 125 ग्राम दही के मट्ठे में 2 ग्राम अजवायन और आधा ग्राम काला नमक मिलाकर आवश्यकतानुसार सेवन करें।

अर्श : दोपहर के भोजन के बाद एक गिलास छाछ में डेढ़ ग्राम (चौथाई चम्मच) पिसी हुई अजवायन और एक ग्राम सैंधा नमक मिलाकर पीने से बवासीर के मस्से पुनः नहीं होते।

बहुमूत्र :

1. 2 ग्राम अजवायन को 2 ग्राम गुड के साथ कूट–पीस कर, 4 गोली बना लें, 3–3 घंटे के अन्तर से 1–1 गोली जल से लेवें, इससे बहुमूत्र रोग दूर होता है।

Scanned by CamScanner

2. 4 ग्राम अजवायन और 4 ग्राम गुड़ की 500–500 मिली० ग्राम तक की नौ गोली बना लें, 2–2 घन्टे बाद खिलाने से अवश्य लाभ होता है।
3. जो बच्चे बिस्तर गीला कर देते हैं उन्हें रात्रि में 500 मि०ग्रा० तक अजवायन खिलायें।

प्रमेह : अजवायन 3 ग्राम को 10 ग्राम तिल के तेल के साथ दिन में तीन बार सेवन से लाभ होता है।

वृक्क शूल : 3 ग्राम अजवायन का चूर्ण सुबह शाम गरम दूध के साथ लेने से गुर्दे के दर्द में आशातीत लाभ होता है।

त्वग्रोगव्रण :

1. चर्म रोग और व्रणों पर इसका गाढ़ा लेप करने से दाद, खुजली, कृमियुक्त व्रण एवं जले हुये स्थान में लाभ होता है।
2. अजवायन को उबलते हुये जल में डालकर व्रणों को धोने से दाद, फुन्सी, गीली खुजली आदि चर्म रोगों में लाभ होता है।

मासिक धर्म की रूकावट :

1. अजवायन 10 ग्राम और पुराना गुड 50 ग्राम को 200 ग्राम जल में पकाकर प्रातः–सायं सेवन करने से गर्भाशय का मल साफ होता है। और रूका हुआ मासिक धर्म फिर से जारी हो जाता है।
2. 3 ग्राम अजवायन चूर्ण को प्रातः–सायं गर्म दूध के साथ सेवन करने से मासिक धर्म की रूकावट दूर होकर, रजस्त्राव खुलकर होता है।

पुरुषत्व प्राप्ति के लिये : 3 ग्राम अजवायन को सफेद प्याज के रस 10 मिलीलीटर में 3 बार 10–10 ग्राम शक्कर मिलाकर सेवन करें। 21 दिन में पूर्ण लाभ होता है। इस प्रयोग से नपुंसकता, शीघ्रपतन व शुक्राणु अल्पता के रोग में भी लाभ होता है।

सुजाक : अजवायन के तेल की 3 बूंदें 5 ग्राम शक्कर में मिलाकर प्रातः–सायं सेवन करते रहने से तथा नियमपूर्वक रहने से सुजाक में लाभ होता है।

शराब की आदत :

1. शराबियों को जब शराब पीने की इच्छा हो तथा रहा ना जाये तब वो अजवायन 10–10 ग्राम की मात्रा में 2–3 बार चबायें।
2. आधा किलो अजवायन 4 किलो पानी में पकाकर जब आधा से भी कम शेष रहे तब छानकर शीशी में भरकर फ्रिज में रखें, भोजन से पहले 1 कप काढे को शराबी को पिलायें, जो शराब छोड़ना चाहते हैं और छोड़ नहीं पाते, उनके लिए यह प्रयोग एक वरदान समान है। हमने हजारों शराबियों को इस प्रयोग से शराब मुक्त किया है।

मूत्रकृच्छ्र :

1. 3 से 6 ग्राम अजवायन की फक्की उष्ण जल के साथ लेने से मूत्र की रूकावट मिटती है।
2. 10 ग्राम अजवायन को पीसकर लेप बनाकर पेडू पर लगाने से अफारा मिटता है, शोथ कम होता है तथा खुलकर पेशाब होता है।

ज्वर :

1. अजीर्ण की वजह से उत्पन्न हुये ज्वर में 10 ग्राम अजवायन, रात्रि को 125 ग्राम जल में भिगो दें, प्रातः काल मसल छानकर पिलाने से ज्वर आना बन्द हो जाता है।
2. शीतज्वर में 2 ग्राम अजवायन सुबह–शाम खिलायें।
3. ज्वर की दशा में यदि पसीना अधिक निकले तब 100 से 200 ग्राम अजवायन को भूनकर और महीन पीसकर सर्व शरीर पर लगायें।

इन्फल्युएंजा : 10 ग्राम अजवायन को 200 ग्राम गुनेगुने पानी में पकाकर या फांट तैयार कर प्रत्येक 2.5 घंटें के बाद 25–25 ग्राम पिलाने से रोगी की बैचेनी शीघ्र दूर हो जाती है। 24 घंटे में ही तबियत अच्छी हो जाती है।

शूल आघातज शोथ : किसी भी प्रकार की चोट पर 50 ग्राम गर्म अजवायन को दोहरे कपड़े की पोटली में डालकर सेंक करने से

Scanned by CamScanner

(1 घंटे तक) आराम आ जाता है। जरूरत हो तो जख्म पर कपड़ा डाल दें ताकि जले नहीं। किसी भी प्रकार की चोट पर अजवायन का सेंक रामबाण सिद्ध हुआ है।

मलेरिया ज्वर : मलेरिया ज्वर के बाद हल्का–हल्का बुखार रहने लगता है, इसके लिये 10 ग्राम अजवायन को रात में 100 ग्राम जल में भिगों दे और प्रातः पानी गुनगुना कर जरा सा नमक डालकर कुछ दिन सेवन करें।

बच्चों के पैरो पर कांटा चुभने पर : कांटा चुभने के स्थान पर पिघले हुये गुड़ में पिसी हुई अजवायन 10 ग्राम मिलाकर थोड़ा गरम कर बांध देने से कांटा अपने आप निकल जायेगा।

पित्ती उछलना : 50 ग्राम अजवायन को 50 ग्राम गुड के साथ अच्छी प्रकार कूटकर 6–6 ग्राम की गोली बना लें। 1–1 गोली प्रातः–सायं ताज़े पानी के साथ लेने से एक सप्ताह में ही तमाम शरीर पर फैली हुई पित्तीं दूर हो जायेगी।

विशेष :

1. अजवायन ताजी ही लेनी चाहिये क्योंकि पुरानी हो जाने पर इसका तैलीय अंश नष्ट हो जाने से यह वीर्यहीन हो जाती है। क्वाथ के स्थान पर अर्क या फाटं का प्रयोग बेहतर है।
2. अजवायन का अधिक सेवन सिर में दर्द उत्पन्न करता है।

1. यवानी पाचनी रूच्या तीक्ष्णोष्णा कटुका लघुः।
दीपनी च तथा तिक्ता पित्तलाशुक्रशूलहृत्।।
वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मप्लीहकृमिप्रणुत्। (भाव प्रकाश)

2. यवानी लवणोंपेतां भक्षयेत् कल्क तुस्थितः।
अजीर्णमामवात क्रिमिजांश्च जयेद् गदान्।।
(भैषज्यरत्नावली)

3. दीप्यकं सैन्धवं पथ्या नागरञ्च चतुःसमम्।
चूर्णं शूलं अपत्याशु मन्दस्याग्नेश्च दीपनम्।।
(भैषज्यरत्नावली)

4. यवानी चोग्रगन्धा च तथा कुडुक नथम्।
पाचनं शलौवियक गुल्मेंपीतं चोयन निरासु।।
(भैषज्यरत्नावली)

Scanned by CamScanner

8 खुरासानी अजवायन

वैज्ञानिक नाम	:	*Hyoscyamus niger* L.
कुलनाम	:	Solanaceae
अंग्रेजी नाम	:	Henbane
संस्कृत	:	पारसीक यवानी, मदकारिणी, तुरूष्का, यावनी
हिन्दी	:	खुरासानी अजवायन
गुजराती	:	खुरासानी अजमा
मराठी	:	खुरासानी ओवा
बंगाली	:	खोरासानी
तेलगु	:	कुरासानी वमम
द्राविड़ी	:	कुरीशानी वानम
अरबी	:	तेरालबंज, बजुलबज्ज
फारसी	:	तुख्मवंग
पंजाबी	:	खुरासानी अजवैन
तमिल	:	कुरासानी योमम

परिचय

खुरासानी अजवायन भारतवर्ष में कश्मीर से गढ़वाल तक 8,000 से 10,000 फुट की ऊंचाई तक पाई जाती हैं। सहारनपुर, कोलकाता, आगरा, अजमेर, पूना इत्यादि के सरकारी उद्यानों एवं खेतों मे यह बोयी जाती है।

बाह्य–स्वरूप

खुरासानी अजवायन का पौधा अजवायन के पौधे से कुछ बड़ा, एक वर्षायु या द्विवर्षायु होता है। इसकी मूल तंतुयुक्त तथा तना गोल, सीधा और पुष्ट होता है। पत्र लम्बे–चौड़े, भिन्न–भिन्न प्रमाण के, किनारे कटे हुए या कंगूरेदार, हरे रंग के रोमशः होते हैं। शाखाओं पर भी रोम होते हैं। पुष्प गुच्छों में पीताभ हरे रंगे के बैंगनी रंग की रेखाओं से युक्त फल छोटे–छोटे 1/2 इंच व्यास के द्विकोषीय, प्रत्येक कोष में लाल मिर्च जैसे चपटे वृक्काकार अजवायन से दुगने श्यामवर्ण के बीज होते हैं।

रासायनिक संघटन

इसके बीजों में 25 से 30 प्रतिशत तक स्थिर तैल, पत्रों एवं पुष्पों में हायोसायमिन तथा हायोसन नामक क्षाराभ के साथ ऐट्रोपिन तथा स्कोपिन भी अल्प मात्रा में पाये जाते हैं। ऐट्रोपिन द्विवर्षायु पौधे की जड़ में मिलता है।

गुण–धर्म

खुरासानी कफघ्न, श्वास–हर, हृदयावसादक, हृदय और कामावसादक है। शामक होने से बस्तिशोध, अश्मरी, हस्ति मेह आदि विकारों में तथा शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, रजःकृच्छता, प्रदर तथा अनियमित मासिक धर्म में यह लाभकर है। अति काम वासना को शांत करने के लिए भी इसका प्रयोग करते हैं। खुरासानी अजवायन निंद्राजनक, संकोच विकास प्रतिबंधक तथा कुछ मूत्रल होता है। थोड़ी मात्रा में यह हृदय की गति को धीमाकर उसे बल देता है। परंतु अधिक मात्रा में इसका सेवन हृदय के लिए हानिकारक है। इसकी अवसादक क्रिया मस्तिष्क, जननेन्द्रियों और आंतों पर मुख्य रूप से होती है। अफीम और धतूरे इसकी समानान्तर औषधियां है, परंतु अफीम कब्ज करती है, जबकि पारसीक यवानी इस दोष से मुक्त है। धतूरे के प्रयोग से मद और भ्रम पैदा होता है, परंतु इस बूटी से भ्रम नही होता, इसलिए पारसीक अजवायन इन दोनों से बेहतर कार्य करती है। नींद लाने ओर वेदनाशमन द्रव्यों में इसे मुख्य स्थान प्राप्त है। स्नायुतंत्र पर इसका शामक प्रभाव होने के कारण यह मन को शांत करती है, प्रगाढ़ निंद्रा आती है, धतूरे से गाढ़ी नींद नहीं आती। किसी भी कारण से मानसिक अस्वस्थता और अनिंद्रा होने पर यह औषधि तत्काल लाभ करती है। इससे मन शांत होता है, दस्त साफ होता है और सुखदायक नींद आती है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

दंत पीड़ा : खुरासानी अजवायन को समभाग राल के साथ पीसकर दांतो की गुहा में रखने से दंत पीड़ा दूर होती है।

कर्णशूल : खुरासानी अजवायन को तिल के तैल में सिद्ध करके कान में 2–2 बूंद टपकाने से कर्णशूल मिटता है।

मसूड़ों से खून आना : खुरासानी अजवायन के पत्तों के क्वाथ से कुल्ला करने से मसूड़ों से खून आना बन्द हो जाता है।

उदर शूल :

1. इसकी गुड़ में गोली बना के देने से पेट की वायु पीड़ा मिटती है। इसके 12 ग्राम चूर्ण में 250 मिलीग्राम काला नमक मिलाकर खिलाने से भी लाभ होता है।
2. इसके तेल की 2–4 बूंदें, एक ग्राम सौंठ चूर्ण में मिलाकर खाने से तथा ऊपर से गर्म सौंफ का अर्क 15–20 मिलीलीटर की मात्रा में पिलाने से उदर पीड़ा शांत हो जाती है अथवा इसके 10–20 ग्राम क्वाथ में थोड़ा गुड़ मिलाकर पिलावें।

यकृत पीड़ा : इसके तेल का लेप करने से पुरानी यकृत की पीड़ा तथा छाती के दर्द में बहुत लाभ होता है।

कृमि विकार : जिस पुरुष के पेट में कीड़े हों, वह सुबह ही 5 ग्राम गुड़ खाकर, कुछ समय बाद खुरासानी अजवायन के 1–2 ग्राम चूर्ण की फंकी बासी पानी से लें। आंतों में स्थित कीड़े बाहर निकल जाते है।[1]

मूत्र रोग : इसके बीजों का सत्व 15–20 बूंद की मात्रा में दिन में 3–4 बार देने से मूत्रेन्द्रिय सम्बन्धी पीड़ा, पथरी इत्यादि रोगों में देने से मूत्र विरेचन होकर शांति मिलती है।

गर्भाशय की पीड़ा : गर्भाशय की पीड़ा मिटाने के लिये इसकी बत्ती बनाकर योनि में रखनी चाहिये।

सन्धिवातः तिल के तैल में इसको सिद्ध कर मालिश करने से सन्धिवात, गृध्रसी, कमर दर्द इत्यादि रोगो में लाभ पहुंचता है।

आवेश रोग : इसकी 30 बूंदे एक–एक घंटे के अन्तर से 25–25 ग्राम पानी में मिलाकर देने से स्त्रियों का हिस्टीरिया रोग तथा प्रसूतिका के पागलपन में तथा वात–वेदनाओं में लाभ होता है।

1. पारसीक यवानिका पीता पर्युषित वारिणा प्रातः।
गुड़पूर्वा कृमिजालं कोष्ठगतं पातयत्याशु।। (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

अकरकरा

9

वैज्ञानिक नाम	:	*Anacyclus pyrethrum* DC.
कुलनाम	:	Asteraceae
अंग्रेजी नाम	:	Pellitory root, pyrethrum root
संस्कृत	:	आकारकरभ, अकलल्नक
हिन्दी	:	अकरकरा
गुजराती	:	अकोरकरो
मराठी	:	अक्कलकरा
बंगाली	:	आकरकरा
फारसी	:	वेश्वतर्खून, कोही
अरबी	:	आकिकिहां, अदुक लई
पंजाबी	:	अकरकरा

परिचय

अकरकरा मूल रूप से अरब का निवासी कहा जाता है, यह भारत के कुछ हिस्सों में उत्पन्न होता है। वर्षा ऋतु की प्रथम फुहारे पड़ते ही इसके छोटे–छोटे पौधे निकलना शुरू कर देते हैं। इसकी जड़ का स्वाद चरपरा और मुंह में चबाने से गर्मी महसूस होती है तथा जिह्वा जलने लगती है। गुण–धर्म में अरब से आयातित औषधि अधिक वीर्यवान होती है।

बाह्य–स्वरूप

यह झाड़ीदार, रोएंदार होता है। कांड पर ग्रन्थियां होती है। कांडत्वक धूसरवर्ण और तिक्त, मूल3–4इंच लम्बा, आधा इंच मोटा, पुष्प श्वेत बैंगनी और पीले होते हैं। इसकी शाखाएं, पत्र और पुष्प सफेद बबूने के समान होते हैं, परन्तु इसकी डंठल पोली होती है। महाराष्ट्र में इसकी डंडी का अचार और शाक बनाकर खाया जाता है।

रासायनिक संघटन

अकरकरा की जड़ का मुख्य सक्रिय तत्व पाइरेथ्रीन नामक सत्व होता है जो रंगहीन क्रिस्टल के रूप में प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त अंशतः उड़नशील तेल, स्थिर तेल, 50 प्रतिशत इन्यूलिन तत्व पाया जाता है।

गुण–धर्म

यह बलकारक, कटु तथा प्रतिश्याय और शोथ को नष्ट करता है।[1] यह लालास्रावजनक, प्रदाहकारक नाड़ी को बल देने वाला कामोद्दीपक और वेदनास्थापक है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

मस्तकपीड़ा :

1. इस की जड़ को पीसकर ललाट पर हल्का गर्म लेप करने से मस्तक की पीड़ा मिटती है।
2. इसको दांतों के बीच में रखने से प्रतिश्याय की मस्तक पीड़ा मिटती है। इसको चबाने से लार छूटकर दाड़ की पीड़ा मिट जाती है।

अपस्मार :

1. इसको सिरके में पीसकर मधु मिलाकर 5–10 मिलीलीटर की मात्रा में चाटने से अपस्मार का वेग रूकता है।
2. ब्राह्मी के साथ इसका क्वाथ करके पिलाने से मिर्गी में लाभ होता है।

मंदबुद्धि : अकरकरा और ब्राह्मी समान मात्रा में लेकर चूर्ण बनायें, इसको आधा चम्मच नियमित सेवन करने से बुद्धि तीव्र होती है।

हकलाना : इसके मूल चूर्ण को काली मिर्च व मधु के साथ एक ग्राम की मात्रा में मिलाकर जिह्वा पर मलने से जीभ का सूखापन और जड़ता दूर होकर हकलाना या तोतलापन कम होता है। 4–6 हफ्ते प्रयोग करें।

कंठ्य : अकरकरा चूर्ण की 250–500 मिलीग्राम मात्रा में फंकी लेने से बच्चों और गायकों का कंठस्वर सुरीला हो जाता है।

दंतशूल :

1. अकरकरा और कपूर दोनों बराबर लेकर पीसकर मंजन करने से सब प्रकार की दंत पीड़ा मिटती है।
2. इसकी जड़ के क्वाथ से गंडूष करने से दंत पीड़ा दूर होती है और हिलते हुए दांत जम जाते हैं।

कण्ठरोग : तालू, दांत और गले के रोगों में इसके कुल्ले करने से बहुत लाभ होता है।

मुख दुर्गन्ध : अकरकरा, माजूफल, नागरमोथा, भुनी हुई फिटकरी, काली मिर्च, सैंधानमक सबको बराबर मिलाकर बारीक पीस लें। इस मिश्रण से प्रतिदिन मंजन करने से दांत और मसूढ़ो के सब विकार दूर होकर दुर्गन्ध मिट जाती है।

हृदय रोग :

1. अर्जुन की छाल और अकरकरा चूर्ण दोनों का बराबर मिलाकर पीसकर दिन में दो बार आधा–आधा चम्मच की मात्रा में खाने से घबराहट, हृदय की धड़कन, पीड़ा, कम्पन और कमजोरी में लाभ होता है।
2. कुलञ्जन, सौंठ और अकरकरा की 20–25 मिलीग्राम मात्रा को 400 मिलीलीटर पानी में उबालकर चतुर्थांश क्वाथ पिलाने से हृदय रोग मिटता है।

हिचकी : हिचकी आने पर एक ग्राम अकरकरा का चूर्ण शहद के साथ चटायें। हिचकी पर यह चमत्कारिक असर दिखाता है।

ज्वर :

1. इसकी जड़ के चूर्ण को जैतून के तैल में पकाकर मालिश करने से पसीना आकर ज्वर उतर जाता है।
2. चिरायते के 4–6 बूंद अर्क के साथ इसकी 500 मिलीग्राम की

Scanned by CamScanner

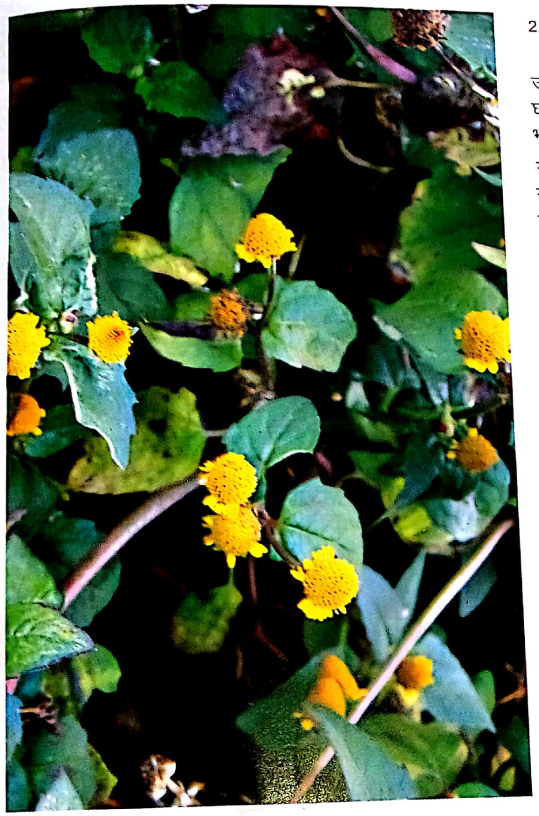

फंकी देने से निरंतर रहने वाला ज्वर छूमंतर हो जाता है।

श्वास : इसके कपड़छन चूर्ण को सूंघने से श्वास अवरोध दूर होता है।

खांसी :

1. इसका 100 मि०ली० क्वाथ बनाकर सुबह–शाम पीने से पुरानी खांसी मिटती है।
2. इसके चूर्ण का 3–4 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से यह बलपूर्वक दस्त के रास्ते कफ को बाहर निकाल देती है।

उदर रोग : उदर रोगों में अकरकरा की जड़ का चूर्ण और छोटी पिप्पली का चूर्ण सम भाग लेकर, आधा चम्मच सुबह शाम भोजनोपरांत खाने से लाभ होता है।

मंदाग्नि (अफारा) : शुंठी चूर्ण और अकरकरा दोनों की 1–1 ग्राम मात्रा को मिलाकर फंकी लेने से मंदाग्नि और अफारा दूर होता है।

मासिक धर्म : अकरकरा मूल का 100 मि०ली० क्वाथ सुबह–शाम पीने से मासिक धर्म ठीक होने लगता है।

शून्यता : इसके 1 ग्राम चूर्ण को 2–3 नग लौंग के साथ सेवन करने से शरीर की शून्यता और इसकी मूल का 100 मि० ली० क्वाथ पीने से आलस्य मिटता है।

पक्षाघात :

1. अकरकरा मूल को बरीक पीसकर महुए के तेल में मिलाकर मालिश करने से पक्षाघात में लाभ होता है।
2. अकरकरा मूल का चूर्ण 500 मिलीग्राम की मात्रा में मधु के साथ प्रातः–सायं चाटने से पक्षाघात में लाभ होता है।

गृध्रसी : इसके मूल चूर्ण को अखरोट के तैल में मिलाकर मालिश करने से गृध्रसी मिटती है।

अर्दित :

1. उशवे के साथ इसका 100 मिलीलीटर क्वाथ करके पिलाने से अर्दित मिटता है।
2. अकरकरा चूर्ण और राई के चूर्ण को मधु में मिलाकर जिह्वा पर लेप करने से अर्धांगवात मिटती है।

इन्द्री : 10 ग्राम अकरकरे को 50 ग्राम काढ़े के रस में पीसकर लेप करने से इन्द्री मोटी हो जाती है।

बाजीकरण : अश्वगंधा, सफेद मूसली, अकरकरा सभी को समान भाग लेकर महीन पीसें। नित्य प्रातः व सायंकाल एक–एक चम्मच एक कप दूध के साथ लेने से इसका प्रभाव बाजीकारक होता है।

विशेष : इसको प्रमाणित मात्रा में ही लेना चाहिए। मुनक्का और कतीरा गोंद इसके दर्पनाशक हैं।

1. अकल्लककोष्णो वीर्येण बलकृत् कटुको मतः।
   प्रतिश्यायं च शोथं च वातं चैव विनाशयेत्।। (शालि० नि०)

Scanned by CamScanner

10 आकाश बल्ली

वैज्ञानिक नाम	:	*Cuscuta reflexa* Roxb.
कुलनाम	:	Cuscutaceae
संस्कृत	:	आकाश बल्ली
हिन्दी	:	अमरबेल, आकाश बेल
गुजराती	:	अकास बेल
मराठी	:	निर्मुली
बंगाली	:	स्वर्णलता, आलोकलता
तैलगु	:	नुलु तेगा
अरबी	:	कसूसेहिन्द
फारसी	:	अफ्तीमून

परिचय

अमर बेल एक परोपजीवी और पराश्रयी लता है, जो रज्जु की भांति, बेर, शाल, करौदें, आदि वृक्षों पर फैली रहती है। इसमें से महीन सूत्र निकलकर वृक्ष की डालियों का रस चूसते रहते है जिससे यह तो फलती–फूलती जाती है, परन्तु इसका आश्रयदाता धीरे–धीरे सूखकर समाप्त हो जाता है। इसकी दो और जातिया पाई जाती है।

बाह्य–स्वरूप

आकाश बेल कोमल, पीले, किंचित हरे रंग की तथा पत्र–रहित होती है। पुष्प मंजरी मृदु रोमश ½से 1½इंच लम्बी, शल्क पत्रों के अक्ष से निकलती हैं, पुष्प अवृन्त श्वेत, फल छोटे, मूंग या उड़द के आकार के होते है। फूलों में मृदु व भीनीभीनी खुश्बू आती है।

Scanned by CamScanner

गुण–धर्म

संग्राही, कटु, तिक्त, कषाय, पिच्छिल, वीर्यवर्धक, अग्निदीपक, नेत्र रोग नाशक, हृदय को हितकारी, बलकारक तथा पित्तकफ और आमवात नाशक है।'

औषधीय प्रयोग

केशरोग व इंद्रलुप्त :

1. बेल को तिल के तैल में पीसकर सिर में लगाने से सिर की गंज में लाभ होता है तथा बालों की जड़े मजबूत होती है।
2. लगभग 50 ग्राम अमरबेल को कूटकर 1 किलो पानी में पकाकर बालों को धोने से बाल सुनहरे व चमकदार बनते हैं, बालों का झड़ना रूसी में भी इससे लाभ होता है, बहुत अच्छा प्रयोग है।

नेत्रशोथ : बेल के 10–20 मिलीग्राम रस में शक्कर मिला आंखों पर लेप करने से नेत्राभिष्यन्द नेत्रशोथ में लाभ होता है।

मस्तिष्क विकार : इसके 10–20 ग्राम स्वरस को प्रातः जल के साथ सेवन करने से मस्तिष्क के विकार दूर होते है।

उदर विकार :

1. अमरबेल को उबालकर पेट पर बांधने से डकारे आदि दूर हो जाती है।
2. आकाश बेल का स्वरस ½ किलोग्राम, यदि सूखी हो तो चूर्ण 1 ग्राम व मिश्री 1 किलोग्राम दोनों को मिलाकर मंद अग्नि पर शर्बत तैयार कर लें। प्रातः–सायं करीब 2 ग्राम की मात्रा में उतना ही जल मिलाकर सेवन करने से शीघ्र ही वातगुल्म और उदरशूल का नाश होता है।

यकृत :

1. बेल का काढ़ा 40–60 ग्राम पिलाने से तथा पीसकर उदर पर लेप करने से यकृत वृद्धि में लाभ होता है।
2. बेल का हिम या स्वरस 5–10 मिलीग्राम सेवन करने से ज्वर तथा यकृत वृद्धि के कारण हुई कब्ज मिटती है।

सूतिका रोग : अमर बेल का क्वाथ 40–60 मिलीग्राम पिलाने से प्रसूता की आंवल जल्दी निकल जाती है।

अर्श : अमरबेल के 10 ग्राम स्वरस में 5 ग्राम काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर खूब घोंटकर नित्य सुबह ही पिला दें। तीन दिन में ही खूनी और बादी दोनों प्रकार की बवासीर में विशेष लाभ होता है। दस्त साफ होता है, तथा अन्य अंगों की सूजन भी उतर जाती है।

उपदंश : अमरबेल का स्वरस उपदंश के लिये अति गुणकारी है।

गठिया वात :

1. अमर बेल का बफारा देने से गठिया वात की पीड़ा अथवा

अमरबेल की एक प्रजाति जो दक्षिण अफ्रीका में पाई जाती है

Scanned by CamScanner

सूजन शीघ्र ही दूर हो जाती है। वफारा देने के पश्चात इसी पानी से स्नान कर लें तथा मोटे कपड़े से शरीर को खूब पौछ लें, तथा घी का अधिक सेवन करें।

2. अमर बेल का बफारा देने से अंडकोष की सूजन उतरती है।

बलवर्धन : 11.5 ग्राम ताजी अमर बेल को कुचलकर स्वच्छ महीन कपड़े में पोटली बांधकर, ½ किलोग्राम गाय के दूध में डालकर या लटकाकर धीमी आँच पर पकाये। जब एक चौथाई दूध जल जाये तब ठंडा कर मिश्री मिलाकर सेवन करने से निर्बलता दूर होती है। विशेष ब्रह्मचर्य से रहना आवश्यक है।

खुजली : अमरबेल को पीसकर लेप करने से खुजली मिटती है।

रक्तशुद्धि : 4 ग्राम ताजी बेल का गरम पानी से फांट बनाकर पीने से पित्त शमन और रक्त शुद्ध होता है।

शिशु रोग :

1. बेल को शुभमुहूर्त में लाकर सूती धागों में बांधकर बच्चों के कंठ व भुजा मे बांधने से कई बाल रोग दूर होते हैं।
2. तीसरे या चौथे दिन आने वाले ज्वर में भी इस बेल को कंठ में ज्वर से पहले बांधने से ज्वर नहीं चढ़ता है।

व्रण : अमर बेल के 2–4 ग्राम चूर्ण को या ताजी बेल को पीस कर सौंठ और घी मिलाकर लेप करने से पुराना व्रण भर जाता है।

1. खवल्ली ग्राहिणी तिक्ता पिच्छिलाक्ष्यामयापहा।।
तुवराग्निकरी हृद्या पित्तश्लेष्मानाशिनी।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

अखरोट

11

वैज्ञानिक नाम	:	*Juglans regia* L.
कुलनाम	:	Juglandaceae
अंग्रेजी नाम	:	Walnut, Walnut tree
संस्कृत	:	अक्षोट, अक्षोड
हिन्दी	:	अखरोट
गुजराती	:	अखरोड, अखोड़
मराठी	:	अखरोड, अक्रोड़
बंगाली	:	आखरोट, आक्रोट, आकोट
तैलगु	:	अक्षोलमु
फारसी	:	गौज, चारमग्न, गिर्दगां
अरबी	:	जौज

परिचय

अखरोट के पतझड़ करने वाले बहुत सुन्दर और सुगन्धित वृक्ष होते हैं, इसकी दो जातियां पाई जाती है।

1. जंगली अखरोट 100 से 200 फीट तक ऊँचे, अपने आप उगने वाले तथा फल का छिलका मोटा होता है।
2. कृषिजन्य 40 से 90 फुट तक ऊँचा होता है और इसके फलों का छिलका पतला होता है। इसे कागजी अखरोट कहते हैं। इससे बन्दूकों के कुन्दे बनाये जाते हैं।

बाह्य–स्वरूप

अखरोट की नई शाखाओं का पृष्ठ मखमली, कांडत्वक धूसर तथा उसमें अनुलम्ब दिशा में दरारें होती हैं। पत्तियां पक्षवत सघन, मूल रोमश, पत्रक संख्या में 5 से 13 तथा 3 से 8 इंच लम्बे, 2 से 4 इंच चौड़े, अण्डाकार, आयताकार और सरल धार वाले पुष्प एकलिंगी हरिताभ, फल गोलाकार हरितवर्णी, दो पीले बिन्दुओं से युक्त, फल त्वचा चर्मित एवं सुगन्धित, गुठली 1 से डेढ इंच लम्बी, द्विकोष्ठीय रूपरेखा में मस्तिष्क जैसी पृष्ठ तल पर दो खण्डों में विभक्त तथा गिरी में काफी तेल पाया जाता है। बसन्त में पुष्प तथा शरद ऋतु में फल आते हैं।

रासायनिक संघटन

अखरोट में 40 से 45 प्रतिशत तक एक स्थिर तैल पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें जुगलैडिक एसिड तथा रेजिन आदि भी पाये जाते हैं। इसके फलों में आक्जैलिक एसिड पाया जाता है।

गुण–धर्म

यह वात शामक, कफ पित्त वर्धक, मेध्य, दीपन, स्नेहन, अनुलोमन, कफ निःसारक, बल्य, वृष्य एवं बृंहण होता है। इसका लेप वर्ण्य, कुष्ठघ्न, शोथहर एवं वेदना स्थापन होता है। गिरी और इसके प्राप्त तैल को छोड़कर अखरोट के शेष सब अंग संग्राही होते हैं।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

मस्तिक दुबर्लता : अखरोट की गिरी को 25 से 50 ग्राम तक की मात्रा में नित्य खाने से मस्तिष्क शीघ्र ही सबल हो जाता है।

अर्दित : अर्दित में अखरोट के तेल की मालिश कर वात हर औषधियों के क्वाथ से बफारा देने से लाभ होता है।

अपस्मार : अखरोट गिरी को निर्गुण्डी के रस में पीसकर अंजन और नस्य देने से लाभ होता है।

नेत्र ज्योति : दो अखरोट और तीन हरड़ की गुठली को जलाकर उनकी भस्म के साथ 4 नग काली मिर्च को पीसकर अंजन करने से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है।

कंठमाला : इसके पत्तों का क्वाथ 40 से 60 ग्राम पीने से व उसी क्वाथ से गांठों को धोने से कंठमाला मिटती है।

दन्त प्रयोग :

1. इसकी छाल को मुँह में रखकर चबाने से दांत स्वच्छ होते हैं।
2. अखरोट के छिलकों की भस्म से मंजन करने से दाँत मजबूत होते हैं।

स्तन्यजनन : स्तन में दूध की वृद्धि के लिये गेहूँ की सूजी 1 ग्राम अखरोट के पत्ते 10 ग्राम पीसकर दोनों को मिलाकर गाय के घी में पूरी बनाकर सात दिन तक खाने से स्तन्य (स्त्री दुग्ध) की वृद्धि होती है।

कास :

1. अखरोट गिरी को भूनकर चबाने से लाभ होता है।

2. छिलके सहित अखरोट की भस्म कर एक ग्राम भस्म व ग्राम मधु के साथ चटाने से लाभ होता है।

हैजा : हैजे में जब शरीर में बाइटे चलने लगते हैं या सर्दी में शरीर ऐंठता हो तो अखरोट तेल की मालिश करनी चाहिये।

विरेचन : अखरोट के तेल को 20 से 40 ग्राम की मात्रा में 250 ग्राम दूध के साथ प्रातः काल देने से कोष्ठ मुलायम होकर साधारणतः अच्छा दस्त हो जाता है।

आंत्र कृमि :

1. अखरोट की छाल का क्वाथ 60 से 80 ग्राम पिलाने से आंतो के कीड़े मर जाते हैं।
2. इसके पत्तों का क्वाथ 40 से 60 ग्राम की मात्रा में पिलाने से भी आंतो के कीड़े मर जाते हैं।

अर्श :

1. वात जन्य अर्श में इसके तैल पिचु को गुदा में लगाने से सूजन कम होकर पीड़ा मिट जाती है।
2. इसके छिलके की भस्म 2 से 3 ग्राम को किसी विष्टम्भी औषधि के साथ सुबह, दोपहर तथा शाम खिलाने से रक्तार्शजन्य रूधिर बंद हो जाता है।

आर्त्तव जनन :

1. मासिक धर्म की रूकावट में फल के छिलके का क्वाथ 40 से 60 ग्राम की मात्रा में लेकर 2 चम्मच शहद मिलाकर दिन में 3–4 बार पिलाने से लाभ होता है।
2. फल के 10 से 20 ग्राम छिलकों को 1 किलो पानी में पकाकर अष्टमांश शेष काढ़ा सुबह–शाम पिलाने से भी दस्त साफ हो जाता है।

प्रमेह : अखरोट गिरी 50 ग्राम, छुआरे 40 ग्राम और विनौले की मींगी 10 ग्राम एक साथ कूटकर थोड़े से घी में भूनकर बराबर की मिश्री मिलाकर रखें, इसमें से 25 ग्राम नित्य प्रातः सेवन करने से प्रमेह में लाभ होता है। इस पर दूध न पीयें।

वीर्यस्राव : फलों के छिलके की भस्म बना लें, और इसमें बराबर की मात्रा में खांड मिलाकर 10 ग्राम तक की मात्रा में जल के साथ 10 दिन प्रातः सायं तक सेवन करने से धातुस्राव या वीर्यस्राव बन्द होता है।

वात रोग : अखरोट की 10 से 20 ग्राम ताजी गिरी को पीसकर वेदना स्थान पर लेप करें, ईंट को गर्म कर उस पर जल छिड़क कर कपड़ा लपेट कर उस स्थान पर सेंक देने से शीघ्र पीड़ा मिट जाती है। गठिया पर इसकी गिरी को नियमपूर्वक सेवन करने से रक्त शुद्धि होकर लाभ होता है।

शोथ :

1. अखरोट का 10 से 40 ग्राम तैल 250 ग्राम गौमूत्र में

Scanned by CamScanner

मिलाकर पिलाने से सर्वांग शोथ में लाभ होता है।

2. वात-जन्य शोथ में इसकी 10 से 20 ग्राम गिरी को कांजी में पीसकर लेप करने से लाभ होता है।

वृद्ध पुरूषों के बलवर्धनार्थ : 10 ग्राम गिरी को 10 ग्राम मुनक्का के साथ नित्य प्रातः खिलाना चाहिये।

दाद : प्रातः काल बिना मंजन कुल्ला किये अखरोट की 5 से 10 ग्राम गिरी को मुँह में चबाकर लेप करने से कुछ ही दिनों में दाद मिट जाती है।

नासूर : इसकी 10 ग्राम गिरी को महीन पीसकर मोम या मीठे तैल के साथ गलाकर लेप करें।

व्रण : इसकी छाल के क्वाथ से व्रणों को धोने से लाभ होता है।

नारू :

1. अखरोट की खल को जल के साथ महीन पीसकर आग पर गर्म कर नहरूबा की सूजन पर लेप करने से तथा उस पर पट्टी बांध कर खूब सेंक देने से नारू 10–15 दिन में गल के बह निकलता है।
2. अखरोट की छाल को पानी में पीसकर गर्म कर नारू के घाव पर लगावें

अहिफेन विष : अखरोट की गिरी 20 से 30 ग्राम तक खाने से अफीम का विष और भिलावे के उपद्रव शांत हो जाते हैं।

Scanned by CamScanner

अलसी जवसु

12

वैज्ञानिक नाम	:	*Linum usitatissium* L.
कुलनाम	:	Linaceae
अंग्रेजी नाम	:	Linseed, Flax seed
संस्कृत	:	अलसी, नील पुष्पी, क्षुमा, उमा, पिच्छला, अतसी
हिन्दी	:	अलसी, तीसी
गुजराती	:	अलसी
मराठी	:	जवसु
बंगाली	:	मर्शिना
तैलगु	:	बित्तु, अलसि, अतसी
अरबी	:	कत्तान
फारसी	:	तुख्मे कत्तान, जागिरा

परिचय

समस्त भारतवर्ष में अलसी की खेती जाड़े की फसल के साथ की जाती है। हिमाचल प्रदेश में भी 6,000 फुट की ऊंचाई तक तीसी बोई जाती है। देश एवं उत्पत्ति स्थान भेद से तीसी के बीजों के रंग रूप और आकार में भेद पाया जाता है। श्वेत, पीत, रक्त एवं किंचित कृष्णाभ, तीसी के कई प्रकार के बीज प्राप्त होते हैं। उष्ण प्रदेशों में उत्पन्न तीसी श्रेष्ठ मानी जाती है। इसके बीजों से तेल और डंठलों से फाइबर निकाला जाता है, जो कपड़ा बुनने के काम आता है।

बाह्य–स्वरूप

इसका क्षुप, 2–4 फुट ऊंचा, सीधा व कोमल होता है। पत्र रेखाकार, भालाकार, पत्राग्र नुकीला व फलक तीन शिराओं से युक्त होता है। फूल सुन्दर आसमानी रंग के, फल गोल, घुंडीदार, पंचकोष्ठीय, प्रत्येक कोष्ठ में चमकीले चपटे गाढ़े भूरे रंग के 2 बीज होते हैं। शीतकाल में पुष्प और फल लगते है। फरवरी–मार्च में फल सूख जाते हैं।

रासायनिक संघटन

तीसी के बीजों में एक स्थिर तेल पाया जाता है। तेल में प्रधानतः लिनोलिक तथा लिरोलेनिक एसिड्स के ग्लिसराइड्स तथा घन वसाम्ल होते हैं। बीजों में एक विषाक्त ग्लुकोसाइड पाया जाता है। जिसके कारण इसे खाने वाले पशुओं की मृत्यु हो जाती है। इसके अतिरिक्त इसके बीजों में प्रोटीन, म्यूसिलेज, कुछ मोमीय पदार्थ, रालीय पदार्थ, फास्फेट्स एवं शर्करा अंश पाये जाते हैं। इसकी राख में सोडियम, पोटैशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, लौह, फास्फोरस, गंधक आदि तत्व पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

बीज मधुर, मंद गंध युक्त, स्निग्ध, उष्ण, चरपरी, गुरू, बलकारक, कामोद्दीपक, अल्प मात्रा में मूत्रकारक, शोथहर, अधिक मात्रा में रेचक, वातनाशक तथा वातरक्त, कुष्ठ, व्रण, पृष्ठशूल, शुक्र, कफ, पित्त है।[1]

अलसी तेल : मधुर, पिच्छिल, वातनाशक, मदगंधि, कुछ कसैला, बलकारक, भारी, गरम, मलकारक, स्निग्ध, ग्राही, कफ कासनाशक तथा त्वक् दोष हर हैं।[2]

अलसी पत्र : कास श्वास, कफ वातनाशक, इसके ताजे हरे पत्तों की शाक या तरकारी वातग्रस्त रोगियों के लिए विशेष लाभदायक है।

अलसी पुष्प : रक्त पित्तनाशक है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

शिरोवेदना : बीजों को शीतल जल में पीसकर लेप करने से, शोथ जन्य शिरोवेदना, मस्तक पीड़ा तथा शिरोव्रण में लाभ होता है।

निद्रा नाश : अलसी तथा अरंड का शुद्ध तैल, समभाग मिलाकर कांसे की थाली में कांस्य पात्र से ही खूब घोंटकर आंख में सुरमे की तरह लगाने से नींद अच्छी आती है।

नेत्राभिष्यंद : अलसी बीजों का लुआब नेत्र में टपकाने से नेत्राभिष्यंद या नेत्र की लालिमा में लाभ होता है।

कर्णशोथ : अलसी को प्याज के रस में पकाकर उसे कान में टपकाने से कान की सूजन मिटती है।

श्वास कास

1. 5 ग्राम अलसी के बीज, 50 ग्राम पानी में भिगोकर रखें, और 12 घंटे बाद जल पी लें। प्रातःकाल भिगोया हुआ सायंकाल और शाम को भिगोया हुआ सुबह को पी लें। इस जल के सेवन से श्वास–ग्रस्त रोगी को बहुत शक्ति मिलती है। परन्तु पथ्य परहेज का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।
2. 5 ग्राम अलसी बीजों को कूट–छानकर जल में उबालें। इसमें 20 ग्राम मिश्री मिलाकर, यदि शीतकाल हो तो मिश्री के स्थान पर शहद मिलायें। इस पेय के प्रातः–सांय सेवन करने से भी कास श्वास में लाभ होता है।
3. 3 ग्राम अलसी बीजों को मोटा कूटकर 250 ग्राम उबलते हुए जल में भिगो दें और एक घंटा ढक कर रख दें। तत्पश्चात छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर सेवन करने से भी शुष्क कास ढीला होकर श्वास रोग की घबराहट दूर होती है। मूत्र साफ होता है।
4. 25 ग्राम अलसी के बीजों को पीसकर रातभर ठंडे जल में भिगोकर रखें, प्रातःकाल छानकर इस जल को कुछ गरम कर इसमें नींबू का रस मिलाकर पिलाने से टी.बी. के रोगी को बहुत लाभ होता है।
5. अलसी के बीजों को भूनकर शहद के साथ चाटने से खांसी मिटती है।
6. अलसी को साफ कर मंद आंच से तवे पर भून लें। जब अच्छी तरह भुन जाये, गंध आने लगे तब महीन समभाग मिश्री मिला लें। जुकाम में 5–5 ग्राम तक उष्ण जल के साथ दोनों समय देने से आराम होता है। कास का भी दमन होता है।

वातकफ जन्य विकार : तवे पर भली–भांति भुनी हुई 50 ग्राम अलसी का चूर्ण बनाकर, उसमें 50 ग्राम मिश्री, 10 ग्राम सिंघ चूर्ण मिलाकर मधु के साथ घोंटकर 3–6 ग्राम तक की गोलियां बना लें। बच्चों को 3 ग्राम की तथा बड़ों को 6 ग्राम की गोलियां प्रातःकाल सेवन कराने से वात कफजन्य विकारों में लाभ होता है। एक घंटे तक जल न पीयें।

प्लीहा–वृद्धि : भुनी हुई अलसी ढाई ग्राम की मात्रा में शहद के साथ लेने से प्लीहा शोथ में लाभ होता है।

रेचन : तीसी को गरम किये बिना, निकाला हुआ तेल 4–8 ग्राम की मात्रा में पिलाने से दस्त साफ होता है। मल की गांठें निकल जाती हैं। आंतों की कमजोरी से उत्पन्न कब्ज और अर्श में तेल बहुत लाभ करता है।

Scanned by CamScanner

सुजाक मूत्र विकार :

1. अलसी 50 ग्राम, मुलेठी 3 ग्राम, दोनों को दरदरा कूटकर डेढ़ पाव जल के साथ मिट्टी के बर्तन में हल्की आंच में पकायें। जब 50 ग्राम जल शेष रह जाये तो छानकर 2 ग्राम कलमी शोरा मिलाकर 2 घंटे के अंतर से 20–20 ग्राम पिलाने से मूत्रकृच्छ में बहुत आराम मिलता है। अधिक मात्रा में बनाकर 10–15 दिन तक ले सकते हैं।
2. इसके तेल की 4–6 बूंदे मूत्रेन्द्रिय के छिद्र में डालने से सुजाक पूय मेह में लाभ होता है।
3. अलसी और मुलेठी समभाग लेकर कूट लें। मिश्रण का 40–50 ग्राम चूर्ण मिट्टी के बरतन में डालकर उसमें 1 किलोग्राम उबलता जल डालकर ढक लें। एक घंटे बाद छानकर इसमें 25 से 30 ग्राम तक कलमी शोरा मिलाकर बोतल में रख लें। तीन घंटे के अंतर से 25 से 30 मिलीलीटर तक इस जल का सेवन करने से 24 घंटे में ही पेशाब की जलन, पेशाब का रूक–रूक कर आना, पेशाब में खून आना, मवाद आदि बहना, सुरसुराहट होना आदि शिकायतें दूर हो जाती हैं।
4. अलसी के 10 ग्राम और मुलेठी 6 ग्राम, दोनों को खूब कुचल कर एक सेर जल मिलायें, अष्टांश क्वाथ सिद्ध करे। तीन घंटे के अंतर से लगभग 25 ग्राम क्वाथ में 10 ग्राम मिश्री मिलाकर सेवन करने से जलन तत्काल दूर होकर मूत्र साफ होने लगता है।

पुल्टिसः अलसी की पुल्टिस सब पुल्टिसों में उत्तम है। 4 भाग कुटी हुई अलसी, 10 भाग उबलते हुए पानी में डालकर धीरे–धीरे मिलायें। यह पुल्टिस बहुत मोटी नहीं होनी चाहिए। लगाते समय इसके निम्न भाग पर तेल चुपड़ कर लगाना चाहिए। इसके प्रयोग से सूजन व पीड़ा दूर होती है।

संधिशूल : अलसी बीजों को ईसब गोल के साथ पीसकर लगाने से संधि शूल में लाभ होता है।

कटि शूल : अलसी तेल को गरम कर इसमें शुंठी चूर्ण मिलाकर मालिश करने से कमर दर्द दूर होता है।

गठिया : अलसी के तेल की पुल्टिस गठिया की सूजन पर लगाने से लाभ होता है।

वीर्य पुष्ट : काली मिर्च और शहद के साथ तीसी का सेवन कामोद्दीपक तथा वीर्य को गाढ़ा करने वाला होता है।

फोड़ा :

1. अलसी को जल में पीसकर उसमें थोड़ा जौ का सत्तू मिलाकर खट्टी दही के साथ फोड़े पर लेप करने से फोड़ा पक जाता है।
2. वात प्रधान फोड़े में अगर जलन और वेदना हो तो तिल और अलसी को भूनकर गाय के दूध में उबालकर, ठंडा होने पर उसी दूध में उन्हें पीसकर फोड़े पर लेप करने से लाभ होता है।

अग्निदग्ध : शुद्ध अलसी तेल और चूने का निथरा हुआ जल समभाग एकत्र कर अच्छी प्रकार घोट लें। यह श्वेत मलहम जैसा हो जाता है। अंग्रेजी में इसे Carron oil कहते हैं। इसको अग्निदग्ध स्थान पर लगाने से शीघ्र ही व्रण की पीड़ा दूर हो जाती है। और नित्य 1 या दो बार प्रलेप करते रहने से शीघ्र ही लाभ हो जाता है।

बंद गांठ आदि : अलसी के चूर्ण को दूध व जल में मिला, उसमें थोड़ा हल्दी का चूर्ण डालकर खूब पका लें और जहां तक सहन हो सके, गरम–गरम ही ग्रंथि व्रणों पर इस पुल्टिस का गाढ़ा लेप कर ऊपर से पान का पत्ता रख कर बांध दें। इस प्रकार कुल 7 बार बांधने से व्रण परिपक्व हो फूट जाता है। अंतः की जलन टीस पीड़ा आदि दूर होती है। बड़ी–बड़ी अन्तर्विद्रधि भी इस उपाय से ऊपर को उभरकर फूट जाती है। किन्तु अन्तर्विद्रधि पर यह पुल्टिस कई दिनों तक लगातार बांधनी पड़ती है।

1. अतसी मधुरा तिक्ता, स्निग्धा पाके कटुर्गुरुः।
   उष्ण दृक् शुक्र वातघ्नी कफ पित्त प्रकोपिणी।। (भाव प्रकाश)
2. आतस्यं मधुराम्लं तु विपाके कटुकं तथा। उष्ण वीर्यं हि तंवाते रक्तपित्त प्रकोपणम्।।
3. अतसी तैलम् आग्नेयं स्निग्धोष्णं कफ पित्तकृत्।
   कटुपाकमचक्षुष्यं बल्यं वातहरं गुरु।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

13 अमलतास

वैज्ञानिक नाम	:	*Cassia fistula* L.
कुलनाम	:	Caesalpiniaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian laburnum, Puddin pipe tree, Purging cassia.
संस्कृत	:	राजवृक्ष, नृपद्रुम, हेमपुष्प, आरग्वध
हिन्दी	:	अमलतास, धनबहेड़ा
गुजराती	:	गरमालो
मराठी	:	बाहवा
बंगाली	:	सोंदाल, सोनालु
पंजाबी	:	अमलतास, गिर्दनली,
तेलगु	:	रेलचट्टू
कन्नड	:	कक्केमर
अरबी	:	खियारशम्बर
द्राविड़ी	:	कोन्नेभर, शक्कोनै
असमी	:	सोनास

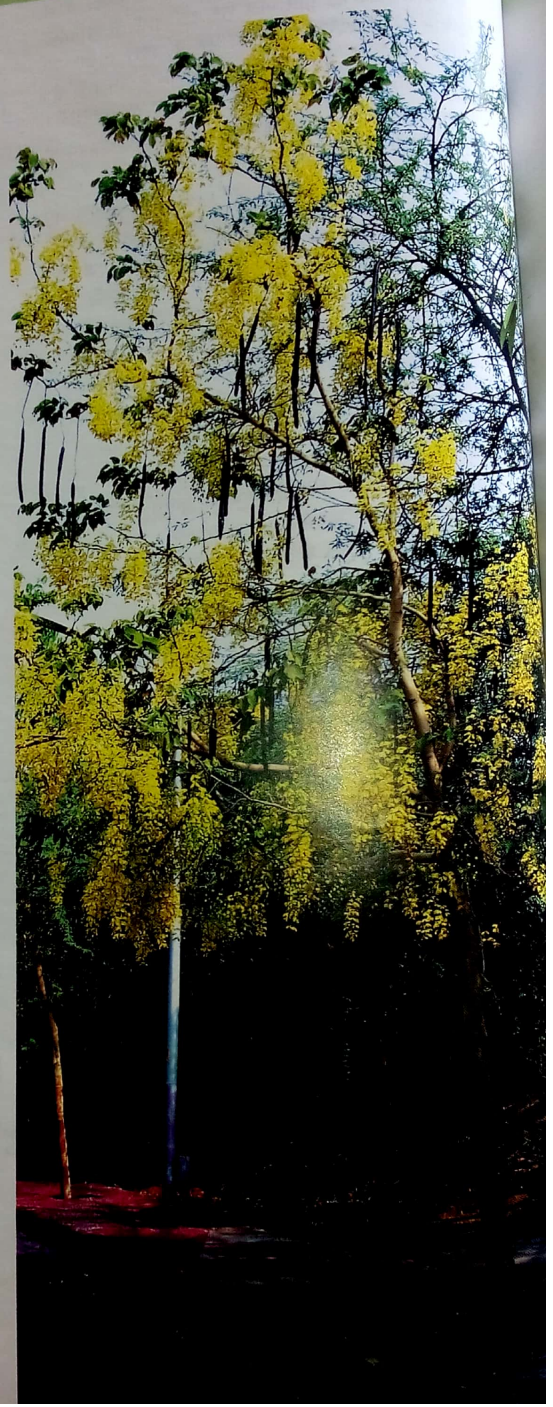

परिचय

यह पूरे भारतवर्ष मे पाया जाता है। मार्च–अप्रैल में वृक्षों की पत्तियां झड़ जाती हैं। तदुपरान्त नई पत्तियां और पुष्प प्रायः साथ ही निकलते है, उसके बाद फली लगती है जो डेढ़–दो फुट लम्बी गोल, नुकीली और वर्ष भर लटकी रहती है।

बाह्य–स्वरूप

मध्यम कद का वृक्ष, कांड धूसरवर्ण या कुछ–कुछ लाल होती है। पत्र संयुक्त 1 फिट लम्बा जिसमें 4 से 8 जोड़ी पत्रक लगे हुये होते है। पुष्पमंजरी लम्बी और नीचे लटकती रहती है। जिस पर चमकीले पीले रंग के पुष्प लगे रहते है। फली 1–2 फुट लम्बी, बेलनाकार, कठोर, आगे से नुकीली, 1 इंच व्यास की, कच्ची अवस्था में हरी और पकने पर लाल तथा काली हो जाती है। फली में 25–100 तक चपटे पीताभ धूसर वर्ण के बीज होते हैं। फली के अन्दर का भाग अनेक कोष्ठों में विभक्त रहता है।

रासायनिक संघटन

इसके फल की मज्जा में एन्थाक्विनोन, शर्करा, पिच्छिल द्रव्य, ग्लूटोन, पेक्टिन, रंजक द्रव्य, कैल्शियम आक्जेलेट, क्षार, निर्यास

Scanned by CamScanner

एवं जल होते है। कांड त्वक में टैनिन, मूलत्वक् में फ्लौवेफिन् तथा ऐन्थाक्विनोन होते है। पत्र और पुष्प में ग्लाईकोसाइड्स पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

यह भारी, मृदु, स्निग्ध, मधुर और शीतल होता है।[1] यह ज्वर, हृदय रोग, रक्त पित, वात, उदावर्त और शूल को नष्ट करने वाला है। इसकी फली रुचिकारक, कुष्ठ नाशक, पित्तकफ नाशक, कोष्ठ को शुद्ध करने वाली तथा ज्वर में पथ्य है। इसके पते मृदु विरेचक और कफ का नाश करने वाले है।[2] इसके फूल स्वादिष्ट, शीतल, कड्डवे, कसैले, वातवर्द्धक तथा कफपित्तहर हैं। इसके फल की मज्जा जठराग्नि को बढ़ाने वाली, स्निग्ध, मधुर रस, रेचक तथा वातपित्त को नष्ट करती है। इसकी मूल वातरक्त, मंडलकुष्ठ, दाद, चर्मरोग, क्षय, गंडमाला, हरिद्रमेह शोथ आदि नाशक है। अमलतास, पाठा, कुंज, निम्ब यह सब श्लेष्मा, विष, कुष्ठ, प्रमेह, ज्वर, वमन, कंडू नाशक तथा व्रण शोधक है।[3] अमलतास, सुधा, दन्ती यह सब गुल्म एवं विषनाशक, आनाह, उदररोग नाशक, मल विरेचन एवं उदावर्त्तनाशक है।[4]

औषधीय प्रयोग

कण्ठमाला : इसकी जड़ को चावल के पानी के साथ पीसकर सुंघाने और लेप करने से कण्ठमाला में आराम होता है।

मुखपाक : फल मज्जा को धनिये के साथ पीसकर थोड़ा कत्था मिलाकर मुख में रखने से अथवा केवल गूदे को मुख में रखने से मुखपाक रोग दूर होता है।

अर्दित :

1. अमलतास के 10–15 पत्रों को गरम करके उनकी पुल्टिस बांधने से सुन्नवात, गाठिया और अर्दित में फायदा होता है।
2. वात वाहिनियों के आघात से उत्पन्न अर्दित एवं वात रोगों में इसका पत्र स्वरस पिलाने से लाभ होता है।
3. पत्र स्वरस पक्षाघात से पीड़ित स्थान पर मालिश करने से भी लाभ होता है।

नाक की फुंसी : इसके पत्ते और छाल को पीसकर नाक की छोटी–छोटी फुन्सियों पर लगाते हैं।

ज्वर कफ आदि : फल मज्जा को पीपरामूल, हरीतकी, कुटकी, मोथा के साथ समभाग मिला क्वाथ बनाकर पीने से आंव, शूल, कफ, वात, ज्वर में लाभ होता है। यह क्वाथ दीपन और पाचन भी है।

खांसी :

1. अमलतास की गिरी 5–10 ग्राम को पानी में घोट उसमें तिगुना बूरा डाल गाढ़ी चाशनी बनाकर चटाने से सूखी खांसी मिटती है।
2. इसका 20 ग्राम गुलकन्द खाने से खुश्क खांसी तर हो जाती है।

टान्सिल : कफ के कारण टान्सिल बढ़ने पर जल पीने में भी जब कष्ट होता है तब इसकी जड़ की 10 ग्राम छाल को थोड़े जल में पकाकर उसका बूदं–बूंद कर मुख में डालते रहने से आराम होता है।

श्वांस : इसकी फल मज्जा का 40–60 ग्राम क्वाथ पिलाने से मृदु विरेचन होकर श्वास की रूकावट मिटती हैं।

उदरशूल : उदर शूल और अफारे में इसकी मज्जा को पीसकर बच्चों की नाभि के चारों ओर लेप करने से लाभ होता है।

पित्त प्रकोप : इसके गूदे के 40–60 ग्राम काढ़े में 5–10 ग्राम इमली का गूदा मिलाकर प्रातःकाल पिलाने से पित्त प्रकोप में लाभ होता है। यदि रोगी को कफ की अधिकता हो तो इसमें थोड़ा निशोथ का चूर्ण भी मिलाना चाहिए।

उदावर्त : चार वर्ष से लेकर बारह वर्ष तक का बालक यदि दाह तथा उदावर्त्त रोग से पीड़ित हो तो उसे अमलतास की मज्जा को 2–4 नग मुनक्का के साथ देना चाहिये।[7]

उदरशुद्धि : 2–3 पत्तों को नमक और मिर्च मिलाकर खाने से उदर शुद्धि होती है।

हारिद्रमेह : इसके 10 ग्राम पत्तों को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ का सेवन हारिद्रमेह में लाभकारी है।

कब्ज : पुष्पों का गुलकंद, आंत्र रोग, सूक्ष्मज्वर एवं कोष्ठबद्धता में लाभदायक है। कोमलांगी स्त्री को इसका सेवन 25 ग्राम तक रात्रि के समय कोष्ठ बद्धता में कराना चाहिये।

विरेचन : इसके फल के 15–20 ग्राम गूदे को मुनक्का के रस के साथ देने से उत्तम विरेचन होता है।

अण्डकोषवृद्धि : अमलतास फली की 15 ग्राम मज्जा को 100 ग्राम पानी में उबालकर 25 ग्राम शेष रहने पर उसमें गाय का घी 30 ग्राम मिलाकर पीने से अण्डकोष वृद्धि में लाभ होता है।

कोष्ठ शुद्धि : फली मज्जा को 5–10 ग्राम की मात्रा में गाय के 250 ग्राम गरम दूध के साथ देने से कोष्ठ शुद्ध हो जाता है।

पित्तोदर : इसके गूदे का 40–60 ग्राम काढ़ा पित्तोदर में लाभप्रद है।

कामला : इसे गन्ने या भूमि कुष्मांड या आंवले के समभाग रस के साथ दिन में दो बार देने से कामला रोग में लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

विरेचक : इसके फल का गूदा सर्वश्रेष्ठ मृदु विरेचक है। यह ज्वर अवस्था, सुकुमार, बालक एवं गर्भवती महिलाओं को दिया जाता है।

सुख प्रसव : अमलतास की 4–5 फली के 25 ग्राम छिलकों को औटाकर उसमें शक्कर मिलाकर छानकर गर्भवती स्त्री को सुबह–सायं पिलाने से बच्चा सुख से पैदा हो जाता है।

वातरक्त : अमलतास मूल 5–10 ग्राम को 250 ग्राम दूध में उबालकर देने से वातरक्त का नाश होता है।

आमवात : आरग्वध के 2–3 पत्तों को सरसों के तैल में भूनकर सायं के भोजन के साथ सेवन करने से आमवात में लाभ होता है।

कुष्ठ :

1. अमलतास के 10–15 पत्रों को पीसकर लेप करने से कुष्ठ, चकत्ते आदि चर्म रोगो में लाभ होता है।[5]
2. अमलतास की 15–20 पत्तियों से बना लेप कुष्ठ का नाश करता है।[6]
3. अमलतास की जड़ का लेप कुष्ठ रोग के कारण हुई विकृत त्वचा को हटाकर व्रण स्थान को समतल कर देता है।

विसर्प :

1. इसके 8–10 पत्रों को पीसकर, घृत मिश्रित कर लेप करने से विसर्प में लाभ होता है।
2. किक्किस रोग, सद्योव्रण में अमलतास के पत्तों को स्त्री के दूध या गौदूध में पीसकर लगाना चाहिये।

रक्तपित्त : फल मज्जा को अधिक मात्रा में लगभग 25 से 50 ग्राम में 20 ग्राम मधु और शर्करा के साथ सुबह–शाम देना ऊर्ध्वगत, रक्तपित्त में लाभप्रद है।

दाह/दाद :

1. इसकी 10–15 ग्राम मूल या मूल त्वक को दूध में उबालकर पीसकर लेप करने से दाह और दाद में लाभ होता है।
2. अमलतास के पंचाग को जल के अन्दर पीसकर दाद खुजली और दूसरे चर्म विकारों पर लगाने से जादुई असर होता है।

ज्वर : इसकी जड़ ज्वर नाशक और पौष्टिक औषधि के रूप में प्रयुक्त होती है।

शिशु की फुंसी : पत्तों को गौदुग्ध के साथ पीसकर लेप करने से नवजात शिशु के शरीर पर होने वाली फुंसी या छाले दूर हो जाते है।

व्रण : अमलतास, चमेली, करंज इनके पत्तों को गोमूत्र के साथ पीसकर लेप करे, इससे व्रण, दूषित अर्श और नाड़ी व्रण नष्ट होता है।

कंटकरोग : पद्मिनी (पद्मिनी) कंटकरोग में अमलतास और नीम का 40–60 ग्राम क्वाथ का नित्य प्रयोग उत्तम है।

पित्त : लाल रंग के निशोथ के क्वाथ के साथ अमलतास की मज्जा का कल्क मिलाकर अथवा बेल के क्वाथ के साथ अमलतास की मज्जा का कल्क, नमक एवं मधु मिलाकर पित्त की प्रधानता में 10–20 ग्राम की मात्रा में पीना चाहिये।[8]

स्वानुभूत प्रयोग : अमलतास के 10 से 20 ग्राम गूदे को रात में 500 ग्राम पानी से भिगोकर प्रातः मसलकर छानकर पीने से विरेचन हो जाता है। ऐसा हमें अनेक रोगियों को देने से अनुभव हुआ है।

1. आरग्वधो गुरुः स्वादुः शीतलः स्रंसनो मृदुः।।
   ज्वरह्रद्रोगपित्तस्रवातोदावर्त्तशूलनुत्।
   तत्फलं स्रंसनं रुच्यं कोष्ठपित्तकफापहम्।।
   ज्वरे तु सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरंपरम्।
   (भाव प्रकाश)
2. चतुरंगुलो मृदुविरेचनानां (श्रेष्ठ) (चरक)
3. आरग्वधमदनगोपघोण्टाकण्टकीकुटजपाठापाटलाम्।।
   (सुश्रुत)
4. श्यामामहाश्यामात्रिवृद्दन्तीशवि नीतिल्वकड्खकम्पिह्क।।
   (सुश्रुत)
5. शैरीषी त्वक पुष्पं कार्पस्या राजवृक्षपत्रारिण।
   पिष्टा च काकमाची चतुर्विध कुष्ठ नुल्लेपः।।
   (चरक)
6. एडगजः सविऽङ्गो मूलान्याएवधस्य कुष्ठानाम्।
   उद्दालनं श्वदन्ता गोश्वराहोष्ट्रदन्ताश्राव।।
7. द्राक्षा रस युक्तं यद्याद दाहो दावर्त पीडिते।
   चतुवर्ष मुखे बाले यावद् द्वादश वाषिके।।
   (चरक)
8. त्रिवृतो वा कषायेणा मज्जाः कल्कं तथ पिवेत्।
   तथा बिल्व कषापेणा लवण क्षौद्रसंयुक्तम्।।
   (चरक)

Scanned by CamScanner